"सरस्वतीं देवयन्तो हवन्ते"

प्राचीन राजस्थानी गीत

भाग–२

सम्पादक

गिरिधारीलाल शर्मा

सह-सम्पादक

सांवलदान आशिया

प्रकाशक

साहित्य–संस्थान

राजस्थान विश्व विद्यापीठ, उदयपुर

प्रथम संस्करण

वि० सं० २०१३

मूल्य

२॥)

प्रकाशकीय—

साहित्य-संस्थान, राजस्थान विश्व विद्यापीठ, उदयपुर पिछले १५ वर्षों से उदयपुर और राजस्थान में साहित्यिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एवं कला विषयक सामग्री की शोध-खोज, संग्रह, सम्पादन और प्रकाशन का काम करता आरहा है। विशेष कर साहित्य-संस्थान ने राजस्थान में यत्र तत्र बिखरे हुए प्राचीन साहित्य, लोक-साहित्य, इतिहास-पुरातत्व और कलात्मक वस्तुओं को प्राप्त करने के लिये निरन्तर प्रयत्न किया है। परिणाम स्वरूप लगभग २५ महत्वपूर्ण और उपयोगी ग्रन्थों का प्रकाशन हो चुका है। साहित्य-संस्थान के अन्तर्गत इस समय (१) प्राचीन-साहित्य विभाग, (२) लोक-साहित्य विभाग, (३) इतिहास-पुरातत्व विभाग, (४) अध्ययन गृह और संग्रहालय विभाग, (५) राजस्थानी-प्राचीन साहित्य विभाग, (६) पृथ्वीराज-रासो सम्पादन विभाग, (७) भील-साहित्य संग्रह विभाग, (८) नव साहित्य-सृजन कार्य एवं (९) सामान्य विभाग विकसित हो रहे हैं। सामान्य विभाग के अन्तर्गत बूँदी के प्रसिद्ध राजस्थानी कवि श्री सूर्यमलजी की स्मृति में 'महाकवि सूर्यमल-आसन' और प्रसिद्ध इतिहास वेत्ता महामहोपाध्याय डॉ० गौरी-शंकरजी की यादगार में 'ओझा-आसन' स्थापित किया है। संस्थान की मुख-पत्रिका के रूप में त्रैमासिक 'शोध-पत्रिका' का प्रकाशन किया जाता है एवं नवीन उदीयमान लेखकों को लिखने के लिये प्रोत्साहित करने की दृष्टि से 'राजस्थान-साहित्य' मासिक का प्रकाशन कार्य चालू किया गया है। इस प्रकार साहित्य-संस्थान राजस्थान विश्व विद्यापीठ, उदयपुर अपने सीमित और अत्यल्प साधनों से राजस्थानी-साहित्य, संस्कृति और इतिहास के क्षेत्र में विभिन्न विघ्न-बाधाओं के बावजूद भी निरन्तर प्रगति और कार्य कर रहा है। राजस्थान की गौरव और गरिमा की महिमामय झाँकी अतीत के छठों

में अंकित है-आवश्यकता है; उसके सुनहले पृष्ठों को खोलने की। साहित्य-संस्थान नम्रता के साथ इसी ओर अग्रसर है।

प्रस्तुत पुस्तक साहित्य-संस्थान के संग्रह से तय्यार की गई है। साहित्य-संस्थान के संग्राहकों ने अनेक स्थानों की खाक छान कर १६,००० के लगभग छन्दों का संग्रह किया है। इस संग्रह में दोहे, सोरठे, कवित्त और गीत आदि कई प्रकार के छन्द सुरक्षित हैं। इन छन्दों से विभिन्न ऐतिहासिक, और सामाजिक घटनाओं, व्यक्तियों आदि का वर्णन मिलता हैं। ये विभिन्न प्रकार के गीत और छन्द लाखों की संख्या में राजस्थान के नगरों, कस्बों एवं गांवों में बिखरे हुए हैं। इनके प्रकाशन से एक ओर साहित्यकारों को राजस्थानी साहित्य का परिचय मिल सकेगा तो दूसरी ओर इतिहास-सम्बन्धी घटनाओं पर भी प्रकाश पड़ेगा। इस प्रकार साहित्य-संस्थान, राजस्थान में पहली संस्था है; जो शोध-खोज के क्षेत्र में नियमित काम कर रही है।

इस प्रकार के संग्रह अब तक कई निकाले जा सकते थे लेकिन साधन-सुविधाओं के अभाव में साहित्य-संस्थान विवश था। इस वर्ष राजस्थानी-साहित्य के प्रकाशन-कार्य के लिये भारत-सरकार के शिक्षा विकास सचिवालय ने साहित्य-संस्थान को कृपा कर १०,०००) दस हजार रुपये की सहायता प्रदान की है; उसी से उक्त पुस्तक का प्रकाशन कार्य सम्पन्न हो सका है। साहित्य-संस्थान को कुल मिलाकर गत वर्ष भारत सरकार ने ४८५००) की आर्थिक सहायता विभिन्न कार्यों के लिये दी थी। इस सहायता को दिलाने में राजस्थान-सरकार के मुख्य मंत्री (जो शिक्षा मंत्री भी हैं) माननीय श्री मोहनलाल सुखाड़िया, और उनके शिक्षा सचिवालय के अधिकारियों का पूरा योग रहा है इसके लिये मैं उनके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। साथ ही भारत सरकार के उपशिक्षा सलाहकार

डॉ० पी० डी० शुक्ला, डॉ० भान तथा श्री सोहनसिंह एम. ए. (लंदन) का भी अत्यन्त आभारी हूँ जिन्होंने सहायता की रकम शीघ्र और समय पर दिलवाई। सच तो यह है कि उक्त महानुभावों की प्रेरणा और सहायता से ही यह रकम मिल सकी है और संस्थान अपने ग्रन्थों काप्रकाशन करवा सका है। भारत-सरकार के उपशिक्षा मन्त्री डॉ० कालूलालजी श्रीमाली के प्रति क्या कृतज्ञता प्रकट की जाय, यह तो उन्हीं का अपना काम है। उनके सुझाव और उनकी प्रेरणा से संस्थान के काम में निरन्तर विकास और विस्तार हुआ है और आगे भी होता रहेगा। इसी आशा और विश्वास के साथ मैं उनका आभार मानता हूँ। अन्य उन सभी का आभारी हूँ; जिन्होंने इस काम में सहायता दी है।

विनीत
गिरिधारीलाल शर्मा
अध्यक्ष
साहित्य-संस्थान
राजस्थान विश्व विद्यापीठ उदयपुर

गंगा दसवीं
२०१३
सन् १९५६

प्राचीन राजस्थानी गीत

(भाग-२)

१. राव टीड़ा राठौड़

सामत सी जिसा संग्रामि स झूझा,
मिलतै कमँध महारिण माहि।
भील माल हूँती जे भागा,
सोनिगरा दल आड़ध साहि ॥१॥

छाएडाड़ियो मछर छाड़ा उति,
कलहि महाग्रह ग्रहि केवाण।
भिड़ते खेत भील पूरि भागौ,
चोरगि सामत सी चहुँवाण ॥२॥

टिप्पणी:— १ यह राठौड़ राव छाडा का पुत्र था। ख्यातों में उसकी गद्दी नशीनी का सम्वत् १३४५ दिया है और सं० १३५२ तक राज्य करना बताया गया है। खेड़ में इस समय राठोड़ों का राज्य था, एवं महेवा उनकी राजधानी थी। उपयुक्त गीत में भीनमाल के सोनगरा चौहान सामन्तसिंह से युद्ध होने का वर्णन है, जो ठीक नहीं है; क्योंकि मारवाड़ से मिलने वाले शिला लेखों से यह समय राव आसथान अथवा धूहड़ का सिद्ध हुआ है। ऐसी अवस्था में यह गीत किसी समकालीन कवि का रचित पाया नहीं जाता। सोनगरा चौहानों और राठौड़ो में शत्रुता मारवाड़ में राठोड़ राज्य के संस्थापक राव सींहा के समय से ही प्रारम्भ होगई थी और बताया गया है कि उसने भीनमाल भी लेलिया था, जैसा कि निम्न दोहे से प्रकट है:—

भीनमाल लीनी भिड़े, सीहे सेल बजाय।
दत दीधो सत संग्रह्यो, सो फल कधे न जाय ॥

गोतमपूर हूँता गहगाजे,
वहे सेन मूकी बकवालि।
खांडा वलि राउति खेड़ेचे,
रावल जालोरो रण तालि ॥३॥

त्रिंनि साचौर कणे गढ़ वासें,
सीहा हरै चढंतै सीक।
मातँग पुरी कटक मारावे,
मूंह भांजाड़ि गयों मळरीक ॥४॥

[रचयिता:—अज्ञात]

अर्थ:— सामन्तसिंह जेसे योद्धा के भिड़ने पर राष्ट्रवर वीर ने सामना किया; फलःस्वरुप सामन्तसिंह के साथी वीर सोनिगरे (चहुवान) भीनमाल स्थान से भाग गये ॥१॥

छाड़ा के पुत्र ने कृपाण पकड़ कर घमासान युद्ध प्रारम्भ किया। जिससे विपक्षियों के मत्त का ह्रास होगया और भीनमाल के रणक्षेत्र में मुठभेड़ होते ही वह चतुरङ्गी चहुवान का वंशज सामन्तसिंह चहुवान भी भाग गया ॥२॥

गौतमपुर से गम्भीर गर्जना करते हुए उस (सामन्तसिंह) ने अपनी सेना बढ़ाई और बकवाली स्थान से आगे बढ़ा। उसी समय जाळोर के रावल (राव) के साथ खड्गधारी राजवंशी खेड़ेचा (राष्ट्रवर) ने युद्ध छेड़ दिया ॥३॥

उस सीहा के वंशज (राष्ट्रवर) से लड़ कर वह (सामन्तसिंह) सांचोर, सोनागिरि (जालोर) और दिल्ली की शाही सेना को नष्ट करवा अपने मुँह की खा गर्व का ह्रास करा कर लोट गया ॥४॥

२. राव रणमल राठौड़ [१]

गीत (छोटा साणोर)

सिर संपति संग्र है निहसै नित प्रति, करिमर नीप साहीयै करि ॥
रेवंत पूठि वसैज इ रिणमल, वास म गिण तई वैर हरि ॥१॥
कीजै रयण तणै नित कुल कृत, वैरां ऊपरी वत्र अवत्र ॥
जई अहो निसि दुहिला जंगम, सुहिला तईयां म गिणि सत्र ॥२॥
सलखा हरौ समझौ सवदी, सेना ऊलि मेले सघर ॥
घाए तइ ऊपाड़ै अरि घर, घोड़े जई या करै घर ॥३॥

टिप्पणी:—१ यह राठौड़ राव चूण्डा का पुत्र और वीरम का पौत्र था। अपने पिता चूण्डा की मृत्यु होजाने पर राव चूण्डा का छोटा पुत्र कान्हा मण्डोवर का राजा हुआ, तब वह मेवाड़ में चला आया और वहां उसने महाराणा लाखा के साथ अपनी बहिन हांसबाई का विवाह किया, जिसके उदर से महाराणा मोकल का जन्म हुआ। महाराणा मोकल के समय सैनिक सहायता पाकर राव रणमल ने सत्ता को मण्डोवर से निकाल अपने पैतृक राज्य पर अधिकार किया। वि० सं० १४९० के लगभग चाचा-मेरा ने महाराणा मोकल को मार डाला, तब महाराणा कुंभा की बाल्यावस्था देख राव रणमल पुनः मेवाड़ में गया और आततायियों को दण्डित कर सारी राज्यसत्ता अपने हाथ में करली फिर उसने महाराणा मोकल के भाई राघवदेव को दरबार में बुला कर धोखे से मरवा डाला, जिससे सीसोदियों और राठौड़ों के बीच वैर होगया एवं वह (रणमल) वि० सं० १४९५ (ई० सं० १४३८) के लगभग मारा गया। उपर्युक्त गीत में राव रणमल की वीरता आदि का वर्णन है, जो समयोचित है और अतिशयोक्ति पूर्ण नहीं है। यथार्थ में राव रणमल एक वीर राजपूत था और महाराणा कुम्भा ने मालवे के सुलतान महमूद खिलजी पर विजय प्राप्त कर उसको बंदी किया, जिसमें राव रणमल का भी हाथ था; क्योंकि वह उस समय मुख्य मुसाहिब था।

सुजडा हथ चौड राउ समो भव, विधि वीरा तन वैर विधि ॥
रोपै जई पवंगि आसण रिधि, रिप तई भंजै राज रिधि ॥४॥

[रचयिता:—अज्ञात]

भावार्थः— हे रणमल ! तू तलवार धारण कर सम्पत्ति के रूप में वीरों के मस्तक संग्रह करता रहता है और जब तक घोड़े की पीठ पर निवास करता रहता है, तब तक शत्रु निर्वासित ही रहते हैं ॥१॥

वीर रणमल दिन प्रतिदिन अपने वंश परम्परागत युद्ध-कर्तव्य का पालन समय समय पर करता रहता है। अतः हे शत्रुओं ! उसके द्वारा छेड़ा गया युद्ध दुर्गम है। उसको इतना सुगम मत समझना ॥२॥

यह सलखा का पौत्र, शब्द-वेधी बाण चलाने वाला है। वह अपनी सेना के द्वारा अन्य का भू भाग नष्ट भ्रष्ट कर देता है और घोड़े की पीठ को ही अपना घर समझ कर शत्रुओं के मकानों को नष्ट कर देता है ॥३॥

यह अपने पिता वीर चूण्डा के समान ही हाथ में कटारी ग्रहण कर शरीर से वीरता प्रकट करता हुआ वेर विधि को कार्य रुप में लेता है और वह ज्योंही घोड़े की पीठ पर अपना दृढ़ आसन जमाता है त्यों ही मुसलमानी राज्य-लक्ष्मी नष्ट हो जाती है ॥४॥

३. राठौड़ जैत्रसिंह (जैतमाल)[१] सलखावत सिवाणा

गीत (छोटा साणोर)

पण धरियो कमँध मिलण रो पातां,
ये अखियातां सकल् अछै।

टिप्पणीः—१ यह खेड़ के राठौड़ राव सलखा का छोटा पुत्र और महेवे

अठसठ तीरथ कर-कर आयो,
पीठवो गयो समियाण पछै ॥१॥

अँग रै रुधिर चुवंतां आचां,
काचां देखत हिया कँपै ॥

सलख सुजाव दाखियो सांप्रत,
आव जैत कह मिलां अँपै ॥२॥

के राठौड़ मल्लीनाथ का छोटा भाई था। दयालदास की ख्यात के अनुसार राव मल्लीनाथ ने उसको समियाणा (सिवाणा) परमारों से विजय कर जागीर में प्रदान किया था। मल्लीनाथ का समय वि०सं० की पन्द्रहवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध स्थिर होता है अस्तु, जैतमाल का भी यही समय होना चाहिये। जैत्रमाल का कोई इतिहास नही मिलता। उपर्युक्त गीत में बाटी गोत्र के पीठवा नामक चारण का (जो कुष्ठ रोग से पीड़ित था) जैत्रमाल के पास जाने और अंग स्पर्श करने पर उक्त कवि का रोग मिट जाने का वर्णन है, जिसका उल्लेख अन्यत्र कही नहीं मिलता है। पीठवा नामक एक चारण कवि पोरबन्दर (काठियावाड़) की तरफ भी हुआ है, जिसकी अविवाहिता पुत्री ………… ने वर्षा से पीड़ित पोरबन्दर के जेठवा राजा की आत्म समर्पण द्वारा प्राण रक्षा की थी। यदि वही पीठवा, इस गीत का रचयिता हो तो उसका समय पन्द्रहवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध मानना पड़ेगा। सम्भव है कि जेठवा नरेश द्वारा उक्त बालिका को पत्नि रूप से ग्रहण न करने पर पीठवा को पोरबन्दर त्याग करना पड़ा हो और वह इस अभिशापयुक्त कार्य से कुष्ट रोग से पीड़ित हो कर जैत्रमाल के पास आया हो, एवं उसके रोग की शांति हुई हो। समियाणा (सिवाणा) पर वि०सं० १५६५ (ई०सं० १५३८) तक जैत्रमाल के वंशजों का अधिकार रहा और राव मालदेव ने चढ़ाई कर जैत्रमाल के वंशधर डूंगरसी से सिवाणा खाली करवा लिया।

देख कवी कहियो अनदाता,
अम्हां कमल नहं भाग इसौ ॥
सारै रसी बहे तन सड़ियौं,
कहौं मिलण रौ वैंत किसौ ॥३॥

कहतां हँसे मलफियो कमधज,
जुग हैकँपियौ जुओ जुओ ॥
बाँह ग्रहे मिलतां सुख बूझत,
हेम सरीख सरीर हुओ ॥४॥

धन धन प्रथी कहैं धू धारां,
कलँक काट नकलंक कियो ॥
दसमौ सालगराम सदेव्रत,
दिन तिण पीठवें विरद दियौ ॥५॥

[रचयिता— पीठवा बाटी चारण]

भावार्थः— समियाणे के स्वामी राष्ट्रवर ने कवियों से भुजा से भुजा मिलाने की प्रतिज्ञा कर रक्खो थी, जिसकी प्रसिद्धी सारे संसार में फैली हुई थी। यह सुनकर पीठवा चारण जो कुष्टि था वह, अड़सठ तीर्थों में स्नान करने के पश्चात् समियांणे के स्वामी के पास आया ॥१॥

पीठवे के शरीर से रक्त-प्रवाहित हो रहा था, जिसको देखकर कोमल हृदय वाले मनुष्य कांप जाते थे; किन्तु सलखा के पुत्र समियाणे के जैत्रमाल ने पीठवा को देखते ही कहा कि हे कवि ! तू मेरे पास आ और मेरे से मिल ? ॥२॥

तब कवि पीठवा ने कहा—कि हे स्वामिन् ! मेरा भाग्य ऐसा कहाँ है जो मैं आपसे मिलूं। मेरा तो सारा शरीर सड़ रहा है और

रस्सी (पीप) बह रही है। अब कहिये, मैं आपसे किस प्रकार मिल सकता हूँ ? ॥३॥

इतनी बात पीठवा के कहते ही जैत्रमाल हँसते हुए आगे बढ़कर पीठवे से भुजाओं से भुजाएँ मिलाकर मिला। उस समय स्वामी को कुष्ठि से मिलता हुआ देख कर सब कांप गये और कहने लगे–देखो ये कमाल कर रहे हैं। जैत्रमाल ने पीठवा का हाथ पकड़ा और कुशल पूछी, उसी समय पीठवा का शरीर स्वर्णिम वर्ण का हो गया और वह स्वस्थ बन गया ॥४॥

कवि के इस शारीरिक कलंक को मिटाकर उसको निष्कलंक कर दिया, जिससे सारा संसार उस राष्ट्रवर वीर को अपनी प्रतिज्ञा पर ध्रुव तुल्य अटल देख कर धन्य २ कहने लगा। उसी दिन से चारण पीठवा ने जैत्रमाल को दसवें शालिग्राम का पद प्रदान किया, जो अभीतक उसके वंशजों में प्रचलित है ॥५॥

राव मालदेव [1] जोधपुर

गीत (छोटा साणोर)

सांके मत समँद सहस फण मम सँक, गण मम जोखो लंकाह गिर ॥
राव मालदे सबल् दल् रूठै, सझिया कूंभलमेर सिर ॥१॥

टिप्पणी—१. यह जोधपुर के राव गांगा का पुत्र था। अपने पिता को झरोखे से गिराकर वि० सं० १५८९ (ई० स० १५३२) में जोधपुर की गद्दी पर आसीन हुआ। उसका जन्म वि० सं० १५६८ (ई० स० १५११) में हुआ और मृत्यु वि० सं० १६१९ (ई० स० १५६२) में पच्चास वर्ष की आयु में हुई। राव मालदेव जोधपुर के राठौड नरेशों में एक पराक्रमी राजा हुआ। उसकी गद्दी नशीनी के पूर्व जोधपुर और सोजत परगने ही राज्य के खालिसे में रह गये थे और सरदार सब स्वतंत्र हो रहे थे। उसने उनको बल पूर्वक अपने अधीन कर मारवाड़ राज्य की शक्ति

कांप मन अड रप मम कालो, करन सोनगिर आकँप काय ॥
मेदपाट सिर माल मछरियै, रचिया है थट मारू राय ॥२॥

बढ़ाली। मारवाड़ के अतिरिक्त उसने अपना राज्य राजस्थान के अन्य भागों में भी प्रसारित कर लिया था; किन्तु उसकी अदूरदर्शिता से वह सब विलीन होगया। उसने मेड़ता तथा बीकानेर के स्वतंत्र राज्यों पर चढ़ाई कर उन पर अधिकार कर लिया। अजमेर को भी राव वीरमदेव (मेड़तिया राठौड़) से छीन कर अपने राज्य को प्रबल बना दिया, किन्तु यह विष वृक्ष के समान बात हुई। बीकानेर के राव कल्याणमल और मेड़ता के राव वीरमदेव ने तत्समयक दिल्ली के सुलतान शेरशाह की शरण लेकर वि० सं० १६०० (ई० स० १५४३) में उसको मारवाड़ पर चढ़ा लाये। समेल में दोनों तरफ की सेनाएं आकर युद्ध के लिये सन्नद्ध होगईं। किन्तु राव वीरमदेव ने कौशलयुक्त चाल चल कर राव मालदेव और उसके सरदारों के बीच अविश्वास की मात्रा उत्पन्न करदी। फलतः राव मालदेव भाग खड़ा हुआ, तथापि उसके सरदारों ने दृढ़ता पूर्वक सुलतान का मुकाबला किया और वीरता पूर्वक युद्ध करते हुए वे सबके सब मारे गये। जोधपुर और सारे मारवाड़ पर शेरशाह का अधिकार हो गया और वि. सं. १६०१ (ई. स. १५४४) में शेरशाह की मृत्यु होने पर पुनः मारवाड़ पर राव मालदेव का अधिकार हुआ। इसके पीछे राव मालदेव की वह स्थिति नहीं रही। उपर्युक्त गीत में राव मालदेव की मेवाड़ के महाराणा उदयसिंह के अधिकृत कुंभलगढ़ दुर्ग पर चढ़ाई करने का वर्णन है. जो झाला जैत्रसिंह की राजकुमारी के विवाह के प्रसङ्ग को लेकर हुई थी। उक्त झाला-राजकुमारी से, राव मालदेव विवाह करना चाहता था; परन्तु झाला राजकुमारी के पिता जैत्रसिंह ने वह राजकुमारी महाराणा उदयसिंह को लाकर ब्याह दी। इस पर राठौड़ों और सीसोदियों के बीच वैर होगया। राठौड़ मेवाड़ में आकर हमले करने लगे। महाराणा उदयसिंह ने राव मालदेव को चिढ़ाने के लिये कुंभलगढ़ दुर्ग के सर्वोच्च भाग पर झालीराणी का महल बनवा कर वहाँ तेल और कपासिये जला कर दीप ज्योति आरम्भ की, जो जोधपुर दुर्ग से दृष्टि गोचर होती थी। इस पर राव मालदेव ने कुंभलगढ़ की तरफ ससैन्य आकर दुर्ग को घेर लिया; परन्तु

सिंध म झल् झल् चल् चल् मम स्रप, चल त्रिकूट मम रह अचल् ॥
कीधा नव सहसे राय कोयण, दस संहस ऊपरे दल ॥३॥

रै मथियल रै नथियल थिर रहि, थरक न हरन थिर थाव ॥
गंगावत गांजिया न गांजे, गांजे राव अँगजिया गांव ॥४॥

[रचयिताः- अज्ञात]

भावार्थः— हे समुद्र व शेष नाग ! तुम किसी बात की शंका मत करो; हे लंकागिरि तू भी किसी हानि की आशंका मत कर; क्योंकि राव मालदेव ने रुष्ट होकर कुम्भलमेर पर अपनी सबल सेना सुसज्जित की है ॥१॥

हे काले नाग और स्वर्णगिरि ! तुम अपने दिल में किसी प्रकार का डर क्यों रखते हो ? इस मालदेव राठौड़ ने क्रुद्ध होकर अपनी अश्ववारोही सेना मेवाड़ पर सुसज्जित की है ॥२॥

हे समुद्र ! तू क्यों छलकता है ? हे सर्प और त्रिकुटाचल (लंका), तुम क्यों चलायमान होते हो ? अविचल बने रहो क्योंकि मारवाड़ नरेश ने तो दस सहस्र ग्रामों के अधिपति (मेवाड़) की ओर अपनी आँखें उठाई हैं ॥३॥

उसमें उसको सफलता नहीं मिली। इस गीत में अतिशयोक्ति की मात्रा अधिक है, जैसा कि राज्याश्रित कवियों की रचना में होती है और वे एक पक्ष को श्रेष्ठ बतला कर दूसरे को हीन बतलाने की चेष्टा करते हैं। राव मालदेव और महाराणा उदयसिंह में विरोध हुआ, इस विषय की मेवाड़ में भी कई रचनाएँ मिलती हैं, जो इस प्रकार हैं:—

कुंभलगढ़ कटारगढ़, अंवला पाणी फेर, कीजो राजा माल ने, बसांछा कुंभलमेर ।
झाड़ कटायां झाली नहिं मिले, रण कटायां राव, कुंभलगढ़ के कांगरे, थूं माछर वेने श्राव ॥

हे मथित समुद्र, हे नाथेय नाग और स्वर्णगढ़ (लंका)! तुम अस्थिर न हो। स्थिरता धारण करो। क्योंकि यह राव राठौड़ गंगा का पुत्र, पूर्व विजित दुर्गों पर चढ़ाई नहीं करता। यह तो अविजयी दुर्गों को ही दबाता रहता है ॥४॥

५ राव मालदेव[१] जोधपुर

गीत (छोटा साणोर)

नव कोटी नाह कनोजां नायक,
　　दुजड़े मोटा सुपह दहे॥
　　　　अजस मना जैमल की आंणे,
　　　　　　वांसां जिण मालदे वहे॥ १॥

टिप्पणी:—१ जोधपुर के राव मालदेव और मेड़ता के राव जयमल मेड़तिया राठोड़ के बीच आमरण विरोध ही रहा। राव वीरमदेव की वि०सं० १६०१ ई०स० १५४४) में मृत्यु हो जाने के पीछे भी वि० सं० १६०३-१६ (ई०स० १५४६-५९) तक मेड़ता पर राव मालदेव की सैना के कई बार आक्रमण हुए, जिनका जयमल ने धीरता पूर्वक सामना किया। कुछ आक्रमणों में जोधपुर की सैन्य भग्न मनोरथ होकर लौटी; परन्तु राव मालदेव तो मेड़ते के विनाश पर तुला हुआ था, उसने सेना भेजने के क्रम में शिथिलता नहीं आने दी। एक दो बार मेड़ता पर अधिकार भी होगया, पर जयमल ने अधिक समय तक उसे मेड़ते में नहीं ठहरने दिया और पुन: अपना आधिपत्य स्थिर कर लिया। अंतिम बार के वि० सं० १६१६ (ई०स० १५५९) के राव मालदेव के मेड़ता आक्रमण में वहां से राव जयमल का अधिकार उठ गया। जयमल, इससे निराश नहीं हुआ। सम्राट् अकबर से सहायता प्राप्त कर मिर्जा शरफुद्दीन को साथ लेकर मेड़ते पर चढ़ आया, एवं जोधपुर की राठोड़ सैना से युद्ध कर वहां पुनः अपना आधिपत्य स्थिर किया (वि०सं० १६१९ ई०स० १५६२)। एक वर्ष भी जयमल मेड़ते में सुख से नहीं रहा होगा कि

केहर री दिस नांख कांकरौ,
अहि सूं भूलर खेलै आल ॥
मेले नहीं जैमलां मालौ,
पैसे जे सातमे पयाल ॥ २ ॥

जीव उबार सके तो जेमल,
नेस ग्रास सह मेले नास ॥
गिलसी गंग तणो गाढा गुर,
वाघां रा किहसा विसवास ॥ ३ ॥

[रचयिता:- अज्ञात]

हे जयमल ! नवकोटि (नव दुर्ग युक्त मारवाड़) का स्वामी, कन्नौज राज वंशज मालदेव अपनी खड्ग से बड़े बड़े राजाओं को

वि०सं० १६२० (ई०स० १५६३) में मिर्जा शरफुद्दीन से सम्राट् अप्रसन्न होगया, जिससे मिर्जा ने आकर राव जयमल की शरण ली। परिणाम यह हुआ कि सम्राट् ने हुसेनकुलीखां को सैना सहित भेज मेड़ता भी जयमल से खाली करवा लिया। इस पर जयमल मेवाड़ में चला आया और महाराणा उदयसिंह से बदनोर आदि की जागीर प्राप्त कर स्थायीरूप से मेवाड़ में ही रहने लगा। वि० सं० १६२४ (ई० स० १५६७) में चित्तौड़ पर बादशाह अकबर की चढ़ाई होने पर दुर्ग रक्षा करता हुआ, वीरता पूर्वक शत्रुसैन्य से लड़ कर मृत्यु को प्राप्त हुआ। इस गीत में कवि ने राव मालदेव की बढ़ी हुई शक्ति को देख, राव जयमल का सामयिक चेतावनी दी है कि वह विरोधी भावना को त्याग कर क्षमा मांगले। मालदेव, जयमल से अधिक शक्तिशाली था और उससे विरोध रखने से मेड़ते की हानि ही हुई। किंतु जयमल आन को छोड़ने वाला नहीं था एवं अंत समय तक अपनी आन बनाये रखी तथा इतिहास में अपना नाम सदा के लिये छोड़ गया।

दग्ध [नष्ट] कर देने वाला है और उसीने तेरा पीछा कर रक्खा है। ऐसी स्थिति में तू किस पर अभिमान करता है ? ॥१॥

हे जयमल ! तेरा मालदेव से विरोध करना इस प्रकार का है, जैसे सिंह पर कंकर फेंकना या भूल से सर्प को छेड़ कर खिलाना है। यदि तू सातों पाताल की आड़ में भी जा छिपै तो भी वह तुझे नहीं छोड़ेगा ॥२॥

हे जयमल ! यदि तू अपनी रक्षा चाहता है तो मालदेव ही एक ऐसा दृढ़ वीर है जो प्राणदान दे सकता है। नहीं तो वह गांगा का पुत्र, तेरे निवास-स्थान और जागीर को नष्ट कर देगा। कहा जाता है कि सिंह का कभी विश्वास नहीं करना चाहिये ॥३॥

६. राव जोधा राठौड़ (जोधपुर)[१]

गीत (छोटा साणोर)

नांग मंडल मेवाड़ निरखंतौ, कमधज गुरड़ फिरै को पंख ॥
कुंभ करनसिंह सकै न काढ़ै, जा उर राफ महा जट पंख ॥१॥

जोधो जंगम थाट जड़ाले, गाढ़ो गुर मचवे गहण ॥
ओडण अहि लोयण आंहाड़ौ, फाड़ न फूंक न सजै फण ॥२॥

राड़ पंख राउ वैर राउ कै, घात न छंडै मेल घण ॥
गलै राफि पड़ियौ गढ़ औग्रहि, सांकुड़ि कूंभो सहस फण ॥३॥

टिप्पणी—१ इस गीत का नायक राव जोधा राठोड़ मण्डोवर के राव रणमल का पुत्र था। वि०सं० १४९५ (ई०स० १४३८) के लगभग चित्तौड़ में सीशोदिया रावत चूण्डा (लाखावत) आदि के द्वारा राव रणमल को मार डालने पर राव जोधा वहाँ से निकल भागा सीशोदियों ने उसका पीछा कर स्थिरता से उसको कहीं

जोधो अरण सहोवर जोवै, द्रिढ़ मैं अंग आकुल़ै द्रप ॥
सार झड़प संके सीसौदो, सलके ओग्रहियो सरप ॥४॥
चांच खड़ग असि पर चाल़बतौ, सिरहाणे रिण माल सुत ॥
नाग मंडल मेवाड़ नीसरी, सिलै न चेजै चख सुरत ॥५॥
चौड़ा हरो सकेबा चीतवि, असिमर चंचल़ फरै उभाउ ॥
पनंग पयाल़ कूंभगढ़ पैठो, पवंग पगे वाजे पड़ हाउ ॥६॥
पैसे औग्रहि हेक पती नौ, सेन चढ़ै हिक सास हियौ ॥
राउ पंख राउ राण अहि राजा, रोहां खुंधो होय रहियौ ॥७॥

[रचयिताः- अज्ञात]

भी ठहरने नहीं दिया और मण्डोवर तथा समग्र मारवाड़ पर बारह वर्ष तक अपना अधिकार रखा। साहसी जोधा, इससे निराश नहीं हुआ और उद्योग करता ही रहा, जिसका फल यह हुआ कि बल पूर्वक उसने सिशोदियों के हाथ से मण्डोवर तथा मारवाड़ छुड़ाली। मारवाड़ की ख्यातों के अनुसार मण्डोवर का राज्य प्राप्त करने के पीछे उसका कई बार मेवाड़ के महाराणा कुम्भा [कुम्भकर्ण] से संघर्ष हुआ और उसने मंडोवर का राज्य अपने हाथ से जाने नहीं दिया। उपर्युक्त गीत में राव जोधा और मेवाड़ के महाराणा कुंभा के बीच में होने वाले संघर्ष में राव जोधा के पराक्रम की प्रशंसा की है, जो अतिशयोक्ति पूर्ण अवश्य है। परन्तु इसमें संदेह नहीं कि मारवाड़ के राठोड़ नरेशों में राव जोधा का विशिष्ट स्थान है। उसकी विद्यमानता में उसके एक पुत्र बीका ने जांगलू और पुंगल आदि पंजाब से मिले हुए प्रान्तों की तरफ बढ़ कर उधर के प्रान्तों को विजय कर पृथक और स्वतंत्र बीकानेर का राज्य स्थापित किया। दूदा ने मेड़ते में अपना मित्र राज्य बांधा। वि० सं० १५४५ (ई० स० १४८८) में राव जोधा की मृत्यु हुई। वस्तुतः राव जोधा का आगे जाकर प्रताप बहुत बढ़ा और राजस्थान तथा मध्य भारत में राव जोधा के वंशजों ने अपने राज्यों का काफी फैलाव किया जो ई० स० १९४७ तक विद्यमान थे। राव जोधा ने अपने नाम से जोधपुर का नवीन नगर बसा कर वहाँ अपनी राजधानी स्थिर की।

भावार्थः— हे गरुड़ के समान राष्ट्रवर ! तूने नाग मण्डल-मेवाड़ (नाग दहेश्वर के भू भाग) की ओर जब दृष्टिपात कर पङ्ख फैलाये तो कौन ऐसा है जो उन्हें समेट सके ? दूसरे ही राहप के समान पङ्ख रूपी महाजटा धारी राणा कुम्भा जैसा पुराना सर्प भी तेरें समक्ष सिर नहीं उठा सका ॥१॥

हे वीर जोधा ! जब तू युद्धाडम्बर में झूंझ पड़ता था तब घोर कलह मच जाता था। तेरे समक्ष भयानक सर्प रूपी आहड़ा (चित्तौड़ेश्वर) अपने नेत्र खोल, फण फुला कर फुंकार नहीं कर सकता था ॥ २ ॥

तेरे (गरुड़) और सहस्त्र फण धारी राणा कुम्भा को झपट होती रहती थी। एक दूसरे पर आघात करते हुए दोनों में से कोई भी नहीं टलता था फिर भी तूने राहप वंशी सूर्य द्वारा घिरे हुए अपने दुर्ग को निकाल लिया और वह सर्प-स्वरुप राणा अपने सहस्त्र फणों को सिकोड़ कर ही रह गया ॥ ३ ॥

हे अरुण बंधु (गरुड़ स्वरुपी) भयानक दर्पधारी जोधा, जब तुझे देख कर ग्रहण नहीं किये जाने योग्य सर्प-स्वरुपी सिशोदिया राणा भी तेरे शस्त्र को नहीं सहन कर सकता था और तिल मिलाने लगता था, तब दूसरों की तो बात ही क्या थी ? ॥ ४ ॥

हे रणमल के पुत्र ! तू समीप ही चोंच–स्वरुपी खड्ग उठा कर पंख रूपी घोड़ा बढ़ाता रहता था; जिससे नाग-मण्डल रूपी मेवाड़ के रक्त चक्षु धारी सर्प-स्वरुपी राणा आहार के लिये (युद्धर्थ) बाहर नहीं निकल सकता था ॥ ५ ॥

हे रणमल के पुत्र ! तू समीप ही चोंच-स्वरुपी खड्ग उठाता था, उस समय सिशोदिया-सर्प सशंकित होकर देखता था और तेरे घोड़ों के खुरों की आवाज सुनते ही वह पाताल-स्वरुपी कुंभलगढ़ में प्रवेश कर जाता था ॥ ६ ॥

एक प्रान्त का राजा (जोधा) अपने दुर्ग में प्रवेश कर गया और दूसरे प्रान्त का राजा (राणा कुम्भा) सेना की चढ़ाई के साथ ही निःश्वास डालने लगा। इस प्रकार गरुड़-स्वरूपी राष्ट्रवर राजा और सर्प-स्वरूपी महाराणा क्रुद्ध होकर क्षुब्ध ही रह गया॥ ७॥

— — —

७–राठोड़ शेखा सूजावत[१]

गीत—(छोटा–साणोर)

कुटका रिण चुखे हार चै कारणि, फेर नह कोतै वात फिर।
सिर सेखा चौ लहै न साजो, सकर धुणै तो तेणि सिर॥१॥

धड़ छवियौ भलौ राउ धूहड, सौ भूभारा हुई सिरै।
कमल तणौ विणंतों कुटका, फिरतै कमल महेस फिरै॥२॥

आहवि आरती तणी आभरण, पल खंड चुणै आपरै पांणि।
सीस सैखारो लहेन सारो, इसर सीस धुणै आरांणि॥३॥

टिप्पणी:—१ यह जोधपुर के राव जोधा का पौत्र और सूजा का छोटा पुत्र था। अपने बड़े भाई बाघा के पुत्र गांगा से जोधपुर का राज्य छीनने के लिए यह वीरम (गांगा का बड़ा भाई) का सहायक बना, किन्तु वीरम और गांगा के बीच युद्ध होने पर वीरम का अधिकृत सोजत भी हाथ से निकल गया। फिर राव गांगा और शेखा के बीच गांधाणी गांव में युद्ध हुआ, जिसमें शेखा मारा गया। जोधपुर की ख्यातों के अनुसार इस घटना का समय वि.सं. १५८६ (ई.स. १५२९) के लगभग होना चाहिये। उपर्युक्त गीत में शेखा के युद्ध में मारे जाने का वर्णन सुन्दर रीति से किया गया है और वर्णन-कर्ता (कवि) संभवतः उसका समकालीन ही है।

अँगो अँगि अरि सौ आफलतां, आउधां मुहेज ऊतरियो ।
सुजाउत चा सीस तणे सिव, कुटके ही संतोष कियौ ॥४॥

(रचयिता—करमसिंह आशिया)

हे शेखा राठौड़ ! तेरा सम्पूर्ण मस्तक नहीं प्राप्त होने से, शिव अपना सिर धुनते हुए अन्य कोई उपाय न देख तेरे मस्तक के टुकड़ों को ही मुण्डमाला के लिए संग्रहित करने लगे ॥ १ ॥

हे मरुदेशीय वीर, जितने भी वीर हुए उन सबमें से, सर्व श्रेष्ठ बात कही और अपने मस्तक के टुकड़े टुकड़े करा दिये । उन टुकड़ों को एकत्रित करने के लिए शिवजी अपना मस्तक हिलाते हुए रणस्थल में फिरने लगे ॥ २ ॥

हे वीर शेखा ! तेरे झगड़ने पर, भूषण (मुण्डमाला) की इच्छा रखने वाले ईश (शिव) ने पल मात्र में तेरे मस्तक के टुकड़े चुन लिये क्योंकि सम्पूर्ण मस्तक प्राप्त होने की उन्हें संभावना नहीं दीखी । इस कारण दुःख प्रकट करते हुए अपने मस्तक को युद्ध-भूमि में हिलाने लगे ॥ ३ ॥

हे सूजा के वंशज ! तू ने प्रत्येक शत्रु से लड़कर अपने अंगों को शस्त्रों द्वारा कटवा दिया है । तेरा सम्पूर्ण मस्तक नहीं मिलने पर शिवजी ने उसके टुकड़ों को प्राप्त करके ही संतोष कर लिया ।

८—राठोड़ शेखा सूजावत[१]

गीत—(छोटा साणोर)

गहन सकै ग्रहे उग्रहे ग्रहिया,
दाखै चंद दुणियंद दुवै ॥

टिप्पणी:—१ इस गीत का सम्बन्ध भी उपर्युक्त राठोड़ शेखा से है, जो

सेखड़ा सामि सनाह सारिखौ,
हेक कन्है जो भील हुवै ॥ १ ॥
अ धड़ ग्रहै किम सुतन आपणौ,
कहै किरण पति सोम कथ ॥
एकाधपति जिसो ऊदाउत,
हेक हुवै जो खड़ग-हथ ॥ २ ॥
गह ग्रहे किम सोम कहै रवि,
मिले असुर घड़ केम मुड़ै ॥
सुभट बिया रिण माल सारिखो,
जुड़ण हार एत्र हो जुड़ै ॥ ३ ॥
समिहर कहै सपेखै सूरिज,
अधड़ ग्रहण नित करै अनेक ॥
सूर कलह गुर सेखड़ा सारिखौ,
आपां बिहूँ न जुड़ियो एक ॥ ४ ॥
(रचयिता–पृथ्वीराज राठौड़)

वि०सं० १५८६ (ई०स० १५२६) में जोधपुर के राव गांगा के साथ गांवाणी गांव में युद्ध होने पर मारा गया था। कवि ने इसमें शेखा की वीरता का सुन्दर वर्णन किया है। उपर्युक्त गीत का रचयिता राठोड़ पृथ्वीराज बताया गया है, जो बीकानेर के राव कल्याणमल का छोटा पुत्र और राजा रामसिंह का भाई था। यह पृथ्वीराज वीर होने के साथ राजस्थानी भाषा का उत्कृष्ट विद्वान् और डिंगल साहित्य का प्रौढ़ कवि था और उसका समय वि०सं० की सतहरवीं शताब्दी का मध्यकाल सुनिश्चित् हैं; अतएव इस गीत का रचनाकाल भी वही होना चाहिये। भाषा आदि से भी यह गीत उसी समय का प्रतीत होता है।

भावार्थः—चन्द्रमाँ और सूर्य परस्पर एक दूसरे से कहते हैं कि स्वामी का वचन-स्वरुपी (रक्षक) शेखा जैसा एक भी विकट (भयानक) वीर अपने पास होता तो हम [राहू द्वारा] ग्रसे नहीं जाते। यदि ग्रसे भी जाते तो वह शीघ्र ही मुक्त करा देता ॥ १ ॥

सूर्य और चन्द्र कहने लगेः—सूजावत (सूजा का वंशज शेखा) जैसा एक भी खड्ग धारी राज वंशी हमारे पास होता तो अपने सुन्दर शरीर को बिना रुण्ड वाला राहू कैसे ग्रस सकता था ? ॥ २ ॥

चंन्द्रमा, सूर्य से कहने लगा—हे सूर्य ! सुन, द्वितीय रणमल जैसा वीर [शेखा] अगर झूझने वाला हमारा साथी होता तो राहू दानवीर सेना को साथ में लेकर भी यदि अपने ऊपर आक्रमण करता तो भी वह वीर शेखा उनसे विचलित नहीं होता और लड़ पड़ता ॥ ३ ॥

चन्द्र बोला— हे सूर्य ! देखो-यह बिना रुण्ड वाला राहू समय २ पर अनेकों बार अपने को ग्रसता रहता है, क्योंकि हम दौनों ने सोचे समझे बिना युद्ध-कर्ता प्रचण्ड वीर शेखा जैसे एक भी वीर को अपने पास नहीं रखा ॥ ४ ॥

६ राठोड़ शेखा सूजावत [१]

गीत (छोटा साणोर)

रिम घड़ रिणि सांकडै रूंधै,
माते जुधि ताते मछरि ॥
सेखा तणी कटारी समहरि,
अफरिस ऊगी तणौ अरि ॥ १ ॥

टिप्पणीः—१ इस गीत में शेखा द्वारा युद्ध में कटारी से युद्ध करने का वर्णन है। भाषा आदि से गीत प्राचीन और समकालीन कवि का बनाया हुआ पायाजाता है।

सत्र साम्हा क्रम सिखर सीचतै,
घड़ा थड़ा वध भेदे घाड़ ॥
सलखा हरै तणी सोनहरी,
नीलाणी पलव प्रघल निमाड़ ॥२॥

वीरत बसँत कलोधर वीरम,
असुरां उरि फूटती अजस ॥
लोहाली तरूवर वरि लगा,
मंजर पुहप तणा वस मंस ॥३॥

ऊभा ऊभ समोभ्रम ऊदल,
रिणि पौरिस साझता रिम ॥
सग्ग सुजस फल सवल सापनौ,
जुजिठल वाला अंब जिम ॥४॥

[रचयिता:- माल्हड़ वरसड़ा]

भावार्थ:— युद्ध समय में वीर शेखा ने शत्रु सेना को घेर कर रोक लिया और उसकी कटारी विपक्षी की छाती को बेधकर पीठ पर इस प्रकार निकल आई मानों पृथ्वी से पौधा निकल आया हो ॥१॥

सलखा के वंशज ने शत्रुओं के सामने बढ़कर उनके गिरी शिखर तुल्य मस्तकों को शोणित से सींच दिया और सैन्य-पक्ति तुल्य क्यारियों को शस्त्राघात द्वारा खोदकर मांस रूपी खाद से परिपूर्ण कर दिया। जिससे उसकी सुनहरी कटारी वृक्ष के तुल्य हरी हो गई ॥२॥

वीरम देव की कला के अंश को धारण करने वाला वह वीर (शेखा) स्वयं वसन्त तुल्य (रक्त रंजित) बन गया। उसने अपने वंश को गौरवान्वित करते हुए शत्रुओं के वक्षस्थलों को कटारी से बेंध

दिया। उस कटारी की नोक पर मांस लग जाने से वह पौधे की भांति मंजरियों युक्त वृक्ष के समान हो गया ॥३॥

अपने पूर्वज ऊदा के समान उस वीर (शेखा) ने तत्कालीन शत्रुओं के साथ रणस्थल में पुरुषार्थ बतलाते हुए एक ऐसे वृक्ष का रचना की; जिससे उसने स्वर्ग में बसते हुए युधिष्ठिर के आम्र फल तुल्य अपना पराक्रम रूपी फल (अमर यश) प्राप्त कर लिया ॥४॥

१० राठोड़ करमसिंह (कर्मसी)[1] जोधा का पुत्र

गीत (छोटा साणोर)

राखत नहीं कमो रिण रहतो,
घाय मिले दल असुर घड़ ॥
जड़ मेड़ते जांगलू जाती,
जेता रण ही जात अड़ ॥१॥
पोहो जेतारण अने डूण पुरि,
पोह मेड़ते जागलू पलह ॥
काढ़त जड़ां सही किलबांहण,
कमर मट जोन करत कलह ॥२॥

टिप्पणी:—१ यह जोधपुर के राव जोधाका पुत्र था, जिसके वंशधर खींवसर के ठाकुर हैं। वह बीकानेर के राव लूणकरण के साथ नारनोल के नवाब से युद्ध करता हुआ ढोसी मुकाम पर वि० सं० १५८३ (ई०स० १५२६) में काम आया। प्रस्तुत गीत में कवि ने कर्मसी की वीरता बतलाते हुए उसको मेड़ता, जैतारण, जांगलू आदि के राठोड़ ऊदा (उदावत) दूदा (दूदावत=मेड़ता) बीका (बीकावत, बीकानेर) और (पंचायण अखैराजोत) शाखा का रक्षक बतलाया है।

सत्रहर सेन जूझ भर साहे,
सीह करत जो नहीं समेड़ ॥
ऊदा दूदा वीक पँचाइण,
एतां जाड़ां हूँत उखेड़ ॥३॥
निग्रह भोम घणा नर नमता,
वण दल सरस मचे इम घाव ॥
राखी भली कमे चिहु रावां,
जड़ ऊपड़ंती जोध सुजाव ॥४॥

[रचयिताः- अज्ञात]

भावार्थः— यदि कर्मसिंह शत्रु सेना पर अपनी सेना सजाकर आघात (वार) करता हुआ युद्ध में नहीं मारा जाता तो मेड़ता और जांगलू की जड़ें उखड़ जातीं और शत्रुओं के दांत जैतारण पर भी जा लगते ॥१॥

अगर कर्मसिंह युद्ध करके नहीं मर मिटता तो जैतारण, द्रोणपुर (बीकानेर), मेड़ता, और जांगलू के राजाओं तक उनके दांत जा-पहुँचते तथा मुसलमान विपक्षी भी उनकी जड़ें उखेड़ कर उन्हें नष्ट कर देते ।

वह सिंह तुल्य वीर (कर्मसिंह) शत्रु सेना से झूझ कर नहीं छेड़ता तो ऊदा, दूदा, बीका और पंचायण इन चारों को वे [शत्रु गण] जड़ों सहित उखेड़ कर फेंक देते ॥३॥

विपक्षियों द्वारा अपने भूभाग पर अधिकार कर लेने पर बहुत से वीर मारे जाते और भारी सेना के साथ भिड़ कर शस्त्राघात होते । ऐसे विघ्नप्रद अवसर पर जोधा के पुत्र कर्मसिंह ने चारों (मेड़ता, जांगलू, जैतारण और द्रोणपुरी) राजाओं द्वारा उखेडी जड़ों को बचा लिया ॥४॥

१० राव वीरमदेव मेड़तिया[१] (मेड़ता)

गीत (छोटा साणोर)

संबारव सार सिल्हर फर सजियै, निघ्रसतै निसांणा निहाउ ॥
वीरै पटहत नाखिया विढ़तै, रोद्र इन्द्र जोधा हर राउ ॥१॥
तीर छंट नीछटतै ताई, गूजरवै दल पालि गलै ॥
बूठो सार धार वीरमदै, कादम तिणी मदगंध कलै ॥२॥
साबल घण सजीयै सेलारा, असि हूँ ऊतरि एकमणौं ॥
हो हूँ मेह वीर गुर हुवियौ, त्रिजड़े दूजण साल तणो ॥३॥
वीर विषम गति अमति वरसता, सत्र आइये न सकियो साहि ॥
धड़ उकरड़ चड़ै मुहि धारां, मीर मोर नाचै रण मांहि ॥४॥
तै लोहां जल वीर नाखतै, विढ़णि भविस घड़ सबल विचालि ॥
असपति गज पति तणा ऊतरे, अंग डर चले रूहिर लोहालि ॥५॥
वूठौ विचत्रां सीसि वीर गुर, धजवड़ झड़ आसाढ़ धुरि ॥
गह समसेर छांडिगौ परिगह, पड़ते हाथे अजय पुरि ॥६॥

[रचयिता:- अज्ञात]

भावार्थ:— नगारो पर बुरी तरह डंके की चोट पड़ने पर इन्द्र तुल्य जोधा के वंशज वीर वीरमदेव ने युद्धार्थ शस्त्र, कवच और

टिप्पणी:—१ राव वीरमदेव मेड़तिया (मेड़ते का स्वामी) ने अजमेर पर अधिकार किया, यह इतिहास सम्मत है। यह उस समय की घटना है, जब गुजरात के बहादुर शाह को हरा कर हुमायूं बादशाह के मुकाबले में डटा हुआ था वह वीर था वैसाही कौशल में भी निपुण था। उसने राव मालदेव को समेल के युद्ध से भाग जाने के लिये कौशल पूर्वक ही लज्जित किया था।

ढाल आदि सजाकर हाथियों-स्वरूपी मुसलमानों को काट काट कर धराशाई कर दिया ॥१॥

तेजी के साथ छीटों के समान तीर बरसाकर गुर्जर सेना को जल रूपी रक्त से तर कर दिया और वारिधारा रूपी शस्त्रधारा बरसाई; जिससे उस कीचड़ में शत्रुओं-रूपी हाथी धँस गये ॥२॥

सब साथियों सहित एक मन होकर बादलों के समान लोह कुंत, भालों और तलवारों को हिलाते हुए उस वीर दुर्जन शाल (दूदा) के पुत्र ने मेघ-स्वरूपी बन कर अपनी तलवार द्वारा बड़े बड़े शत्रुओं को नष्ट कर दिया ॥३॥

शाह की तनिक भी चिन्ता नहीं कर उस वीर ने विषम गति से शस्त्र वर्षा की। उस समय वीरों के धड़ खड्ग-धार-रूपी वारिधारा के समान युद्ध-भूमि में मयूर के समान नृत्य करने लगे ॥४॥

नाश कारक भविष्य की बादल स्वरूपी सबल सेना के बीच उस वीर के द्वारा शस्त्र रूपी जलवर्षा के प्रवाह में अश्वारोहियों और गजारोहियों के डूबने पर उसका रुधिर उबला जिससे, उनके अंग और हृदय जलने लगे ॥५॥

उस शक्ति शाली वीर ने आश्चर्य जनक ढंग से आषाढ़ के धुरवा (बादल) के समान शत्रुओं के सिर पर खड्ग झड़ी की। उस वीर के हाथ अजमेर दुर्ग पर पड़ते ही ग्रहण-स्वरूपी शमशेर अपने कुटुम्बियों को छोड़ कर वहाँ से भाग गया ॥६॥

११ राव वीरमदेव मेड़तिया[१] (मेड़ता)

गीत (छोटा साणोर)

नखत्र ते निवड़ आपरे निरोहे,
लोह दुवगम लख दल लेय ॥
त्रिहुँ रावां सिरि भलौ तांडियौ,
वसुधा जीतै वीरम देय ॥१॥

टिप्पणी:—१ राव वीरमदेव राठोड़ मेड़तिया, जोधपुर के राठोड़ राव जोधा

पलवाड़ै नागाणै पैठो,
चिड़ी आंगमि न सकै पमार ॥
माला रवाड़ै उपरि मालां,
जोध हरौ तांडै जणि यार ॥२॥

ओ गातीया न सकही आगमि,
सींग झड़ा वाहंतै सार ॥
देस पती ऊपरि दूदा उत,
गाजै वीरम रण गलियार ॥३॥

की सोनिगिरी राणी चांपादे से उत्पन कुँवर दूदा का ज्येष्ठ पुत्र था। दूदा ने अपने पिता जोधा की विद्यमानता में मेड़ता का पृथक राज्य स्थापित किया और उस के वंशधर मेड़तिया कहलाने लगे। वि०सं० १५३४ में राव वीरमदेव का जन्म हुआ और वि०सं० १५७२ में राव दूदा की मृत्यु होने पर वह मेड़ते की गद्दी बैठा। उस ने कई युद्धों में भाग लिया था और वि०सं० १५८३ (ई०स० १५२७) के प्रसिद्ध खानवा युद्ध में भी महाराणा सांगा का साथ देकर राजस्थान की एकता प्रकट की। गुजरात और दिल्ली की सल्तनतों के बीच वि०सं० की सोलहवीं शताब्दी के अन्तिम दिनों में विरोध हुआ; तब अजमेर पर भी उसका अधिकार हो गया था। उपर्युक्त गीत में उसका शमशेरखां से युद्ध करने का उल्लेख है। जो संभवत: अजमेर का कोई शासक हो। जोधपुर के राव मालदेव और उसके बीच विरोध होगया था इस कारण से राव मालदेव ने उस (वीरमदेव) पर आक्रमण कर मेड़ता छीन लिया और अजमेर से भी उसका अधिकार उठा दिया। तब वह तत्समयक दिल्ली के बादशाह शेरशाह सूर के पास पहुँचा। मालदेव के विरूद्ध बीकानेर के राव कल्याणमल के प्रतिनिधि भी बीकानेर पर अधिकार कर लेने एवं राव जैत्रसिंह के मारे जाने की शिकायत लेकर शेरशाह के पास पहुंचे और वहां विद्यमान थे। अतएव इन दोनों ने

जोधपुरे अजमेरे जोयौ,
फाफर सींगे घणे फिरि ॥
वीर वणार वेगड़ौ वेढुक,
सांड तांडियौ अरी सिरी ॥४॥

[रचयिता:- अज्ञात]

भावार्थ:- हे वीरम देव ! तेरे नक्षत्र बाधा रहित हैं (अर्थात् युद्ध में तुझे कोई नहीं रोक सकता) इसलिये तू लाखों की संख्या वाली सेना से दुर्गम (भयानक) लोहा लेता रहता है। तू तीनों नरेश्वरों पर जहाँ तक पृथ्वी अटल है, वहाँ तक ललकार करता रह ॥१॥

तूने चढाई कर पलवाड़े और नागौर के स्थानों पर भी निःशंक प्रवेश किया। तुम से प्रमार क्षत्रिय भी लोहा नहीं ले सके। हे जोधा के वंशज ! तूने वृषभ तुल्य बन मालदेव को हराया और मल्लिनाथ के खेड़ नामक भू भागपर जा धमका ॥२॥

हे बलवान वृषभ तुल्य वीरमदेव, तू अपने शस्त्र रूपी शृंगों का प्रहार करता हुआ शत्रुओं को नष्ट करने लगता है; उस समय कोई भी तेरा सामना नहीं कर सकता। हे दूदा के पुत्र ! तूं देशाधिपों पर युद्ध भूमि में हुँकारता रहा ॥३॥

जोधपुरेश्वर और अजमेर के हाकिम ने तेरे फैले (चलते) हुए भयानक शृंगों (शस्त्रों) को देखा। हे वीरों के नाशकर्ता ! तू

मिल कर शेरशाह को मालदेव पर आक्रमण करने के लिये तैयार किया और वि०सं० १६०० (ई०स० १६४३) में मारवाड़ पर चढ़ा लाये। वीरमदेव के कौशल से शेरशाह की विजय हुई। मारवाड़ पर शेरशाह का अधिकार होगया, तथा राव वीरमदेव को मेड़ता मिल गया; परन्तु इसके पीछे वीरमदेव थोड़े ही समय तक जीवित रहा और वि०सं० १६०० (ई०स० १६०४) में उसका देहान्त होगया।

दौनों (मातृ-पितृ) पक्ष से मार देने वाले सांड (वृषभ) तुल्य होकर शत्रुओं पर ललकार (गर्जना) करता रहा ॥४॥

१२ राठोड़ रत्नसिंह दूदावत[१] (मेड़तिया)

गीत—(छोटा-साणोर)

करि करभ सजे साबल् कालामे,
मंत्र खत्र दाख ते सू मन ॥
सायर अखैराज समभीयो,
अगसति रतनै आचमन ॥१॥

जपै जाप जुध चाल् जागवै,
धरे तूल् साबल् हुल धार ॥
द्विज ऊत नमों तोहि दूदा तण,
पेटि समाणौ समंद्र पमार ॥२॥

टिप्पणी:—१ यह जोधपुर के राव जोधा के पुत्र दूदा (मेड़ता के पृथक राज्य का संस्थापक) का छोटा बेटा था। उसको बारह गांवों सहित मेड़ता से कुड़की की जागीर मिली थी। राजस्थान की प्रसिद्ध कवियत्री मीरांबाई का वह पिता था। मेवाड़ के महाराणा सांगा (संग्रामसिंह) और मुगल बादशाह बाबर के बीच ई०स० १५२७ (वि०सं० १५८३) में खानवा क्षेत्र में युद्ध हुआ, उसमें रत्नसिंह, महाराणा के पक्ष में लड़ता हुआ, अपुत्रावस्था में ही मृत्यु को प्राप्त हुआ। उपर्युक्त गीत में उसका अखैराज परमार के मुकाबले में वीरता प्रदर्शित करने का वर्णन पाता नामक सामयिक कवि द्वारा हुआ है। अखैराज संभवतः अजमेर के निकटवर्ती श्रीनगर के परमारों में से कोई हो सकता है। पर उसका इतिहास में कही पता नहीं मिलता है।

चाढे चल॒ अणी मुहि चाचरि,

सोषे जल॒ सत्र दल॒ सिगलोई ॥

पंडित पेट रतन पाराक्रम,

हुए प्रवाड़े त्रिपत न होई ॥३॥

[रचयिताः- पाता बारहट]

भावार्थः— हे रतनसिंह ! तूने हाथी और ऊँटों से युक्त सेना को सजा, काले सर्प के समान भाले को हाथ में ले, क्षात्र-मन्त्र का पवित्र जप करते हुए अगस्त्य ऋषि के समान होकर समुद्र-स्वरूपी अक्षय राज का शोषण कर लिया ॥१॥

हे दूदा के पुत्र ! तू वंदना करने योग्य है। तूने युद्ध जागृत करने के मन्त्र का आह्वान किया और पैने भाले को ग्रहण कर ब्रह्मपुत्र अगस्त्य ऋषि स्वरूप हो समुद्र-रूपी परमार को अपने पेट में समा लिया ॥२॥

हे पराक्रमी रत्नसिंह ! तूने शत्रुओं पर सेना सजाकर समस्त शत्रु-सेना रूपी अपार जल का शोषण कर डाला। तेरा उदर इस समय अगस्त्य ऋषि का पेट बन गया है। तेरा इसी में यश है कि तू शत्रुओं का शोषण करते हुए भी तृप्त नहीं हुआ

१३ राठोड़ दूदा पर्वतोत (पर्वतसिंह का वंशज) [१]

गीत (बड़ा साणोर)

मुड़े राण खूमाण खुरसाण घाये मिले,

छत्रपती ऊतरे मोहर छिगिया।

टिप्पणीः—१ मेवाड़ के महाराणा सांगा (संग्रामसिंह) और बादशाह

तुरी नव तेरही घड़ा परबत तणा,
दूदड़ा मेलि देसौत डिगिया ॥१॥

सीकरी खेत सगराम भागे समे,
सुजड़ सांवत हरे उल्झे सार।
दुहुँ फौजां बीचे फेरियो दूदड़े,
तेवड़ो सांकड़ी बार तुखार ॥२॥

हाक मुगलां हुऐ भांजते हिन्दु वै,
परड़े घड़ करड़े चड़े पूठी।
राणा रै आगली बाहेता असमरां,
झोकियो दूदड़े बार झूठी ॥३॥

धूंकला मंगला करण मुरधर धणी,
पमँग पुलियां दलां फेर पिछावणी।
तेवड़ा चौवड़ा माहि धड़ तुरकिया,
उथला दूदड़े दीध आराणी ॥४॥

बाबर के बीच होने वाले वि०सं० १५८३ (ई०स० १५२७) के खानवे के युद्ध में राठोड़ो की बड़ी सैन्य ने भाग लिया था और महाराणा सांगा के सिर में जब तीर लगा, तब वह अचेत होगया तो मेड़ता के राव बीरमदेव ने बड़ी कठिनता से उसको युद्ध से हटाया था। (जयमल वंश प्रकाश प्रथम भाग, रचयिता ठाकुर गोपालसिंह, पृ० ८३), उस समय राठोड़ दूदा-पर्वतसिंह के पुत्र ने भी वीरता प्रकट की हो, यह संभव है। परन्तु महाराणा का सारी सेना युद्ध से विमुख होगई और अकेला दूदा ही युद्ध क्षेत्र में ठहर कर मुगल सैन्य-दल से लड़ता रहा एवं अन्त में मुगल दल को भगा कर आप सही सलामत लौट आया। यह इतिहास के विरुद्ध है और अतिशयोक्ति ही जान पड़ती है।

माहि मुगलां दलां बाग दे मोकली,
भेलि असि राण रा खेति भाजै।
कलह दीवांण छल कमंध आयो करे,
सुजड़ हत दूदियो नाद साजै ॥५॥

[रचयिता:— खरत देवल]

भावार्थ:— जिस समय खुमाण-वंशज महाराणा (सांगा) मुसलमानों के आघातों से घायल होगये थे उस समय उन्हें घायल अवस्था में लेकर सामंत गण लौट आये तो राणा के अन्य योद्धा भी उसी अवस्था में लौट गये, सहायक राजागण भी शत्रुओं द्वारा दबाये जाने के कारण वहाँ से हट गये। उस समय, हे पर्वतसिंह के पुत्र दूदा ! तूने अपना घोड़ा बढ़ाकर शत्रु सेना को युद्धार्थ निमंत्रित (युद्ध छेड़ा) किया ॥१॥

सीकरी के रणक्षेत्र से जब राणा सांगा हटा लिये गये। उस आपत्ति के समय हे सावंतसिंह के वंशज दूदा ! तूने शस्त्र उठाकर बड़ी कुशलता से वार करना प्रारम्भ किया तथा दोनों सेनाओं के मध्य में वार करते हुए घोड़े को तीन बार चक्कर दिया ॥२॥

हिन्दू-योद्धाओं के हट जाने से मुगलों की गर्व पूर्ण हुँकार होने लगी। उस समय सेना में प्रलय के समान दृश्य दृष्टिगोचर होने लगा। तब हे वज्रकाय वीर दूदा ! तूने घोड़ा बढ़ाकर, महाराणा की सेना का हरावल ग्रहण किया और तलवार चलाता हुआ शत्रु-सैन्य से भिड़ गया ॥३॥

हे युद्ध में मंगल (विजय) करने वाले राष्ट्रवर वीर दूदा ! अपना घोड़ा बढ़ाकर तूने पश्चिमदेशीय वीरों (मुगलों) को पीछे मोड़

दिया। सेना के तीन २ चार २ व्यूह पंक्तियों को तोड़ कर, तू उस के मध्य में जा घुसा और यवन यौद्धाओं को धराशायी कर दिया ॥४॥

हे कमधज वीर! तूने शंकर के दीवान (मन्त्री) महाराणा की सहायतार्थ युद्ध छेड़ा। जिस से मुगल सेना व्याकुल हो, दुआ मांगने लग गई (खुदा को पुकारने लगी) तूने शाही सैनिकों का उजाड़ कर (काटमार कर) रणक्षेत्र से भगा दिया और विजय प्राप्त कर हाथ में कटारी ले गर्जता हुआ घर लौट आया ॥५॥

१४ राठोड़ कूंपा[१] मेहराजोत

गीत

जीतो जांगलु जग सारो जाणे, माण आगरे मूकौ ॥
कमधज कटक तुहारो कूम्पा, ढ़ीलड़ी लेवा ढूको ॥१॥

पहली बात सुणी पतसांहा, विढ़ज बीकानेरी ॥
मैहराजोत तणो भय मुगला, चलग्या मेल चंदेरी ॥२॥

आयो करन साहियां असमर, थाट विडारण थांणे ॥
अखा कलोधर तूझ ओद्रकां, पड़िया भंग पठाणे ॥३॥

टिप्पणी:—१ यह राव रणमल के पुत्र अखैराज का पोता और मेहराज का बेटा था। वि०सं० की सोलहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध समय में राव मालदेव के राठोड़ों में यह एक मुख्य वीर था वि०सं० १६०१ (ई०स० १५४४) में बादशाह शेरशाह सूर के मुक़ाबले में समेल नामक स्थान में राव मालदेव की तरफ़ से लड़ कर वीरगति को प्राप्त हुआ। इस गीत में कवि ने जिन जिन युद्धों में वीर वर कूम्पा ने वीरता प्रदर्शित की, उनका वर्णन किया है, जो समयोचित है एवं इतिहास से विरुद्ध नहीं जान पड़ती। इसके वंशधर कूम्पावत कहलाते हैं, जिनमें आसोप का ठिकाना प्रमुख है।

पारण कोट हंसार तणी पर, रूधी काबल रूनी ॥
खाग तणे बल की खेड़ेचे, साह तणी घर सूनी ॥४॥

[रचयिता:- अज्ञात]

भावार्थ:— हे कूंपा राठोड़ ! तूने पहले जांगलू (बीकानेर) पर आक्रमण कर उस को विजय किया और आगरा ने भी अपना गौरव तेरे चरणों में अर्पित किया। अब तेरी सेना दिल्ली विजय करने के प्रयत्न में लगी हुई है ॥१॥

हे मेहराज के वंशज ! बीकानेर की युद्ध-घटना बादशाह ने पहले ही सुनली थी और इसी कारण मुगल भयातुर हो चंदेरी छोड़ कर चलते बने ॥२॥

हे अखेराज के वंशज ! जिस समय तू शाही थाने को नष्ट करने के लिये हाथों में तलवार लेकर आया; उस समय तेरे आतंक से सभी मुगल, पठान रात्रि में भयभीत हो उठ बैठने लगे ॥३॥

हे खेड़ेचा ! तूने हिसार, काबुल और पाटन दुर्ग तक अपना अधिपत्य जमा लिया। इस प्रकार तूने अपनी तलवार के बल से बादशाह का भू भाग उजाड़ दिया ॥४॥

१५ राठोड़ कूंपा[1] मेहराजोत

गीत (छोटा साणोर)

ऊछलते तुरी खाग आछटतो, बीरत गुर खत्रवाट बहै।
मह्राजौत मारका माथै, कूम्पौ आयौ सूर कहै ॥१॥

टिप्पणी:—१ वि० सं० १६०१ (ई० स० १५४४) में मारवाड़ के राव मालदेव पर दिल्ली के बादशाह शेरशाह सूर की चढ़ाई हुई और समेल नामक

कुंजर घणा ठेलतो कूम्पो, महराजोत महाजुध माह।
धजवड़ हथ आयो धूहड़ियो, पाड़ २ कहतो पतसाह ॥२॥

रिणमल हरो राव छल रावत, रँगिये कूँत बड़ौ राठौड़।
खाँन खडो आखे खुदालिम, मो आवस कमधज कुल मौड़ ॥३॥

कटकां बिचा चाढ़ सिंध कूम्पै, कमधज इम आछटी केवांण।
नायक घणा पाड़कर नेजा, पायक जुध पड़ियो पीठाण ॥४॥

[रचयिताः— अज्ञात]

भावार्थः— वीर महाराणा का वंशज अपने अश्व को कुदाता और साथ में तलवार चलाता हुआ वीरत्व एवं क्षत्रियत्व के मार्ग पर दृढ़ चरण रखता हुआ मरने अथवा मारने वाले दृढ़ संकल्पी वीरों की ओर चला। वह, वीर यौद्धाओं को ललकार कर कहने लगा कि, मैं वीर कूम्पा तुम पर चढ़ कर आया हूँ, अतः सावधान हो जाओ ॥१॥

उस महायुद्ध में वीर कूम्पा बहुत से हाथियों को धकेलने लगा और तलवार हाथ में लेकर "बादशाह को पछाड़ दूंगा" यह कहता हुआ आगे बढ़ा ॥२॥

वह रणमल का वंशज जो अपने राजा का सहायक था, अपने भाले को रक्त से रंग सम्मुख खड़े यवन सैनिकों से कहने लगा, मैं राष्ट्र वर वंश का शिरोमणि तुम्हें कुचलने आया हूँ ॥३॥

स्थान में युद्ध हुआ। उस समय राव मालदेव के युद्ध से विमुख होकर चलेजाने पर भी राठोड़ो ने जो वीरता प्रदर्शित की, वह प्रशंसनीय है। उनमें राठोड़ कूम्पा मेहराजोत भी था, जो अपूर्व पराक्रम दिखलाता हुआ स्वर्गवासी हुआ। उपर्युक्त गीत में कवि ने बीर वर कूम्पा के युद्ध में प्रविष्ट होने और बीरता पूर्वक वीर गति पाने का जो वर्णन किया है, वह यथार्थ और समयोचित है।

सेनाओं के मध्य में वह सिंह स्वरूप राष्ट्रवीर कूम्पा, तलवार उठा कर प्रहार करने लगा और अनेकों सैनिकों एवं सेनापतियों को अपने भाले से समाप्त कर दिया। अन्त में युद्ध करता हुआ वह स्वयं धराशायी होगया ॥४॥

१६ राठोड़ कूंपा[1] मेहराजोत

गीत (छोटा-साणोर)

असिवर, धर, ईस, अछर, पँखि आतस,
कै रस, ध्र, हँस, पल, कँगस ॥
कलहि छद रिसण ध्रविया कूम्पै,
सत्रसौं मिलि छल नत्र सँहस ॥१॥

जडलग, महि, प्रम, अछर, विहँग, जज,
जुज, रत, मणि, हँस, मास, जूआंण ॥
एकणि तणि त्रिपविया एता,
अखई हरै करै अवसाण ॥२॥

करि वर, इल, हर, रंभ, कीर, कज,
ठव, जव, सिध जीउ, अमिख, अठांण ॥

टिप्पणी:—१ वीरवर कुम्पा राठोड़ ने बादशाह शेरशाह सूर की चढ़ाई के समय वि० सं० १६०१ (ई० स० १५४४) में समेल के युद्ध में वीरता प्रदर्शित कर प्राणोत्सर्ग किया। इस गीत में उसी का वर्णन किया गया है, जो समयोचित और कवियों की परम्परा के अनुसार स्वभावोक्ति से परिपूर्ण है।

वप क्रमधज पूगौ छां वरगां,
मरंण महिरउत अमलीमांण ॥३॥

खग, खम, रुद्र, रंभ, ग्रीधणि, वनखल,
हीर, रुहिर, सिर, हँस, पल, हाड ॥
चौरंग रँगि कूँपौ वरग उभै चत्र,
चालियौ सरगि पूर वै चाड ॥४॥

[रचयिताः– अज्ञात]

भावार्थः— हे मरुभूमि के रक्षक राष्ट्रवर कूँपा ! तूने युद्ध में क्रोध कर शत्रुओं को क्षत विक्षत कर तलवार, पृथ्वी, शङ्कर, अप्सरायें गिद्धनियाँ एवं अग्नि को क्रमशः मज्जा, रक्त, मस्तक, प्राण, मांस तथा हड्डियाँ समर्पित कर दी हैं ॥१॥

हे अखैराज के वंशज (कूँपा) ! युद्ध में मारे जा कर तूने अकेले ही खड्ग, पृथ्वी, शिव, अप्सरायें, गिद्धनियाँ और अग्नि को क्रमशः गूदा, रक्त, सिर, प्राण, मांस और हड्डियाँ आदि देकर तृप्त कर दिया ॥२॥

हे विपक्षियों के विरुद्ध चलने वाले मेहराजोत (महाराज वंशज वीर कूँप) ! तेरी मृत्यु पर तेरे शरीर से कृपाण, इला (पृथ्वी), हर, रंभा, पलचारी पक्षी और अग्नि इन छः ने क्रमशः मज्जा, रक्त, मुण्ड, प्राण, आमिष और अस्थियाँ प्राप्त की ॥३॥

हे वीर कूँपा ! तूने चतुरंगिनी सेना में रक्त रंजित होकर खड्ग, पृथ्वी, रुद्र, रंभा, गिद्धनियाँ और अग्नि इन छः को मज्जा, रुधिर, सिर, प्राण, मांस, तथा हड्डियाँ समर्पित कर स्वर्ग में प्रयाण किया ॥४॥

१७ राठोड़ भोजराज,[1] रूपावत (बीकानेर)

गीत (छोटा साणोर)

पुलियां पंडवेस सुपह संचरिया,
वागी हाक न कोय वले॥
वाला चंद झाल कर विजड़ो,
भोज राज गढ तू ऊभले॥१॥

जावे जिके मरण भय जावो,
रहे जिका कुल लाज रहे॥
सिर मारे देसी सादावत,
कोट म बीहै भोज कहै॥२॥

टिप्पणी:—१ यह मण्डोवर के राठोड़ राव रणमल के पुत्रों में से रूपा का पुत्र या वंशधर था। रूपा, राव जोधा के पुत्र बीकाने बीकानेर के राज्य की स्थापना की, उस समय उसके साथ चला आया और राव बीका द्वारा जागीर दिये जाने पर वहीं रहा। वि० सं० १५९८ (ई० स० १५४१) में जोधपुर के राव मालदेव की बीकानेर पर चढ़ाई हुई, तब बीकानेर के राव जैत्रसिंह ने भोजराज को बीकानेर के दुर्ग की रक्षा का भार सौंप कर मुकाबले के लिये प्रस्थान किया। साहेबा नामक स्थान में राव जैतसी और मालदेव का मुकाबला हुआ, जिसमें वह (जैत्रसिंह) वीरता पूर्वक लड़ कर काम आया। फिर राव मालदेव ने बीकानेर नगर में प्रवेश किया, उस समय तीन दिवस तक तो दुर्ग में रह कर भोजराज ने मारवाड़ की सेना का सामना किया और चौथे दिन भोजराज अपने साथियों सहित मालदेव की सैना पर टूट पड़ा और वीरता पूर्वक युद्ध करता हुआ काम आया। प्रस्तुत गीत में इसी विषय का वर्णन किसी समकालीन कवि द्वारा किया गया है।

कुल़ छ्ल़ कोट जेत छल़ जुड़वां,
मुगली घड़ा वरण कज मोह ॥
नेमिया दल़ां भोज नेठहिया,
लाखां सु पंच वीसा लोह ॥३॥

वीरा नयर भोज विढंते,
सार अणी चाढियो सरीर ॥
रूपा हरे राखियो रावां,
नरां गिरां उतर तो नीर ॥४॥

[रचयिता:—अज्ञात]

भावार्थ:— हे चांदा के पुत्र भोजराज ! जब मुसलमानों का मुखिया युद्धार्थ चढ़कर आया और वीर हुँकार होने लगी तब युद्ध में कोई भी राजवंशी नहीं ठहर सका, सब चले गये। किन्तु दुर्ग रक्षा के लिये तू ही एक ऐसा वीर है; जो हाथ में तलवार ग्रहण किये हुए संमिलित रहा ॥१॥

हे सादा के वंशज भोजराज ! आपत्ति के समय तूने ही दुर्ग को धैर्य बँधाते हुए कहा कि—मृत्यु भय से जाने वाले भी एक दिन जायेंगे और वंश की लज्जा (इज्जत) के कारण जो युद्ध में डटे रहेंगे वेही (मरने पर भी अमर होकर) रहेंगे ॥२॥

हे भोजराज ! तूने वंश, दुर्ग और अपने स्वामी जैत्रसिंह की सहायतार्थ झूमने एवं शाही सेना को वरण [काबू में] करने के लिये मुग्ध होकर अपने पच्चीस साथियों सहित लाखों की संख्या वाली उमड़ती हुई सेना को नष्ट कर दिया ॥३॥

हे रूपसिंह के वंशज [या पौत्र] भोजराज ! जब बीकानेर का दुर्ग घेरा गया तब तूने अपने शरीर को शस्त्रधार के अर्पित कर दिया

और जिस प्रकार पहाड़ों से पानी शीघ्रता पूर्वक ढुलक पड़ता है, उसी प्रकार राज वंशजों और अन्य वीरों के मुख से उतरते हुए पानी [नूर, कांति] को रख लिया ॥४॥

१८ राठोड़ जैता[1] पंचायणोत

गीत (छोटा साणोर)

डाला अनि सुहड़ घणू डोलांणा,
सार लहरि वाजती साह।
जड़ वह लाज महा भ्रू जैता,
निभैस थुड़ थरहरियो नाह ॥१॥

झांबे अवर नर कँपे झांगली,
बाढाला खमि सके न वाउ।
धुवला सारिखो अचल रहियौ धुरि,
रूंख वड़ौ रिणमल हर राउ ॥२॥

भड़ अनि साख झलझले भारथि,
घाउ मैको रण पेखि घणो।
मूल सूं नह डिगियौ राव मारू,
तर जैटो पचयण तणो ॥३॥

टिप्पणी:—१ यह राव रणमल के पुत्र अखैराज का पौत्र और पंचायण का बेटा था। जोधपुर के राव मालदेव के समय के राठोड़ वीरों में यह भी एक प्रधान व्यक्ति था, जिसने कई युद्धों में वीरता प्रदर्शित कर यशोपार्जन किया। वि०सं०१६०१ (ई० स० १५४४) में समेल के युद्ध में बादशाह शेरशाह सूर के मुकाबले में राव

मुर खंड नाइक सुछल मुरधरा,
घाइ असुर दल साजि घण।
सुवृत्त सुहाइ जैत अण संकित,
तुड़ यौ कुट के आप तण ॥४॥
[रचयिता:- गांगा संढ़ायच]

भावार्थ:— शाखा-स्वरूपी अन्य यौद्धा, झंझावात के समान शस्त्र प्रहारों के थपेड़ों से हिलने लग गये (थर्रागये) किन्तु निर्भयता रूपी क्यारी में लज्जा रूपी गहरी जड़ों वाला, वृत्तरूपी वीर जैता ध्रुव के समान अटल होकर डटा रहा ॥१॥

युद्ध में जांगल प्रदेश (मारवाड़) के अन्य खड्गधारी वीर वृत्त की शाखाओं के सदृश थे। वे उस (युद्ध) पवन के झोंके को नहीं सहन कर सके। किन्तु रणमल का वंशज वीर (जैता) ऊँचे वृत्त के रूप में ध्रुव के समान अटल रहा ॥२॥

युद्ध भार से वृत्त की शाखाओं के तुल्य अन्य वीर कम्पित हो गये किन्तु मरुदेशीय पंचायण का वंशज (अथवा पुत्र) जो बड़े वृत्त के तुल्य था। वही एक मात्र इस घमासान युद्ध में घाव सहता हुआ मूल से नहीं डिगा (चरणों पर दृढ़ रहा) ॥३॥

मरुदेशीय निभय वीर जैता सुन्दर वृत्त के तुल्य था। उसने अपने भू भाग का रक्षक बन कर भली प्रकार सु सज्जित हो बहुत से

मालदेव की अविद्यमानता में भी उसी प्रकार वीरता दिखला कर उसने प्राणोत्सर्ग किया। जेता के वंशधरों में मारवाड़ में बगड़ी का ठिकाना मुख्य है। प्रस्तुत गीत में कवि ने राठोड़ जेता की वीरता का वर्णन समयोचित ढंग से किया है रचनाकार गांगा संढायच गौत्र का चारण था, जो समकालीन कवि जान पड़ता है, पर उसकी रचना नहीं मिलती है।

पठानों का नाश करते हुए स्व शरीर के टुकड़े २ करवा दिये (फिर भी उस की लज्जा रूपी दृढ़ जड़ें अंत तक भी उखड़ नहीं सकी) अर्थात् कुल लज्जा का निर्वाह करते हुए अन्त में स्वर्ग की ओर प्रस्थान किया ॥४॥

१६ राठोड़ जेता[1] पंचायणोत

गीत (छोटा साणोर)

नव लाख कटक नव लाख नेजाइत, गढ़ थर हरे बडा गज गाह ॥
जेता तणा भुजा दँड जोवा, सूर पधारे पहर सनाह ॥१॥
सूर खट लाख मेछ दल मोड़े, सत्र हर चढ़त मंडोवर सीम ॥
जोगणी पुरी आइ इम जोवें, भुज राठौड़ तण जुध भीम ॥२॥
रिणमल हरो मुवौ पग रोपे, घाइ बिहंड असुराण घणा ॥
ऊभो करे जौइयो असपति, ताह भुजा दंड जेत तणा ॥३॥

[रचयिताः- अज्ञात]

भावार्थः— जिस समय नवलक्ष सैनिकों की सेना में नौलाख झंडे फहरा रहे थे और हाथियों को कुचल देने जैसे वीरों के कारण बड़े २ दुर्ग थर्रा रहे थे; उस समय वीर जैत्रसिंह के भुज दंण्डों की शक्ति का निरीक्षण करने के लिये स्वयम् शेरशाह सूर कवच पहन कर उपस्थित हुआ ॥ १ ॥

जब शत्रु मण्डोवर की सीमा पर चढ़ आया, तब उस राष्ट्र-वर वीर ने लड़ कर नव लक्ष मुसलिम सैनिकों को मोड़दिया। स्वयम्

टिप्पणीः—१ राठोड़ जैता पंचायणोत का परिचय ऊपर दिया गया है। प्रस्तुत गीत में उसकी वीरता का वर्णन है, जो समेल के युद्ध से संबंधित है। रचना कार ने इस युद्ध में नौ लाख शत्रु सेना की उपस्थिति बतलाई है, वह ठीक नहीं है। अन्य वर्णन ठीक है।

दिल्लीश्वर भी उस युद्ध में उस वीर की भुजाओं को भीम की भुजाओं के तुल्य मानने लगा ॥ २ ॥

वह रणमल का वंशज अपने आघातों द्वारा बहुत से मुसलमानों को मार कर मारा गया। उस समय जैत्रसिंह के भुजदंडों को बादशाह देखता ही रह गया ॥ ३ ॥

२० राठौड़ खेमा[१] (खींवा) ऊदावत

गीत (छोटा साणोर)

भाजौ भड़ लाख चांपिया भत्रिसां, त्रिढ़ि तूं भाज करारी वार ॥
आगे हैं खेमाल् अतुल् बल्, दादिल् सरै नीसरे डार ॥१॥

सुाह मुड़े मत्र दल् मालुलिया. बीजड़े खीमा दाखि बल् ॥
यों आदि लग हुवै ऊदाउत, कविलै अंत रोढ़ा कुसल् ॥२॥

लसिया नियदल् रोद्र लूंबिया, भलिं राठौड़ भुजे भाराथ ॥
सलखा हरा ऊवरै सुसवद, सारै गिड़ रिहाला साथ ॥३॥

पड़ियौ प्रिसण चौगुणा पाड़ै, रोद्रा थाभे माहि रिण ॥
कांमल बराह वड़े खीम करण, मोय चरां टालियौ मरण ॥४॥

[रचयिता:- करमसिंह आशिया]

टिप्पणी:—१ यह जोधपुर के राव सूजा के बेटे ऊदा का पुत्र या वंशधर जिसके वंशज मारवाड़ में रायपुर के ऊदावत ठाकुर हैं। राव मालदेव पर वि० सं० १६०० (ई० स० १५४४) में दिल्ली के सुलतान शेरशाह सूर की चढ़ाई हुई, जिसमें राठोड़ वीर खींवा राव मालदेव की तरफ से युद्ध करता हुआ स्वर्गवासी हुआ। उसका कवि ने प्रस्तुत गीत में वर्णन किया है।

हे वीर खेमा ! तू लाखों यौद्धाओं को नष्ट कर देने वाला था; किन्तु भविष्यवश इस आपत्ति के समय में कट गया । फिर भी तेरे आगे होकर भिड़ने से अन्य साथी इस प्रकार आपत्ति से बच गये जैसे दद्वेल वाराह के भिड़ने पर उसके बच्चे आदि सकुशल बचकर निकल जाते है ॥ १ ॥

हे उदावत वीर खेमा ! तेरी तलवार के बल पर ही शत्रु दल पराजित हुआ है और तेरे साथी राज-वंशज (या-राजा) सकुशल लौट गये हैं । ऐसा कहा जाता है कि वाराह के मारे जाने पर उसके बच्चे आदि सकुशल लौट जाते है ।

हे सलखा के वंशज वीर राष्ट्रवर ! जिस समय स्व पक्ष की सेना युद्ध भूमि में सुशोभित हुई और उधर से मुस्लिम सेना उस पर उतर आई, तब तू अपनी भुजाओं के बल से उससे भिड़ गया । अतः तूने इन यश-वाक्यों को छोड़ दिया कि प्रमुख वाराह की मृत्यु के बदले ही उसके बच्चे आदि बचते हैं ॥ ३ ॥

हे वीर खेम करण ! तू युद्ध भूमि में मुसलमानों को रोकता हुआ बहुत से शत्रुओं को मार कर धराशायी हो गया हैं । हे भारी वाराह स्वरूपी वीर ! तूने ही मोथा खाने वाले कवल शावक अपने साथी युवकों को मृत्यु से बचाया है ॥ ४ ॥

२१. राठोड़ बीदा[१] भारमलोत (राव जोधा का पौत्र)

गीत (छोटा-साणोर)

पह चाड प्रता सुध धरा पलटती,
घणा असुर रहचे घण घाय ।

टिप्पणी:—१ यह जोधपुर के राठोड़ राव जोधा के पुत्र भारमल के बेटे कला

वडे वडे सुर सीस वीदड़ा,
पोहप चाढ़ि तिण परि जाय ॥ १ ॥

देवा तणा तणा दुरवेसां,
चाहण वाहण थाट चड़े ।
भारमलोत तणा उपरि भुज,
पड़े पोहप म्रित माल़ पड़े ॥ २ ॥

रिणमल़ हरा तणे छलि़ रायां,
अरियुं जुड़ते निभे उर ।
कुसमे अने पड़े किर माल,
अरचै वांदि सूर असूर ॥ ३ ॥

महि छ्ल मरण मांडतां माथे,
गाढ़ा गुर कमधज ओ गाढ़ ।
ब्रह्म तणा कर कुसम बिछूटा,
विचित्र तणे कर छूटा वाढ़ ॥ ४ ॥

[रचयिताः- करमसिंह आशिया]

भावार्थः— हे वीर बीदा ! जब तुझे ज्ञात हुआ कि तेरा भू भाग औरों के अधिकार में जाने वाला है। तब तूने विपक्षी यवनों पर

का पुत्र था और जोधपुर के राव मालदेव का प्रतिष्ठित सरदार था। उस समय के राजपूतों में वह बड़ा बलवान माना गया है। वि० सं० १६०० (ई०स० १५४३) में शेरशाह सूर की मारवाड़ पर चढ़ाई हुई, जिसमें उस बीदा ने पूर्ण वीरता दिखलाकर प्राणोत्सर्ग किया। उपर्युक्त गीत में कवि ने इस विषय का वर्णन उचित रीति से किया है।

चढ़ाई कर उन्हें युद्ध में रक्त-रंजित कर दिया तथा तूने अपने शरीर पर अनेकों घावों को सहन किया। यह देख कर अनेकों बड़े-बड़े देवता तेरे ऊपर पुष्प वृष्टि करने लगे ॥ १ ॥

वता और दरवेशों (फकीरों) के भक्त कहलाने वाले (हिन्दू और यवन) वीरों का समूह जब अपने २ वाहनों पर आरूढ़ हो कर एक दूसरे का सामना करने लगे तब, हे भारमल के वंशज (या पुत्र) तेरी भुजाओं से प्रसन्न होकर देवताओं ने पुष्प वृष्टि की। परन्तु शत्रुओं द्वारा खड्ग वर्षा की जाने लगी ॥ २ ॥

हे रणमल के वंशज (बोदा)! तू राजा (अपने स्वामी) के पक्ष में होकर निर्भयतापूर्वक शत्रुओं से युद्ध करने लगा, उस समय पुष्प और खड्ग वर्षा एक साथ ही करते हुए, तेरी पूजा कर, देवता और दानव (मुगल यौद्धा) वंदना करने लगे ॥ ३ ॥

हे राष्ट्रवर वीर! तू स्वयं दृढ़ एवं युद्ध में अडिग रहने वाले अनेक अन्य यौद्धाओं में भी गुरू है। तूने धरती के लिए अपने आपको मृत्यु के समर्पित कर दिया। तब तक पुष्पवृष्टि करते २ ब्रह्मा के हाथ से भी पुष्प समाप्त हो गये तथा सब ही विपक्षी घायल अवस्था में यह दृश्य देख कर अवाक् रह गये। जिससे उनके हाथों से तलवारें छूट गई ॥ ४ ॥

२२. राठोड़ पृथ्वीराज[१] जेतावत

गीत (छोटा साणोर)

सिव आगे सकति पयंपे साचो, सार चडाविया घणा सत्र ॥
पिंड पांडवे न भरीया पुरा, पीथल ताय पूरीया पत्र ॥१॥

टिप्पणी:—१ यह मंडोवर के राव रणमल के पुत्र अखेराज का प्रपौत्र पंचायण

भारथ कीयो मेड़ते भिड़ते, घट घट वाहे लोह घणौ ॥
अरि जन हूँत रचाथा आधा, ताय पत्र भरीया जैत तणे ॥२॥
खपाया जेण अठारह खोयण, आधा रहीया तेण अवाहि ॥
चौसठ खपर पुरीया चलु अल, हे कणि कमंध तणी ॥३॥
सुरे नरे पत गरीयो समहर, हिन्दू नमो तुहारा हाथ ॥
सलखा हरा तणौ भ्रित समलां, सकति तणो सोह धायो साथ ॥४॥

(रचयिता—अज्ञात)

शक्ति शिवजी से कहती है— कि मैं सत्य कहती हूँ–असंख्य शत्रुओं को तलवारों से नष्ट करके भी पाण्डव मेरे रक्तपात्र पूर्ण नहीं भर सके और पृथ्वीराज ने उन पात्रों को भर दिया ॥१॥

मेड़ता पर चढ़ाई इस राठौड़ वीर ने शत्रुओं से युद्ध किया और अनेकों के शरीरों पर घाव किये। महाभारत में अर्जुन के समय रक्त पात्र अपूर्ण रह गये थे; उसको जैत्रसिंह के पुत्र ने पूर्ण कर दिया ॥२॥

का पौत्र तथा जेता (जैत्रसिंह) का पुत्र था। राव मालदेव के समय वि. सं. १६०१ (ई० सं. १५४४) में समेल के युद्ध में शेरशाह का मुकाबला करते हुए उसके पिता जेता का देहावसान होने पर वह अपने पिता की जागीर का अधिकारी हुआ। राव मालदेव ने उसका वही सम्मान कर अपने विश्वास पात्र सरदारों में उसको स्थान दिया। तदनुसार उसने भी राव मालदेव के प्रति कर्तव्यनिष्ठ हो, कितने ही युद्धों में भाग लिया और वि. सं. १६११ (ई० सं १५५४) में राव जयमल से मेड़ता छीन लेने के लिए राव मालदेव की चढ़ाई हुई, जिसमें वह वीरतापूर्वक युद्ध करता हुआ काम आया। उसके वंशधर बगड़ी के ठाकुर हैं, जो जोधपुर के राजाओं की गद्दीनशीनी के अवसर पर सर्वप्रथम राज्य तिलक करते हैं। रचनाकार ने प्रस्तुत गीत में इस गीत के नायक श्री पृथ्वीराज की वीरता की प्रशंसा करते हुए अच्छा वर्णन किया है; जो अनूठी उपमाओं से युक्त है।

जिस समय अठारह अक्षौहिणी सेना का विनाश हुआ; उस समय भी रक्त पात्र अधूरे रह गये थे किन्तु इस राठौड़ ने शत्रुओं पर वार कर चौंसठ योगनियों के खप्पर लाल रक्त से भर दिये ॥३॥

हे मलखा के पौत्र! तूने उस युद्ध-भूमि में अपनी मृत्यु प्राप्त कर चीलों को मांस से व शक्ति को रक्तपात से तृप्त किया; जिससे सभी देवता और नरेश युद्ध स्थल में तेरे हाथों की ताकत को नमस्कार करने लगे ॥४॥

२३. राठोड़ रत्नसिंह[१] खींमावत

गीत (छोटा साणोर)

खुरसाणी धड़ा सरिस खीमावत, सज तिण रयण चहीनो सार ॥
अण विढ़िया न दियै गढ़ नरंदां, दूदे दीधा धरम दवार ॥१॥

ईसर करन बोलता अवला, वांकम तजे गया दहवाढ़ ॥
रौदां घडा न हारै रतनौ, मिलियो घावां लोह मराट ॥२॥

जग उजली करे जैतारण, सिर सुं दीधी खेम सुजाय ॥
ऊभो मेले दुरँग आंपणो, जैमल तो जिम रयण न जाय ॥३॥

[रचयिताः- अज्ञात]

टिप्पणीः—१ यह राठोड़ खीमा, ऊदावत का पुत्र था; जिसके वंश धर मारवाड़ में रायपुर के ठाकुर हैं। वि० सं० १६१५ (ई० स० १५५८) के लगभग दिल्ली के मुगल बादशाह अकबर की राव मालदेव के समय जैतारण पर चढ़ाई हुई, जिसमें वह वीरता-पूर्वक लड़ता हुआ काम आया। कवि ने उपर्युक्त गीत में रत्नसिंह के पराक्रम का वर्णन किया है।

भावार्थः— हे खेमा के वंशज (या पुत्र)! तूने ही सज कर मुसलमानों के सामने लोहा लेने की इच्छा की और तेरा ऐसा करना ठीक भी था क्यों कि चौपड़ के खेल में जहाँ तक सारी गोटें नहीं मारी जाती, वहां तक वे भी अपने स्थान पर दूसरी को स्थापित नहीं होने देती। अतः हे दूदा के वंशज, तूने धर्म-द्वार से (पराजित होकर जिस द्वार से निकलना पड़ता है, उसे) बँध कर दुर्ग का खास द्वार खोल दिया ॥ १ ॥

हे वीर रत्नसिंह! ईश्वरसिंह और कर्णसिंह जो बड़ी टेढ़ी २ बातें करते थे, वे तो अपने बांके पन को त्याग कर यत्र तत्र हो गये किन्तु तू मुस्लिमों के समक्ष पराजित न हो शस्त्राघात सहता हुआ शत्रु सेना में प्रवेश कर गया ॥ २ ॥

हे खेमसिंह के पुत्र! तूने अपना स्थान संसार में उज्जवल कर दिया और सिर कटने पर ही शत्रुओं का अधिकार हो सका। जहाँ तक वह जीवित खड़ा रहा, वहाँ तक शत्रुओं से लोहा लेता रहा और यही कहता रहा कि दुर्ग मेरा है! हे जयमल के वंशज। तेरे समान युद्ध में मारे जाने वाला वीर अन्य कोई नहीं हो सकता ॥ ३ ॥

२४ रावल मेघराज[१] राठोड़ (मेहवा)

गीत (छोटा-साणोर)

रायां की चाड़ मेघरज रावल,

बोह सत्र भागा दाख बल।

दल वागड़ मेड़तै तणा दल,

दल जाँगल मेवाड़ दल ॥ १ ॥

टिप्पणीः—१ यह मालाणी के राठोड़ रावल मल्लीनाथ (माला) का वंशधर

दलपत चार मेघ दुजड़ा-हथ,
तै जुड़तै भागा तुड़ ताण।
जिसा प्रताप जेवहा जैमल,
राव कलियाण उदैसिंघ राण ॥ २ ॥

हेकण जुध भागा हाफाउत,
घणथट जुड़ देते घण घाव।

और मालाणी का जागीरदार था। जोधपुर नरेश मालदेव ने अपने ज्येष्ठ पुत्र को राज्य के स्वत्व से वंचित कर छोटे पुत्र चन्द्रसेन को मारवाड़ का भावी अधिपति निश्चित् किया। इस पर राज्य-प्राप्ति के लिए वि० सं० १६१६ (ई० स० १५६२) में राव मालदेव की मृत्यु होजाने पर भाई-भाई परस्पर लड़ने लगे। राम, जो मालदेव का ज्येष्ठ पुत्र था, उदयपुर के महाराणा उदयसिंह का जामाता था, इसलिए उक्त महाराणा ने राम का पक्ष लिया और मेड़ता के राव जयमल (वीरमदेवोत), बीकानेर के राव कल्याणमल (जैत्रसिंहोत) तथा वागड़ (बांसवाड़ा) के रावल प्रतापसिंह ने मारवाड़ की गद्दी पर राम ही को बिठलाना चाहा। फलतः राम इन चारों राज्यों की सेना लेकर वि० सं० १६१६ (ई० स० १५६२) में चन्द्रसेन पर चढ़ दौड़ा। तब उसने (चन्द्रसेन) रावल मेघराज को सेना देकर राम के मुकाबले पर भेजा। मुकाबला होने पर राम और उसका साथी सेना-दल भाग गया। जिसका कवि ने प्रस्तुत गीत में वर्णन किया है। ऐतिहासिक दृष्टि से जांच करने पर, यह स्पष्ट हो गया है कि राम, चन्द्रसेन पर सेना लेकर गया था। परन्तु जोधपुर की ख्यातों में उसका राम से युद्ध करने का उल्लेख न होकर उदयसिंह (मोटा राजा चन्द्रसेन का बड़ा भाई) से युद्ध करना बतला उसके हाथ की बर्छी उदयसिंह के शरीर में लगना लिखा है इस गीत को देखते यह भी सम्भव है कि राम और उसके सहायक सेना का रावल मेघराज ने मुकाबला किया हो एवं राम का दल भाग गया हो, क्योंकि इसके बाद राम को बादशाह अकबर के पास जोधपुर की राज्य-प्राप्ति के अर्थ जाना पड़ा था।

सुत जैमाल वीर गुर संभ्रम,
संभ्रम जैत संग्राम सुजाव ॥ ३ ॥

माला हरा महा जुध मचतै,
भूपत चत्र भागा भाराथ।
इतरा तणौ प्रवाड़ै आगै,
हींदू तुरक न आयो हाथ ॥ ४ ॥

[रचयिता-अज्ञात]

भावार्थ:—रावल मेघराज पर बागड़, मेड़ता, जांगल प्रदेश [बीकानेर] और मेवाड़ के नरेश्वरों ने सेना सजाई किन्तु वे सब उसके बल को देख कर युद्ध से भाग गये ॥ १ ॥

प्रतापसिंह, जयमल, कल्याणसिंह और महाराणा उदयसिंह इन चारों ने मेघराज पर आक्रमण किया किन्तु खड्गधारी मेघराज के लड़ने पर वे भाग गये ॥ २ ॥

उस हाफा के पुत्र (या वंशज मेघराज) पर एक ही बार जयमल वीरमदेवोत, जैत्रसिंह का पुत्र और राणा सांगा के पुत्र विशेष सैन्य समूह को लेकर टूट पड़े; किन्तु उसके शस्त्र प्रहार करने पर वे चारों युद्ध से चले गये ॥ ३ ॥

उस माला (मल्लिनाथ) के वंशज द्वारा घमासान युद्ध छेड़ देने पर उपर्युक्त चारों राज्य रण क्षेत्र से लौट गये। इतने राजाओं को एक साथ जीतने की ख्याति जैसी उस (मेघराज) ने प्राप्त की; वैसी किसी अन्य हिन्दू तथा मुस्लिम वीर ने नहीं प्राप्त की ॥ ४ ॥

२५ राठौड़ चांदा[1] मेड़तिया वीरमदेवोत

गीत (छोटा साणोर)

सूरत तै तूझ चंद सूरां गुर,
अति वाखांण वधेऊ गाढ ॥
इळने गयण अन्तरि आधंतरि,
जु तैसु करि काढ़ी जमदाढ ॥ १ ॥

वीरत तूज बदै वीर उत,
असुरां सेन भयंकर आळि ॥
भड़ असमाण हूँत पड़तां धर,
धड़ सणगा करगी धाराळि ॥ २ ॥

चूकै पै ठाम चीत नह चूके,
कमंध अचूक औछबे काळि ॥

टिप्पणी:—१ शाही सेना द्वारा वि० सं० १६२६ (ई० स० १५६३) में मेड़ता छुड़ा लेने पर राव जयमल मेवाड़ में चला गया। संभव है, इसी समय चांदा, राव चन्द्रसेन के पास गया हो। जोधपुर खाली कराने के लिये वि० सं० १६२१ (ई० स० १५६४) से चढ़ाई होनी आरंभ हुई। वि० सं० १६२२ (ई० स० १५६५) में शाही सेना का वहाँ अधिकार कर लेने का ख्यातों में उल्लेख मिलता है। जिसमें मृत्यु प्राप्त वीरों के नामों में चांदा का नाम नहीं है। प्रस्तुत गीत में वीर चाँदा की मुसलमानों के मुकाबले में मृत्यु होने का वर्णन है जो स्पष्ट नहीं है। अस्तु यह नहीं कहा जा सकता कि चांदा की मृत्यु किस वर्ष और कहां पर हुई? सामान्यतः इस गीत से तो उस का युद्ध में मारा जाना प्रकट है, जो किसी मारवाड़ में होने वाले शाही आक्रमणों से ही संबंध रखता हो।

बोम वसुह वप बीच वहंते,
वहती करगि चढी बाढ़ालि ॥ ३ ॥

डूद हरा मेंछ उवर मुहि दुजड़ी,
जीवतणी उजेड़ी जड़ ॥
पहिलौ धरा तास धड़ पड़ियो,
धर पाछे गो आप धड़ ॥ ४ ॥

[रचयिता:-अज्ञात]

भावार्थः—हे वीर चांदा ! । तू अपनी वीरता के कारण शूरवीरों का गुरु माना गया है। तेरे जैसे बड़े साहसी की प्रत्येक व्यक्ति विशेष प्रशंसा करता है। युद्ध-समय में पृथ्वी और आकाश के बीच ऊंचा होकर तूने अपने हाथ से कटार निकाल ली-॥ १ ॥

हे वीरमदेव के पुत्र ! तेरी वीरता अन्य वीरों से बढ़कर है. मुस्लिम सेना के बीच तू भयानक हठी बन गया था।

तेरे द्वारा नष्ट किये हुए शत्रुओं के धड़ ऊपर से नीचे गिरने लगे। उनके शोणित से तेरी कटारी (या-खड्ग) ने अपना शृंगार कर लिया [रक्त रंजित हो गई] ॥ २ ॥

आज सतरह दिन हो गये हैं. मेरा पति युद्ध में अनुरक्त है और किस प्रकार मुझे भूल बैठा है ? वह राष्ट्रवर वीर, स्त्री के पयोधरों से घृणा करता है (उन पर नख क्षत लगाने की इच्छा नहीं करता)। वह नख क्षत तुल्य खड्ग के आघात शत्रुओं के लगाने में ही लीन है ॥ ३ ॥

उस जोधा के वंशज चांदा से आबू दुर्ग की मोक्ष की बात उसकी चतुर पत्नी ने जानी (मेरे प्रियतम के लिये शत्रुओं द्वारा ग्रसित आबू दुर्ग का मोक्ष करना आवश्यक था न कि मेरे प्रेम में उलझना, अतः मेरे

से प्रेम होते हुए भी कर्तव्य पालन करना जरूरी समझा) तो उसने कहा हे प्रियतम ! आपने शत्रु सेना-रूपी कलह-प्रिया को अब वियोगिनी का रूप दे दिया है । अतः अब उससे विहार की इच्छा इतनी नहीं करनी चाहिये ॥ ४ ॥

२६ राठौड़ चांदा मेड़तिया वीरमदेवोत[1]

गीत (छंद)

चोरंग चूरिया वर विढे चांदै,
भीड़े नवली भांति ॥
गोरणी काढ़ै गात्र गोखै,
रड़ै गलंति राति ॥१॥

साजियां वीरमदेव – संभव,
मछर चढ़ि रिणि मीर ॥
कर मोड़ि बीबी त्रोड़ि कंकरण,
नयन नाखे नीर ॥२॥

टिप्पणीः—१. यह मेड़ता के राठौड़ राव वीरमदेव (दूदावत) का छोटा पुत्र था । कालान्तर में यह जोधपुर के राव मालदेव के पुत्र चन्द्रसेन के पास चला गया था । मेवाड़ में बदनोर ठिकाने के ठाकुर गोपालसिंह रचित जयमल वंश प्रकाश में उल्लिखित है, चंन्द्रसेन के बड़े भाई राम को जोधपुर की गद्दी दिलाने के लिए वि० सं० १६२१ (ई० स० १५६४) में शाही सेना की चढ़ाई हुई, उस समय चांदा ने ने अच्छा पराक्रम दिखलाया था । प्रस्तुत गीत में कवि ने यही बात बतलाई है । उसके वंशधर चांदावत मेड़तिया कहलाते हैं और मारवाड़ में कई ठिकाने हैं ।

चांदै लिये भिड़ते,
धड़छि अरि खगधार ॥
साम है सामण तणि सेखां,
हुरम तोड़े हार ॥३॥

मारियां चांदै मीर मांझी,
खेध चढ़ि रण खंति ॥
सारंग नयणी कंठ सारंग,
सुवर संभा रंति ॥४॥

(रचयिता—अज्ञात)

भावार्थ:—चतुरंगिनी सेना बढ़ाता हुआ वीर चांदा नूतन ढंग से लड़ता हुआ बालाओं के पतियों को काटने लगा। अतः वे गौर वर्ण वाली सुन्दरियाँ अर्ध रात्रि में अपने स्वामियों की प्रतीक्षा में ऊँची होकर देखती हुई रुदन करने लगी।

वीरमदेव के पुत्र (चांदा) ने मस्ती में आकर युद्ध में मीरों को मारा। यह ज्ञात होने पर उनकी बीबियाँ हाथ मलती हुई अपने कंकणों को तोड़ने लगी और नैत्रों से आँसू बहाने लगी ॥ २ ॥

वीर चांदा ने लड़कर खड्ग धार द्वारा शेख-शत्रुओं को काटा। इस प्रकार अपने पतियों की मृत्य सुन कर उस दिशा की ओर देखती हुई स्त्रियाँ अपने हार तोड़ने लगी ॥ ३ ॥

चांदा ने मीरों के मुखियाओं को रण क्षेत्र में पीछाकर मार दिया। अतः उनकी मृग नयनी बालाएँ अपने कोकिल कंठों से अपने स्वामियों (वरों) का स्मृति गान करने लगी ॥ ४ ॥

२७. राठौड़ चादा[1] (मेड़तिया) वीरमदेवोत

गीत (छोटा साणोर)

वरि आयौ रयणि वले गो वासरि,
घड़ गुजर सो प्रीति घणी ॥
सखी अम्हा सौ कंत न सांचौ,
तरूणी कहै वीर उत तणी ॥ १ ॥

वासर निसि किलँब घडा सौ विलँबै,
चड़ीयौ इतू वीर रस चीति ॥
चाँदा तणी चवै चंदाननि,
प्रिय सिंगार इसी नह प्रीति ॥ २ ॥

दिवस रयणि सतरे ची दीन्हा,
किसूं अम्हाज रासियो कंति ॥
कहे कांमणी पयोहर प्रति कमधज,
खग नख अरि लायण बहु खंति ॥ ३ ॥

टिप्पणी:—१. मेड़ता के राव वीरमदेव का छोटा पुत्र और जोधपुर के राव चन्द्रसेन का सरदार था। वि० सं० १६२१ (ई० स० १५६४) में जोधपुर पर शाही सेना का आक्रमण हुआ और दुर्ग को सतरह दिन तक घेर रक्खा, उस समय वीर चांदा ने पराक्रम दिखलाया, यह तो इतिहास से प्रकट होता है, परन्तु अर्बुद पर जाकर किसी युद्ध में काम आने का उल्लेख कहीं नहीं मिलता। कवि ने प्रस्तुत गीत में चांदा की पत्नि द्वारा अपने पति की प्रशंसा कराते हुए उसका अर्बुद (आबू) दुर्ग पर काम आने का वर्णन किया है, वह कवि कल्पना ही है, क्योंकि एक दूसरे गीत में उसका मुस्लिम सेना को नाश करते हुए, मारा जाना बतलाया है।

उग्र हतै जोधहरा तैं अरबद,
चतुर नारि चित लाधों चंद ॥
प्रति विरहणि कलहण मन प्रीणे,
विहरौ इतौ न कीजे विंद ॥ ४ ॥

[रचयिताः- अज्ञात]

भावार्थः—चांदा की पत्नी कहती है—हे सखि ! मेरा पति वीरम देव का वंशज (या पुत्र), जिस रात्रि को मुझे वरण करके यहाँ आया था, उसी प्रातःकाल युद्धार्थ चला गया। उसे मेरे प्रेम के बजाय गुर्जर सेना से युद्ध करने की बड़ी लालसा है। अतः उसका मेरे साथ सच्चा प्रेम प्रतीत नहीं होता ॥ १ ॥

चाँदा की चंद्रानन्दि कहती है—कि मेरे प्रियतम का चित्त वीर रस से ओत प्रोत हो जैसा रात दिन मुस्लिम सेना में (युद्धार्थ) अनुरक्त रहता है; वैसा मेरे शृङ्गार की ओर आकर्षित नहीं होता ॥ २ ॥

हे वीर राष्ट्रवर ! तेरे कदम भले ही इधर उधर पड़े हों; किन्तु तेरा चित्त कभी इधर उधर नहीं हुआ है। तेरे अचूक वीरों को देख कर यमराज भी चकित होगया है। तेरी कटारी (या खड्ग) आकाश औ पृथ्वी के बीच विचरण करते हुए शत्रु-अंगों पर प्रहार कर पुनः हाथों में उठती हुई ही दिखाई दी ॥ ३ ॥

हे दूदा के वंशज ! तूने मुस्लिम विपक्षी के वक्षःस्थल में कटार भोंक कर उसकी आत्मा की जड़ उखेड़ दी और प्रथम, शत्रु के शरीर को धराशायी कर बाद में तूं स्वयं भी धराशायी हो गया ॥ ४ ॥

२८ राठौड़ ईश्वरदास[1]

गीत (छोटो साणोर)

काहे बे गढ़ी न चाढ़ै कूंजर,
आखे साहि जलाल अकब्बर ।
भारत भीम भुजाल भयंकर,
ऊभौ खांडि तणे मुहि ईसर ॥१॥

पट हथ उचँड तौ भुज पाणे,
बाहा प्रलंब भेदियो बाणे ।
ईखे साहि नयण आपांणे,
जोधा हरो ब्रकोदर जाणे ॥२॥

अकबर पोतारियां आराणे,
विरउत वल वस रिस केवाणे ।
खोंद गयँद हुँता खुरसाणे,
विथका लसकर पांण बिनाणे ॥३॥

सौ सुरतांण अंगो अंग सारां,
आवट कूटो करे अयारां ।
धूहड़ पिंड चड़नो धारा,
पाछे चढै गज दुरंग पगारां ॥४॥

(रचयिता—अज्ञात)

टिप्पणी: —१. यह जोधपुर के राव जोधा के पुत्रों में से दूदा का पौत्र और मेड़ता के राव वीरमदेव का छोटा पुत्र था। वि.सं.१६२४ (ई.स.१५६७) में बादशाह अकबर

भावार्थः—सम्राट जलालुद्दीन अकबर कहता है कि, अपनी सेना के हाथी, दुर्ग पर किस प्रकार चढ़ सकते हैं ? क्योंकि महाभारत कालीन भीम के समान प्रचण्ड भुज दण्ड वाला ईश्वरदास खड्ग पकड़े हुए सामने खड़ा है ॥ १ ॥

पटा चलाने वाले हाथियों को खण्ड २ करता हुआ अपने आजानुबाहुभुजाओं से बाणों को चलाता हुआ उन्हें बींधने लगा। सम्राट अकबर इस दृश्य को देखकर कह उठा, "कि यह जोधा का वंशज (ईश्वरदास) महाभारत कालीन भीम के समान ही भयंकर दिखाई देता है।" ॥ २ ॥

सम्राट अकबर ने सेना में पुकार की, कि "ईश्वरदास अपने बल से तथा क्रोध के वशीभूत होकर हाथियों को कुचल रहा है तथा सेना के बड़े २ समूहों को अपनी भुजाओं से नष्ट कर रहा है" ॥ ३ ॥

सम्राट ने अन्त में कहा कि "ईश्वरदास ने मेरे सहित अंग रक्षकों में उथल पुथल मचादी है। हमारे हाथी, दुर्ग पर तब ही चढ़ सकते हैं जब कि राठौड़ ईश्वरदास अपनी इच्छा से खड्ग की धार पर चढ़ जाय" ॥ ४ ॥

ने महाराणा उदयसिंह के समय चित्तौड़ पर चढ़ाई की। उस समय इस गीत का नायक ईश्वरदास, अपने बड़े भाई वीरवर जयमल मेड़तिया के सेनापतित्व में महाराणा के पक्ष में राजपूतों के दल में रहकर शाही सेना के मस्त हाथियों के यूथ से युद्ध करता हुआ, वीरगति को प्राप्त हुआ। उसके वंश में मेवाड़ में अंटाली आदि के छोटे ठिकानेदार और मारवाड़ में भी कुछ छोटे ठिकानेदार हैं। कवि ने इस गीत में ईश्वरदास की वीरता का वर्णन किया है, जो इतिहास के अनुरूप है।

२९ राठौड़ ईदा[1] मेड़तिया चाँदा का पुत्र

गीत (बड़ा साणोर)

अड़ राठवड़ सुभड़ गज गाह जीतण इसा,
प्रगट जस नसा कर विरद पावे ॥
रघू रजपूत खग दान सारी रसा,
अवर तो मींढ नर किसा आवे ॥१॥
एकलो भीच जुध वार लाखां अड़े,
थरू खल़ मार जंगां समद थाघ ॥
राण कर विदा चित धार (आहव) रूची,
वार तरवार दूसरो वाघ ॥२॥
भजे गोव्यंद जयचंद दूजो भणां,
भू मयँद छल़ां कर पकड़ भालो ॥
उकँध खल़ तोड जल़ जुने (अजल़) उतन,
चंद सुत खत्री पणराह चालो ॥३॥
नीपणा जाचिया कनक तागो नरम,
दूझल हू गरम दागाल दीदा ॥
वरण अपछर कजां सु त्रिपहरे विरम,
आंख में सरम साबूत ईदा ॥४॥

(रचयिता—अज्ञात)

टिप्पणीः—१ प्रस्तुत गीत से यह मेड़ता के राठौड़ राव वीरमदेव के पुत्र चांदा का बेटा प्रतीत होता है। चित्तौड़ पर बादशाह अकबर की वि. सं. १६२४ (ई.

भावार्थः—हे राष्ट्रवर वीर ! तू हाथियों को कुचल कर विजय करने वाला है और यश रूपी मदिरा का पान कर तू ही विरुद प्राप्त करने वाला है। खड्ग चलाने और दान देने में तेरे समान अन्य कौन हो सकता है ?

हे विकट वीर ! तू अकेला ही लाखों से भिड़ने वाला है और अटल शत्रुओं को मारकर युद्ध-सिंधु की थाह लेने वाला है। युद्ध-समय में महाराणा को विदाकर तू युद्धेच्छा करता हुआ आगे बढ़ा, उस समय तू सिंह स्वरूप होकर खड्गाघात करने लगा ॥२॥

हे चांदा के पुत्र ! तू, गोविन्दचन्द और जयचंद के समान वीर कहा गया है। हाथ में भाला ग्रहण कर तू सिंह के समान दांव देता हुआ उन्नत स्कन्ध धारियों के स्कन्धों को काट कर अपने वंश की प्राचीन कांति को उज्ज्वल बनाये रखता है और क्षात्रत्व के मार्ग पर कदम देता है ॥३॥

याचना करने पर देते हुए भी कोमल स्वर्ण तंतु तुल्य (नम्र) होकर मैंने कुछ भी नहीं दिया—इस प्रकार कहता रहता है ; किन्तु अपनी खड्ग की तप्त ज्वाला द्वारा तू शत्रुओं को दग्ध कर देता है हे वीरम-

सं. १५६७) में महाराणा उदयसिंह के समय चढ़ाई हुई, उस समय यह महाराणा की सेना में रह कर खड्ग प्रहार करता हुआ मारा गया, जिसका उपर्युक्त गीत में कवि ने वर्णन किया है। जोधपुर के इतिहास से ज्ञात होता है कि राव वीरमदेव का पुत्र चांदा, मेडता छूट जाने पर राव मालदेव के पुत्र चंद्रसेन के पास चला गया था और जोधपुर पर वि. सं. १६२१ (ई. सं. १५६४) में शाही सेना का आक्रमण हुआ, तब राव चन्द्रसेन के पक्ष में रहकर मुगल सेना से लडा था। इसके बाद जोधपुर पर मुगलों का अधिकार होगया, जिससे मारवाड के कितने ही राजपूत मेवाड़ में चले आये, जिनमें यह ईदा भी हो सकता है और चित्तौड़ के तीसरे शाके के समय मृत्यु ग्रस्त हुआ हो।

देव के वंशज ! तेरे सुन्दर शरीर को वरण करने के लिए अप्सराएँ देखती रहती हैं । हे वीर ईदा ! तेरी आंखों में कुल की लज्जा बसी हुई है ।४।।

३० राठौड़ हींगोल दास

गीत (बड़ा साणोर)

बड़ों भीछ राणां तणी धरा आड़ों बसे,
राऊ राठोड़ पाखर रवद्र रोल् ।
फोज् अकबर तणी जिती आवे फरे,
गहे तेता सगिस खड़ग हींगोल ।। १ ।।

पाधरै देसि राठोड़ वांकौ पुरुष,
वसै सुरतांण राणा बिचाल् ।
त्रिचित्र लोड़े बसुह वीत वाल्,
बिढ़े ताइ वीत हींगोल वाल् ।। २ ।।

अखाउत आड़ वाहर चड़े आपड़े,
सामिरै काम स-सनेह समराथ ।
छड़े कूंत झड़ा गउत्री छोड़ावै,
भादहर आभरण करै भाराथ ।। ३ ।।

[रचयिता--अज्ञात]

टिप्पणी:--१ इस गीत के नायक हींगोल राठौड़ का समय वि० सं० की सतरहवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध स्थिर होता है, जब कि दिल्ली के सिंहासन पर प्रतापी अकबर आसीन था । जोधपुर-राज्य के इतिहास में इस काल के वीरों में दो स्थान पर

भावार्थः—महाराणा की भूमि की रक्षा के लिये वह प्रचण्ड राष्ट्रवर वीर हिंगोल अर्गला (आड़) के समान रहा। जब सम्राट अकबर की सेना में से कोई भी वीर उस के सामने हाथ में खड्ग पकड़ कर खड़ा होता तो वह वीर, अश्वारोही सेना में कुहराम मचाता हुआ सामना करने वालों को परास्त करता और उन पर विजय प्राप्त कर लेता था ॥ १ ॥

मरूदेश की भूमि तो सीधी है किन्तु वीर हिंगोल बांका है। वह राणा और बादशाह का मध्यस्थ माना जाता रहा है। वह विचित्र प्रकार से पृथ्वी पर उथल-पुथल मचाता हुआ, अपने शरीर के टुकड़े २ होने पर भी मुग़लों द्वारा हरण किये गये गौ-धन को पुनः उन से छीन कर गौशाला में लाकर उपस्थित कर देता है ॥ २ ॥

अक्षयसिंह का पुत्र (अथवा वंशज) महाराणा के कार्य के लिये बड़े स्नेह से अर्गला (आड़) के समान बना हुआ था और गौ हरण होने पर गौ रक्षा के लिये, सामना करने वाले शत्रुओं पर बर्छी चला कर उनसे उनकी (गौओं) रक्षा करता था। वह भादा का वंशज रण भूमि में लगे हुए घावों को ही अपने आभूषण मानता रहा था ॥ ३ ॥

राठौड़ हींगोल का नाम आया है (पृ० ३३४ और ३६०)। वहाँ डॉ० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा ने एक स्थान पर 'हींगोला नेतावत पाता' और दूसरे स्थान पर 'हिंगोला वैरसलोत' लिखा है; इससे यह स्पष्ट होता है कि ये दोनों भिन्न-भिन्न व्यक्ति हैं एवं यह तीसरा ही व्यक्ति है, जो भादा का पुत्र अथवा वंशधर था, तथा मेवाड़ की सीमा पर उसका ठिकाना था। संभव है, बादशाह अकबर की चढ़ाई के समय इस गीत के नायक हींगोल ने क्रियात्मक रूप से भाग लिया हो।

३१ राव रायसिंह चंद्रसेणोत[1]

गीत (छोटा सावझड़ा)

पूरा सादूलां गोपाला,
लूण करण सरिखा लंकाला।
चंद-तणौ रिण बंधे चालां,
राव रहियौ भेलौ रवताला ॥ १ ॥

घण जूझो नीसाण घूरावे,
अरि दल बिढ़ियो सामो आवे।
रायसिंघ जग नाम रहावे,
मांझी न गौ साथ मरावे ॥ २ ॥

रहियो साथ भड़ां रिण सूता,
दाणव जेम वरां जम दूतां।
सलख हरौ साहण रिण सूतां,
राव न मेल गयो रजपूतां ॥ ३ ॥

मुड़े नहीं जिण पीठ मंडोवर,
कूंते चढ़ियो माल कलोधर
सिंघ संपेखे वांकौ समहर,
परगै मेल न गो पाटोधर ॥ ४ ॥

[रचयिता—दल्ला आशिया]

टिप्पणी:— इस गीत के नायक राव रायसिंह का परिचय पूर्व (टिप्पणी में) दिया जा चुका है वि.सं.१६४० (ई.स.१५८३) में सिरोही प्रदेश के दताणी नामक युद्ध क्षेत्र

भावार्थ:—जोधपुर के चंद्रसेन के पुत्र [रायसिंह] ने अपने साथी पूरा [पूरणमल मांडणोत कूंपावत] सादूला, [महेशोत कूंपावत] गोपाल.[राठोड़ किशन दासोत गांगवत]और लूण करण[सुरताणोत राठौड़] जैसे सिंह तुल्य वीरों को साथ में लेकर [सिरोही नरेश सुरताण के साथ] सेना पंक्ति बद्ध की और युद्ध छेड़ा। जिसमें यह मारा गया; किन्तु अपने साथियों को छोड़ कर युद्ध से नहीं हटा ॥ १ ॥

नक्कारे बजवाते हुए उस वीर रायसिंह ने सामना कर शत्रु सेना काट दी। वह वीरों का मुखिया अपना नाम बनाये रखने के लिये बहुत देर तक लड़ता रहा और अन्त में मारा गया; किन्तु वह अपने साथियों को मरवाकर घर नहीं लौटा ॥ २ ॥

अपने साथी यौद्धाओं के मारे जाने पर भी वह सतखा का वंशज [रायसिंह] दानव के समान यम दूतों को काबू में करता हुआ युद्ध-भूमि में डटा रहा। अन्त में वह अपने घोड़े सहित रण शैया पर सो गया; किन्तु अपने राजपूतों को छोड़कर पीछे नहीं मुड़ा ॥ ३ ॥

मालदेव की कला (अंश) धारण करने वाले वीर रायसिंह ने मंडोवर की ओर मुड़ कर शत्रु को अपनी पीठ नहीं बताई सामने बढ़ता हुआ वह भालों की अणियों द्वारा बींधा गया और युद्ध में वह बलवान, सिंह तुल्य दिखाई दिया। मरु प्रदेश के उस मुखिया ने अपने साथियों का साथ नहीं छोड़ा ॥ ४ ॥

में वहाँ के देवड़ा राव सुरताण के मुकाबले में लड़ कर वीर गति प्राप्त करने का कवि ने प्रस्तुत गीत में वर्णन किया है, एवं उसके साथ काम आने वाले राठोड़ों-पूरा, सादू‌ल, गोपाल और लूण करण का भी इसमें उल्लेख है, जो स्थानीय इतिहास के लिये महत्व की बात है। क्योंकि राजाओं के साथ युद्ध में मरने वाले वीरों का वर्णन उनकी प्रशंसा में वर्णित गीतों में कम मिलता है।

३२ राव रायसिंह[१] चन्द्रसेणोत

गीत (छोटा साणोर)

धन धन सुत चंद वाहतां धजवड़, डूबंता अरि मौरे उर हूँत ।।
ऊकसता धसता ओल्हसता, कसता वणे विकसता कूंत ।।१।।

राऊ वणाउ वदै धन राला, मारि मारि कहि करता मार ।।
छोह दुसर वड़ वड़ता छड़ता, पड़चड़ करत सेलड़ा पार ।।२।।

टिप्पणी:—१ जोधपुर के राठौड़ राव मालदेव के छोटे कुंवर चंद्रसेन के पुत्रों में से प्रस्तुत गीत का नायक रायसिंह, पाटवी कुंवर था। मालदेव की मृत्यु हो जाने पर चन्द्रसेन जोधपुर की गद्दी पर बैठा, परन्तु उसके बड़े भाई राम, उदयसिंह (मोटा राजा) और रायमल द्वारा विरोध करने पर वि० सं० १६२१ (ई० स० १५६४) के आस पास जोधपुर पर शाही सेना ने आक्रमण कर राव चन्द्रसेन को वहाँ से हटा दिया। वि० सं० १६२७ (ई० स० १५६०) में सम्राट् अकबर का नागोर में आना हुआ, उस समय चन्द्रसेन भी अपने पुत्र रायसिंह के साथ बादशाह के पास उपस्थित हुआ, परन्तु बादशाह ने उसको जोधपुर का राज्य देना मन्जूर नहीं किया। तब चन्द्रसेन अपने पुत्र रायसिंह को नागोर में बादशाह के पास रख कर भाद्राजूण चलागया।

रायसिंह, आजीवन सम्राट् का भक्त रहा। फिर उसके पिता चन्द्रसेन का वि० सं० १६३७ (ई० स० १५८०) में देहांत होने पर सम्राट् ने सोजत का पर्गना जागीर में प्रदान किया। वि० सं० १६४० (ई० स० १५८३) में महाराणा उदयसिंह के छोटे पुत्र जगमाल को पुनः सिरोही पर अधिकार कराने के हेतु शाही सेना के साथ रवाना किया। दताणी नामक स्थान में राव सुरताण देवड़ा से जगमाल और रायसिंह का मुकाबला हुआ, जिसमें शाही सेना के दल की हार हुई। जगमाल तथा रायसिंह भी काम आये। प्रस्तुत गीत में कवि ने रायसिंह की वीरता की प्रशंसा करते हुए, उसके द्वारा होने वाले भाले के प्रहार का वर्णन किया है।

रिम ऊझेल झेलता रासा, थाट थडंब ठेलता अठेल ॥
धन नर निडर नहसता धसता, सौंसर कहर पहरता सेल ॥३॥
[रचयिता:- माला खड़िया]

भावार्थः— हे चन्द्रसेन के पुत्र ! धन्य है तुझे, जब तू खड्ग का आघात करता है तो शत्रु डर कर तेरे आगे हो जाते (भागने लगते) हैं और उन भागते हुए शत्रुओं पर तेरा भाला उठ कर अंगों में घुस जाता है। अन्त में प्रसन्न होकर तू उसे वापस खींच लेता है ॥ १ ॥

हे राव उपाधिधारी रायसिंह ! धन्य है तेरी सजधज को ! जब उत्साह से तू वार करता हुआ मार मार शब्द उच्चारण करता है, तब शत्रु अपने मन में इर्ष्या करते हुए भागने लगते हैं। उनके अंगों को पार करता हुआ तेरा बरछा चम चमाता है ॥ २ ॥

हे निर्भय वीर रायसिंह, धन्य है तुझे ! कि तेरे द्वारा अडिग आडम्बरधारी शत्रु-समूह धकेले जाते हैं और तेरे वारों को सहन करते हैं। तेरा प्रहार जब, भागते हुए शत्रुओं पर होता है तो वे कराहते एवं सिसकते हुए तेरे बरछे को अपने अंगों में घुसा हुआ पाते हैं।

३३ राठौड़ करमसिंह (कर्मसेन)[१]

गीत (बड़ा साणोर)

घड़ा पाड़ तो भंडा अंबाडिया ढ़ाह तो,
वाह तो बने गज धजा वहतो ॥
कूंतजड़तो घणा आन अखीयात कर,
कमो गोखान लगखान कहतो ॥१॥

टिप्पणी:—१ यह जोधपुर के प्रसिद्ध राव मालदेव का चतुर्थ वंशधर, चन्द्रसेन का पौत्र, और उग्रसेन का पुत्र था। वि० सं० १६४० (ई० स० १५८३)

साह चे कांम बरियाम नव साहसा,
तेण त्रहूँ लोक हुवो तमासो ।।
तोंग पूगा सभे ग्रोंग सावल तणी,
रोद सिरदार लग बीयो रासो ।।२।।

कूजरां हेमरां नरां करतो कचर,
भीच सांसर हूवो घणे भाले ।।
अगर रो धमजगर पडंतो ऊपरा,
चमर ढुलंता तियां गयो चाले ।।३।।

खांन बहलोल चैंसीस बाहे खड़ग,
नेस धर दिखणि पूरब धरा नाम ।।
कर्मो तिसड़ो परब जोगी हूँतो कमंध,
कर्मो तिसड़े परब आवियो काम ।।४।।

(रचयिताः—अज्ञात)

भावार्थः—सेना को नष्ट करता हुआ, शत्रु के हाथियों को भ[illegible]ता हुआ और पताकाओं को तोड़कर फेंकता हुआ, विपत्तियों पर भाला चलाता हुआ, अपनी आन को अक्षुण्ण रखता हुआ वीर करमसिंह,

में राव चन्द्रसेन का दताणी के युद्ध में देहांत होने पर बादशाह अकबर ने उसको राव रायसिंह का उत्तराधिकारी स्वीकार किया और सोजत जागीर में देकर मंसबदार बनाया। प्रस्तुत गीत में कर्मसेन को शाही सेना में रहते हुए, युद्धावसर पर वीरता प्रदर्शित करने तथा दक्षिण में बहलोल खां नामक पठान शत्रु को मार कर स्वयं भी काम आने का वर्णन है, जो ऐतिहासिक मित्ति के आधार पर है। उस (कर्मसेन) के वंशधर भिणाय (अजमेर जिला) वाले हैं।

खान कहां है ? खान कहां है ? कहता हुआ असांने मार कर झरोखे तक जा पहुँचा ॥१॥

उस दूसरे ही रायसिंह तुल्य राष्ट्रवर वीर के कंधों पर जिस समय शाह का कार्यभार आया; उस समय उसके द्वारा तीनों लोकों में आश्चर्य-जनक तमाशा होगया। वह सजकर, उत्तुंग झरोखे तक जा पहुँचा और मुसलमानों के मुखिया पर अपने भाले का प्रहार कर उसके अंग में बड़े २ छिद्र कर दिये ॥२॥

उस उग्रसिंह के पुत्र (या वंशज) ने घमासान युद्ध प्रारम्भ कर हाथी, घोड़े और सैनिकों को कुचल दिया। अपने भाले द्वारा भयानक शत्रु को ऊर्ध्व निश्वास डलाता हुआ स्वयं चम्मर दुलवाता हुआ इस लोक से विदा होगया ॥३॥

करमसिंह ने बहलोल खां के मस्तक पर खड्गाघात कर उस शत्रु के नाम की प्रसिद्धी जो दक्षिण और पूर्व देशों में थी; उसे नष्ट करदी एवं जिस पर्व दिवस पर उसने प्रसिद्धी प्राप्त की, उसी पर्व दिवस को वह युद्ध में मारा गया ॥४॥

३४ राठौड़ करमसेन[1]

गीत (छोटा साणोर)

लाधा मनि तिके काढिया लोहे, धोखिया तियां करै नित धौड़ ।
कबिलौ नवा पुरांणा केवा, करमौ न बीसा रै कुल मौड़ ॥१॥
अगर सुजाउ राउ आपांणा, औरिस पौरिस प्रांणि अधर ।
अण धिखियल तके उरि यांणै, धोखिया तके मोखिया धार ॥२॥

टिप्पणी:—१ इस गीत का नायक कर्मसेन राव चन्द्रसेन के पुत्र उग्रसेन का बेटा था। अपने पिता के बड़े भाई राव रायसिंह की मृत्यु होने पर वह सोजत की जागीर

ओगिम लगै खत्रि वट आंमय, राउ राठौड़ तणौ बल रूक ।
अण चाढ़ियल वैरे चाढ़े उरि, चाडिया तियां न पाडै चूक ॥३॥
जोड़ कमाल राउ जोधपुरै, जेत जूवार वडा छल जाग ।
कीधै खेध कीया रद केवी, समंद्रा कड़े कियौ सो भाग ॥४॥

[रचयिता—कल्याणदास महडू]

भावार्थः—हे कुल शिरोमणि करमसेन ! जो तुझ से अपने मन में शत्रुता रखते है; उन्हें तूने केवल शस्त्र के आंतक से ही निकाल दिया किन्तु जिन्होंने तेरा सामना किया, उनसे तू सदा युद्ध ठानता रहता है। जिस प्रकार वराह नये और पुराने शत्रुओं में भेद नहीं रखता; उसी प्रकार तू भी अपने शत्रुओं का नहीं भूलता ॥ १ ॥

हे अगरसिंह (उग्रसेन) के पुत्र ! तेरी आत्मा में बल, क्रोध और पुरुषार्थ अपार है। तुझ से जो शत्रु सामना नहीं करता, उसे तू हृदय से नहीं भूलता किन्तु जो सामना करता है उसे तू खड्ग धार द्वारा मोक्ष प्राप्ति करा देता है। ॥ २ ॥

हे, राष्ट्रवर राजा ! तेरी—तलवार के बल पर क्षात्रत्व को अपनाना अद्भुतसा लगता है। क्यों कि जो तेरे ऊपर चढ़ कर नहीं आते, ऐसे शत्रुओं को तू हृदय में रखता है किन्तु जो सामना करता है; उस पर तू आघात करता है ॥ ३ ॥

हे कर्मसेन ! जौधपुरेश्वर और तुम दोनों की जोड़ी सराहनीय है। तू विजयार्थ एवं सहायतार्थ हमेशा स्वामी के आगे सिर नवां कर युद्ध स्वीकृत करता रहता है। तूने खदेड़ कर शत्रुओं को बेकार कर अपना यश समुद्रों के उस पारतक पहुँचा दिया ॥ ४ ॥

पाकर शाही मन्सबदार बना और कई युद्धों में उसने भाग लिया। प्रस्तुत गीत में उसकी वीरता का वर्णन है।

३५ राठौड़ कल्याण दास

गीत (छोटा साणोर)

चहुवाण पछो चाढ़े रिण चाचर,
मृत जो तू न दियत मन मोट।
सलखां तणो किसूं सराहत,
किरतब कला अणखलो कोट ॥१॥

माल लियो तद राण न मुवो,
मेछां ग्रहण पतो न मूवो।
रायमलोत मरण राठोड़ां,
हाणि टले वाखांण हुवो ॥२॥

सातल सोम पछो समियांणे,
कमधे दीधन कलह कर।
इवड़ा नीय कुल तणो ओलूंभो,
माल हरे टालियो मर ॥३॥

खाधा चोर तणो खेड़ेचा,
माथे रहत घणा दिन मोस।
मुरधर मँडण तूझ तणै म्रित,
देता दुरँग स टलियो दोस ॥४॥

[रच यता:-अज्ञात]

टिप्पणी:—१ यह जोधपुर के महाराजा मालदेव का पौत्र और रायमल का

भावार्थः—चहुवानों के सम्मुख यदि तू अपना मस्तक नहीं उठाता है और उदार मन से अपने को मृत्यु के समर्पित नहीं करता है तो हे सलखा के पुत्र (अथवा वंशज) कल्याणदास, तेरी, तेरे कर्तव्य पालन की तथा तेरे दुर्भेद्य दुर्ग की किस प्रकार प्रशंसा हो ? ॥ १ ॥

इस समियाणे के दुर्ग को राणा उपाधि से विभूषित परमारों से जोधपुर के मालदेव ने छीना; तब वह नहीं मारा गया था। इसी प्रकार इसे मुसलमानों ने हस्तगत किया तब पत्ता भी नहीं मारा गया था। किन्तु हे रायमल के वंशज राष्ट्रवर ! साथियों सहित तेरे मारे जाने से इस का पूर्व कलंक दूर हो गया और इस प्रकार तेरे कुल की प्रशंसा हुई ॥ २ ॥

सातल और सोमा जैसे राष्ट्रवर वीरों ने इस समियाणे दुर्ग के लिये युद्ध कभी भी नहीं किया और अन्य को ही समर्पित किया। इस प्रकार की व्यंग्योक्ति तेरे कुल पर जो पहले कही जाती थी; उसको हे मालवदेव के वंशज, तूने इस दुर्ग के लिये प्राण देकर मिटा दी ॥ ३ ॥

का पुत्र था। इस का राज्य-शासन सिवाणे पर था। एक बार कल्याणदास ने आपस की लड़ाई में बादशाह के एक छोटे मनसबदार को मार डाला, जिससे बादशाह उस पर नाराज हो गया और जोधपुर के महाराजा उदयसिंह को उसे मारने का आदेश दिया। जिस पर उदयसिंह ने अपने पुत्र भोपत और जैतसिंह को लिखा। जिसने वहाँ से राठोड़ आसकरण, देवीदास, राठौड़ किशोरदास, राठौड़ नरहरिदास मानसिंहोत, राठौड़ वैरीसाल पृथ्वीराजोत, देवड़ा भोजराज जीवावत आदि सिवाणे पर चढ़ कर आये और कल्याणदास से युद्ध किया। राठौड़ सेना के कितने ही योद्धा मारे गये। अन्त में बादशाह ने फिर महाराजा उदयसिंह को आदेश दिया। उदयसिंह वहाँ से रवाना होकर जोधपुर आया और सिवाणे आकर एक नाई से मिलकर वि० सं० १६४५ के माघ वि० १० (ई० सं० १५८९ ता० २ जनवरी) को गढ़ में प्रवेश किया, फिर कल्ला ने कुछ देरतक तो उसका सामना किया, पर अंत में वह मारा गया। उक्त गीत में इसी युद्ध-घटना का कवि ने वर्णन किया है। इस कल्ला के वंशज मारवाड़ के लाडणू आदि ठिकाणे में है।

ऐसा कहा जाता था कि इस दुर्ग पर खेड़ेचों (राष्ट्रवरों) का अधिकार एक प्रकार से डाकुओं के रूप में ही रहा है। यह व्यंग्योक्ति बहुत दिनों तक विवश होकर सहन करनी पड़ती रही थी। हे मरूभूमि के मंडन (शोभा-भूषण) स्वरूपी वीर, तुम्हारे युद्ध में वीर गति प्राप्त करने से इस दुर्ग-संबंधी व्यंग्योक्ति का परम्परागत कलंक भी मिट गया ॥ ४ ॥

३६ राठौड़ कल्याणदास (कल्ला) रायमलोत

गीत (छोटा साणोर)

समीयांण कल्यांण तणौं म्रिति सीधौ,
　　आगे भीड़िया असत अग्यान।
आजस आभड़ छोति ऊतरी,
　　श्रोण गँगोदक हुवौ सनान ॥ १ ॥

सिर नाहियौ गंग जल श्रोणी,
　　सिर सीधो कल्यांण सकाज।
असते पहे अगै आभड़ियौ,
　　अनड़ प्रवी हुऔ सुजि आज ॥ २ ॥

माल तणा गढ़ सीसि मरंतै,
　　मंजाने गलिया महा मल।
लाखां वटे तुहारौ लोही,
　　जाणे लाधियो गंग जल ॥ ३ ॥

प्राण प्रवित श्रोण पाणौजे,
　　पहिलूणो कलियांण सपोति।

मोटा अनड़ तणै सिरि मरतै,
छाड़ा हरै उतारी छोति ।। ४ ।।

[रचयिताः- दूदा आशिया]

भावार्थः— समियाणा दुर्ग पर पहले हुए युद्धों में अज्ञानता वश असत्य की कालिमा लग गई थी, किन्तु इसी दुर्ग पर हे कल्याणसिंह, तूने अपनी मृत्यु का साधन किया। जिससे तेरा यश रूपी स्रोता जो गंगोदक तुल्य था, उस दुर्ग ने स्नान कर पवित्रता प्राप्त की ।। १ ।।

पहले के शासक इसको लेकर असत्य रूप में भिड़े थे; किन्तु अच्छे कार्य के लिये हे कल्याणसिंह ! तूने युद्ध में अपना मस्तक दिया; जिससे तेरे गंगाजल रूपी शोणित से इस दुर्ग के शिखर का प्रक्षालन हुआ और इसी कारण यह दुर्ग ऐसे पर्व से पवित्र होगया ।। २ ।।

हे मालदेव के वंशज कल्याण सिंह, तेरा रक्त लाखों ही पुरुषों में बट गया। तेरी मृत्यु इस दुर्ग पर हुई है और गंगाजल रूपी तेरे शोणित को इसने प्राप्त किया है, जिसमें स्नान करने से इस दुर्ग के सारे मेल (कलंक) नष्ट हो गये हैं ।। ३ ।।

हे छाडा के वंशज (या पौत्र) ! तूने अपनी पवित्र आत्मा के शोणित को इस महान दुर्ग पर पोत कर (छिड़क कर) मृत्यु को प्राप्त किया और इस पर लगी हुई पहले की कालिमा मिटादी ।। ४ ।।

३७. राठौड़ कल्ला

गीत (छोटा साणोर)

ऊभो एक अनड़ माहां भड़ आडो,
वीरत गुर खित्र वाट वहै ।

पड़िया मूझ पछे पालटसी,
कोट म कर उर कलो कहै ॥१॥

रायमलोत कहे रढ़रामण,
मिलोजिके घण घाय मिलो ।
भुज साजे ताय कोट न मिलसी,
भुज भाजे तिंह कोट मिलो ॥२॥

राव रठोड़ मोहोर राठोड़ां,
रिणवट बांध भलो रहियो ।
सिर साटे देवा सवीयाणो,
कले परत पहलां कहियो ॥३॥

घट वेडहाड़ आपरो घाये,
घाये सेन घणो घटियो ।
पहलौ कलो वढे रिण पड़ियो,
पछे अण खलो पलटियो ॥४॥

[रचयिताः— दूदा आशिया]

भावार्थः— नहीं नमने वाला वीर कल्ला (राठौड़) जो क्षत्रियत्व और वीरत्व के रास्ते पर चलने वाला था, वह दुर्ग रक्षा के लिये अर्गला स्वरूप हो कर अड़ गया और दुर्ग को सम्बोधन कर कहने लगा हे दुर्ग, तू मत डर, मेरे धराशायी होने पर ही तू मेरे अधिकार में नहीं रह सकेगा ॥ १ ॥

रावण के समान ही हठीला वीर रायमल का पुत्र (कल्ला राठौड़) कहने लगा– हे वीरों! मेरा साथ देना है तो गहरे घाव सहते हुए शत्रुओं से भिड़ जाओ। मेरी भुजायें जब तक अखंडित हैं तब तक दुर्ग

पर शत्रु प्रवेश नहीं कर सकते; जब मेरी भुजाएँ खंड २ हो जा येंगी, तभी इस दुर्ग में शत्रु प्रवेश कर सकेंगे ।। २ ।।

वह राष्ट्रवर वीरों का अग्रणी वीर कल्ला यह कहकर युद्ध मार्ग की नाका बन्दी भली प्रकार कर खड़ा हो गया। उस वीर ने धराशायी होने के पूर्व ही प्रतिज्ञा करली कि समियाणा दुर्ग मेरे मस्तक कटने पर ही शत्रु प्राप्त कर सकेंगे ।। ३ ।।

वीर कल्ला ने अपने शस्त्राघातों से शत्रुओं की सेना में बहुत कमी कर दी, उसके बाद उसने अपने शरीर को भी बहुत घावों द्वारा विनष्ट करवा दिया। वह वीर पहले धराशायी हुआ। उसके पश्चात् ही समियाणा दुर्ग जो पहले कभी अन्य के अधिकार में नहीं गया था, वह शत्रुओं के अधिकार में चला गया ।। ४ ।।

३८. राठौड़ कल्याणदास[1] (मेड़तिया) जयमलोत

गीत (छोटा साणोर)

आहणियै रूक निबी बरै ऊभौ,
अणिये त्रे लागे अपल ।
कलै मुगल करलेह कटारी,
मारियो मुगल कटार मल ।।१।।

टिप्पणी:—१. यह मेड़ता के जयमल का सातवां पुत्र था और उसने शाही सेना के प्रसिद्ध किसी बड़े अधिकारी से युद्ध कर उसे कटारी से मार गिराया था। उसके वंशज कल्याणदासोत कहलाते हैं। मारवाड़ में खोड़, फालणा (बोरूंदा) और बरकाणा, आदि ठिकाने हैं। मेवाड़ में भी इनके वंशजों कि बरड़ोद, आगूचा आदि गावों में भोम हैं।

हणियै खसमि महल बिचि हुवतो,
खमै धाड़ आगा में स खोध ।
जवन कन्हा वसि करै जड़ाली,
जैमल तणौ साधियौ जौध ॥२॥

बिहँडै मीर वदै विष वयणे,
वलि वलि भड़ां हणौ विकराल ।
बलवत कमध आछटे बिजड़ी,
बिजड़ी तिणि धड़ छियो बंगाल ॥३॥

[रचयिता--अज्ञात]

भावार्थः—नबी से बरदान प्राप्त किया हुए कटारमल उपाधिधारी (या नाम वाला) मुगल, तलवार का वार करने के लिये खड़ा हुआ किन्तु उसकी खड्गधार कल्याण के शरीर को स्पर्श नहीं कर सकी उसके पूर्व ही वीर कल्याण ने उसी मुगल की कटारी छीन कर उसे मार दिया ॥१॥

जयमल के उस वीर पुत्र ने, मुगलों का स्वामी जो कि महल के अन्दर था, उसे मारकर उसके सैनिकों से झगड़ता और उनके वार सहता हुआ एक यवन की कटारी छीन कर उसी कटारी से उसी पर वार किया ॥ २ ॥

मीर के कटु वाक्य कहने पर उसने उसे मार गिराया तथा भयंकर बलवान यौद्धाओं को भी नष्ट कर दिया । उस बलवान राष्ट्रवर ने जिस बंगीय यवन यौद्धा की कटारी थी, उसी की कटारो से उसी को रखने वाले का शरीर विदीर्ण कर दिया ॥ ३ ॥

३६ राठौड़ कचरा-कूंपावत [1]

गीत (छोटा साणोर)

पाणीजन पतसाह जान पतसाही ।
चहुँवै दिस ढुलतां चँवर ॥
गावे अछर वेद धुनी गह मह ।
कचरो परणीजे कँवर ॥ १ ॥
पेखण कलह कमंध परणावण ।
लखिया रुद्र नारद लगन ॥
जोगण पुरा मांड ही जानी ।
जोगण पुरा रचियो जगन ॥ २ ॥
तीर, अखत ढ़ाला गज तोरण ।
चहुँ दिस कलस मंगलाचार ॥
चौंरी बड़ी पेखियो चिगथे ।
करण कलोधर राज कँवार ॥ ३ ॥
पौढियो पिलंग चाव सत्र पाथर ।
रहे महल बिच घणौ रस ॥
तोनू दिये हिदवै तुरकै ।
जसवरा डायजे जस ॥ ४ ॥

[रचयिता:- आढ़ा दुरसाजी]

टिप्पणी:—१. प्रस्तुत गीत में कचरा नामक राठौड़ वीर का शाही सेना द्वारा मारे जाने का वर्णन है, जो राजस्थान के प्रसिद्ध चारण कवि आढा दुरसाजी की रचना बतलाई है। इसकी सम्पुष्टि अन्यत्र नहीं होती कि यह घटना कब हुई ?

भावार्थः— विवाह कराने वाला बादशाह ही था और बादशाह की सेना ही बारात बनी हुई थी। चारों ओर चँवर चलाये (हिलाये) जा रहे थे। अप्सराओं के गीत ही उच्च ध्वनि वाला वेद मन्त्रों का उच्चारण था। ऐसी हलचल के साथ कुमार कचरा पाणि ग्रहण करने लगा [युद्ध करने लगा] ॥ १ ॥

उस कमधज [राठौड़] वीर का युद्ध-रूपी विवाह देखने की अभिलाषा से शिव और नारद ने लग्न लिखे। दिल्लीश्वर और उस की सेना के सैनिक ही वहाँ पर वधु पक्ष और वर पक्ष के व्यक्ति थे तथा वे ही इस विवाहरु-पी महायज्ञ के रचयिता थे ॥ २ ॥

वहाँ अक्षत रूप में तीरों की बोछार होरही थी। हाथियों पर वीरों की लटकती हुई ढालें ही तोरण बनी थी। अप्सराओं द्वारा चारों ओर से कलश वंदन तथा मंगल–गान हो रहा था। ऐसे युद्ध–भूमि रूपी मण्डप में मुगल वीरों ने करणसिंह की कला धारण करने वाले उस राजकुमार को वर के रूप में देखा ॥ ३ ॥

शत्रुओं को बड़े साहस से धरती पर पाट देना ही, पलंग बिछाने के समान था। इस प्रकार युद्धःस्थल रूपी महल में विशेष रस (वीर रस) का उपभोग करता हुआ वह सो गया। कवि कहता है– हे वीर ! तुझे यशधारी हिन्दू और यवन वीरों ने दहेज में अपना यश अर्पण कर दिया ॥ ४ ॥

४० राव जयमल मेड़तिया और रामदास, मुकुन्ददास का संयुक्त वर्णन

रहियौ जैमाल उदेसिंघ राखे।
रामे पातल रहियौ ॥

टिप्पणीः—१ मेड़ता के राव वीरमदेव राठौड़ के ज्येष्ठ पुत्र राव जयमल

मुकन तणे साटे मेवाड़ौ ।
अमर वालै ऊग्रहियो ॥ १ ॥

हेट-हेट हेवे पति हूँता ।
पह रछपाल पहाड़ां ॥
रचता समर मारुवा राव ।
ओडण हुआ अहाड़ां ॥ २ ॥

वडा जेही जुधवार विढंतां ।
वडा पिसण घाय वहिया ॥
मचतां समर सरण मेड़तियां ।
राण सदा लग रहिया ॥ ३ ॥

सांगो ऊदो पतो राखे सुज ।
राखे अमरो राणो ॥

मेड़तिया ने वि० सं० १६२४ (ई० स० १५६७) में महाराणा उदयसिंह के समय बादशाह अकबर की चित्तोड़ चढ़ाई के समय उक्त दुर्ग की रक्षा करते हुए प्राणों का विसर्जन किया। उसके पुत्र रामदास ने महाराणा प्रतापसिंह के समय बादशाह अकबर के सेनापति कुंवर मानसिंह कछवाहा के साथ आई हुई शाही सेना से प्रसिद्ध हल्दीघाटी के क्षेत्र में युद्ध कर प्राणोत्सर्ग किया और उसका बड़ा भाई मुकुन्ददास महाराणा अमरसिंह (प्रथम) के समय बादशाह जहाँगीर के वख्त अबदुल्लाखां के साथ आई हुई शाही सेना से वि० सं० १६६६ (ई० स० १६०९) में राणपुर में लड़ कर स्वर्ग सिधारा। प्रस्तुत गीत में कवि ने इन तीनों व्यक्तियों का मेवाड़ की रक्षा के लिए काम आने का स्वाभाविक वर्णन किया है।

जैमल पिता बंधव रामा जिम।
मुकनो चंद मंडाणो ॥ ४ ॥

[रचयिता–अज्ञात]

भावार्थः— महारा ा उदयसिंह ने जयमल को रक्खा और जयमल ने उदयसिंह को रख लिया। रामदास ने प्रताप की रक्षा की और मुकुन्ददास राठौड़ ने राणा अमरसिंह को सहाय ा दी ॥ १ ॥

इस प्रकार वीर राठौड़ मेवाड़-स्वामियों की इन पर्वत मालाओं में रक्षा हेतु बने रहे और जिस समय भी सिशोदियों के साथ युद्ध हुआ, उस समय महाराणाओं के लिये ढाल-स्वरूप बने रहे और सहायता पहुँचाते रहे ॥ २ ॥

बड़े २ युद्धों में शत्रुओं को जख्मी करते हुए, स्वयं घावों से रक्त रंजित हुए और भीषण युद्धों में ये महाराणाओं के आश्रित बने रहे ॥३॥

इस प्रकार महाराणा सांगा, उदयसिंह, प्रतापसिंह और अमरसिंह तक क्रमशः जयमल, रामदास और मुकुन्ददास आदि चन्द्रमा के तुल्य देदिप्यमान होगये ॥४॥

४१ राठौड़ नरसिंह दास[१] कल्याणदासोत

गीत (बड़ा साणोर)

अगम ताड़ियां जड़ छर सार ऊपाड़िया,
अनि नरां सुरा हूँ बधे एही।
फाबियौ फाड़ि घड़ थंभ भड़ फाड़तो,
जोध नरसींह नर सींघ जेही ॥१॥

टिप्पणीः—१ इस गीत का नायक नरसिंहदास, राव मालदेव के पुत्र रायमल

वाहंतो सार छर कमर सिस विछुड़े,
वाहि खंजर डसण पंजर वीधै।
कलाउत दुदउत पहलाद रख पाल़कौ,
कोपियौ ओपियौ रूप कीधै ॥२॥

मछर करि दाखवै कलोधर राइमल़,
मुड़ै दणियर अधर अछर हर मोहि।
सींधलै भुजा बलि खला दल़ साभतै,
साम छल़ काम छल़ नाम छल़ सोहि ॥३॥

दैव गति खत्री भाति वीर गुर दूसरौ,
दुड़िय हरिणाख दुयण अदख दाखे।
राठवड़ निबण बैकुंठि बसियौ रहण,
राम जिम नाम प्रहलाद राखे ॥४॥

(रचयिता—अज्ञात)

भावार्थः— अन्य शूर वीरों से आगे बढ़कर अपने छुरे को उठा गर्जता हुआ स्तम्भ रुपी सेना और प्रमुख यौद्धाओं को विदीर्ण करता हुआ वीर नरसिंह, नृसिंहावतार के तुल्य युद्ध भूमि में सुशोभित हुआ ॥ १ ॥

के बेटे कल्याणदास (कल्ला) का पुत्र था, जिसने दूदाउत (मेड़तिया) शाखा के राठोड़ प्रहलाद की रक्षा की। जोधपुर राज्य की ख्यात से पाया जाता है कि वि०सं० १६७० (ई० स० १६१३) तक यह नरसिंघदास विद्यमान था और महाराजा सूरसिंह के प्रधान गोविंददास भाटी के भाई सुरताण को मारने में सम्मिलित था। प्रस्तुत गीत में कवि ने नरसिंघदास की वीरता की प्रशंसा करते हुए नृसिंह की उपमा देकर उसकी प्रशंसा की है।

नृसिंह के दाँतों तुल्य अपनी कटि से छुरा और खंजर निकाल कर चलते हुए उस कल्याणदास राठौड़ के पुत्र (या वंशज) ने प्रहल्लाद स्वरूपी दूदा के वंशज की रक्षा कर ली। उस समय उसका स्वरूप क्रुद्ध नृसिंह के समान शोभा पाने लगा ॥ २ ॥

उसकी मस्ती को देखते हुए उसे वास्तव में रायमल की कला [कांति, अंश] को धारण करने वाला कहा गया। उसके युद्ध को देखने के लिये सूर्य ने अपने रथ को आकाश-मार्ग में रोक लिया और अप्सरायें तथा शिव उस वीर पर मोहित हो गये। उस सिंह स्वरूपी वीर ने ईश्वर [नृसिंह] के समान ही रक्षा कर कर्तव्य का पालन किया और अपने नाम को उज्ज्वल कर लिया ॥ ३ ॥

वह द्वितीय वीरम देव तुल्य राष्ट्रवर वीर नृसिंह क्षत्रियत्व के कारण वास्तव में देव [नृसिंह] के समान था। हिरण्यकश्यप रूपी शत्रु को नष्ट कर वह अदृश्य हो गया। राम नाम के समान ही प्रह्लाद स्वरूपी दूदा के वंशज की उसने रक्षा की तथा मर कर निर्वाण पद प्राप्त किया ॥ ४ ॥

४२ महाराजा गजसिंह[१] (जोधपुर)

गीत (बड़ा साणोर)

खवां खेसतो खांन असही कमल खूंदतो,
रूक छिबतो निहँग दईव रायो।
साह दल भांज गजसींग नव सांहसो,
ओ वले साह दरबार आयो ॥१॥

टिप्पणी:—१ इस गीत का नायक जोधपुर का महाराजा गजसिंह, इतिहास प्रसिद्ध व्यक्ति है, जिसका राज्य-काल वि० सं० १६७६ (ई० स० १६१६) से

कमँध देतो चलुख भड़ां क्यांही कमल,
कहर भर खूदतो भड़ां क्यांही।
मारुवी राव खुरसांण गांजे मछर,
मालियो वलै खुरसाण माँही ॥२॥

सूर रो दिली दरगाह असहां सिरै,
हिये चढ़ प्रवाड़ा लियण हिलियौ।
मूहाँ सेधां तणा मार हिंदु मुगल,
मछर सेधां मुहाँ आण मिलियो ॥३॥

दिली वै कहर पतसाह रा गांजदल,
सोहियो दलां विच वीच साजा।
सदा जोरावरां तणां नव सांहसा,
राह सिर ऊपरै हुआै राजा ॥४॥

(रचयिता:—अज्ञात)

भावार्थः— राष्ट्रवर नरेश गजसिंह बादशाह के विरोधियों के कंधे से कंधा भिड़ाता, घोड़े के सूमों (खुरों) से सैनिकों के मस्तकों को कुच-

---

वि० सं० १६९५ (ई० स० १६३८) निश्चित है। उसका वि० सं० १६५२ (ई० स० १५९५) में जन्म हुआ था। बादशाह शाहजहाँ के समय ई०स० १६३८ के प्रारम्भ (वि० सं० १६९४ के अंत) में शाहजादा सुजा के साथ शाही सेना कंधार को रवाना हुई, तब महाराजा गजसिंह भी उस सेना में विद्यमान था। प्रस्तुत गीत में इसी बात का वर्णन है। महाराजा गजसिंह ने बादशाह जहांगीर और शाहजहां के समय मुगल दरबार में रहकर कितने ही युद्धों में भाग लिया था।

लता और बादशाह विरोधी दल को नष्ट करता हुआ विजय प्राप्त कर बादशाह की सभा में उपस्थित हुआ ॥१॥

वह विघ्न स्वरूपी मरुदेशीय कमधज नरेश शाह के कितने ही विरोधी यवनों के सिर पर पैर देता हुआ, कितनों ही को कुचलता हुआ और कितनों ही की मस्ती उतारता हुआ विजय प्राप्त कर पुनः बादशाह के समक्ष लौटकर मचलने लगा ॥२॥

वह सूरसिंह का पुत्र बादशाह की सभा के यवन यौद्धाओं में श्रेष्ठ माना जाने वाला था। उसने सब के हृदय में स्थान पाकर ख्याति प्राप्त करने को यवन यौद्धाओं के समक्ष ही शाह के विरोधी हिन्दू और यवन यौद्धाओं का संहार कर पुनः मस्त यवनों में आ सम्मिलित हुआ ॥३॥

दिल्लीश्वर के विरुद्ध रह कर विघ्न उपस्थित करने वाली शाही सेना को नष्ट कर वह राष्ट्रवर नरेश शाही सेना में जा सुशोभित हुआ। इसीलिए कहते हैं कि मरुदेशीय नरेश्वर सर्वदा शक्तिशाली और श्रेष्ठ पद पर कदम बढ़ाने वाले होते रहे हैं॥४॥

४३ राठौड़ राव अमरसिंह [1]

गीत (छोटा साणोर)

मुगलां राव तणो जवाब मरोड़े,
घर घातियां निवाबां घाव।
चालियो काल़ जड़ाल़ चुअंती,
रूपा तणो कटहड़े राव ॥ १ ॥

टिप्पणी:—१ राव अमरसिंह, जोधपुर के महाराज गजसिंह का ज्येष्ठ कुंवर था। वि० सं० १६७० (ई० स० १६१३) में उसका जन्म हुआ। वह बड़ा

अड़िया सुजि पड़िया मुंह ऊँधे,
सहज कोय देखे असुर सुर।
आखतो वेह कोय नह आयो,
अमरा जमराव तणे उर ॥ २ ॥

होनहार, वीर और राठौड़ों के अनुरूप स्वाभिमानी था। महाराजा गजसिंह ने उसको जोधपुर के राज्याधिकार से वंचित कर दिया. तब वह ई० स० १६३४ में सम्राट् शाहजहाँ के पास लाहोर पहुंचा और उसे शाही दर्बार से मन्सब तथा पृथक् जागीर मिली। चवदह वर्ष की अवस्था से ही उसको युद्ध-कार्यों में भाग लेने का अवसर मिल गया था। ई. स. १६२६ में खानजहां के साथ वह जुझारसिंह बुंदेले का दमन करने गया। तदनन्तर ई स. १६३७-३८ में वह शाहजादे सूजा के साथ काबुल गया और वहां से वह राजा बासू पर भेजा गया। ई. स. १६३८ में महाराजा गजसिंह का परलोकवास होने पर उसको नागोर की जागीर और राव की उपाधि मिली तथा मनसब में भी वृद्धि हुई। ई. स. १६४४ में बीकानेर के गांव सीलवा और नागोर के गांव लाखणिया की सीमा पर मतीरों के फलों को लेकर बीकानेर तथा नागोर के राजपूतों के बीच झगड़ा होगया, जिसमें नागोर के राजपूतों की हार हुई। इस पर राव अमरसिंह ने बीकानेर के राजपूतों से लड़ने के लिए पुन: अपनी जमीयत रवाना की; एवं बीमारी का बहाना कर शाही दरबार में जाना बन्द कर दिया। शाही-दरबार से उसकी जागीर जप्ती का हुक्म जारी हुआ, तब वह २५ जुलाई को सायंकाल के समय (बादशाह जब शाहजादा दाराशिकोह की हवेली में था) शाही दरबार में पहुंचा। बादशाह के हुक्म से गैर हाजरी का कारण और बीकानेर वालों से लड़ने के लिए जमीयत भेजने के सम्बन्ध में पूछताछ करने पर तकरार बढ़ गई और सलावतखां ने अमरसिंह को 'गवांर' शब्द कहने के लिए मुँह से 'ग' शब्द निकाला ही था कि तुरन्त अमरसिंह ने कटार निकाल कर शाही दरबार में उस पर घातक आक्रमण कर दिया, जिससे उसकी मृत्यु होगई। बादशाह उठकर तुरन्त ही दूसरे महल में चला गया और अमरसिंह को मार डालने का अर्जुन गौड़ को हुक्म दिया। वीर अमरसिंह के इस कार्य

पहली मुखे चमरबंध पड़िया,
गोड़े गज बंधां ओघाड़।
जवन तणी दरगाह जोधपुरे,
जड़िया सह एकण जमदाड़ ॥ ३ ॥

ते शाही दरबार में हा हा कार मच गया और इधर-उधर लोग खिसक गये। जब अंधेरा होगया तो झूमता झामता अमरसिंह भी दीवाने खास से बाहिर निकला, ज्योंही वह ड्योढ़ी बाहर निकल रहा था कि उसका पीछा करता हुआ अर्जुन गौड़ भी निकट पहुँच गया और उसने पीछे की तरफ से तलवार चलाकर वीर अमरसिंह के जीवन का अन्त कर दिया। उसकी लाश को उठाकर शाही सेवक बाहिर लेगये और उस (अमरसिंह) के नौकरों को सौंपने लगे, तब तो अमरसिंह के नौकरों ने तलवारें खींचली और कितने ही शाही सेवकों को मार डाला। यह खबर बादशाह को मिलते ही तुरन्त उसने दुर्ग-द्वार बन्द कराने की आज्ञा दी और बाहर के राठौड़ दुर्ग में प्रवेश न करने पावें, इस दृष्टि से चारों तरफ सेनाएँ जमा कर दीं। इधर अमरसिंह की महिलाओं को पति के प्राणान्त होने का संवाद मिलते ही वे सती होने के लिए आतुर हो उठीं। किन्तु वीर अमरसिंह और उसके साथी राजपूतों के शव आगरे के दुर्ग के भीतर थे और चारों तरफ से दुर्ग-द्वार बन्द थे। इसलिए प्रातःकाल होते ही दुर्ग पर आक्रमण करने का निश्चय हुआ। श्रावण सुदी २ संवत् १७०१ (ता. २६ जुलाई १६४४) को प्रातःकाल होते ही पहले बादशाह से निवेदन करा लाशें लाने का प्रयत्न किया गया, परन्तु द्वार खोलकर लाशों को देना मंजूर नहीं किया; तब वीर वर बल्लू चांपावत और भावसिंह कूंपावत आदि वीरों का खून उबल उठा। उन्होंने अपने वीरों को लेकर दुर्ग पर धावा कर दिया और वहां से वीर अमरसिंह आदि के शव निकाल लाये तथा किले के नीचे यमुना के किनारे अन्त्येष्टि संस्कार किया गया। राजस्थान के कवियों ने वीर वर अमरसिंह की प्रशंसा में बहुत कुछ वर्णन किया है। जिसमें से छः गीत यहां दिये जारहे हैं। इनमें एक गीत जोगीदास नामक कवि द्वारा रचित और दो गीत लूणकरण महडू की रचना है। शेष तीन गीतों के रचना-

बहतरि सतरि अनेक बहादर,
खल खूटा तूटा खुरसांण।
पड़ियो ले आधी पतसाही,
राजा गजन तणो जमरांण ॥ ४ ॥
[रचयिता:- जोगीदास]

भावार्थ:—हे राव अमरसिंह! तूने मुगल बादशाह की आज्ञा का उलंघन कर सभा में ही प्रहार किया और नवाबों को उनके घरों में भगा दिया। चांदी के कटहरे में बैठे हुए बादशाह की तरफ काल के समान खून टपकती हुई कटारी लिए हुए जा पहुँचा ॥१॥

हे यमराज स्वरूप अमरसिंह! जितने बहादुर तेरे मुकाबले में आये, सभी उलटे मुँह धराशायी हुए। इस तरह तेरे सम्मुख कोई भी शीघ्रता पूर्वक नहीं बढ़ सका। उस समय तेरे साहस का अवलोकन राक्षस और देवता भी करने लगे ॥२॥

हे दृढ़ वीर जोधपुरेश्वर! प्रथम तूने बादशाह के चमर-धारियों को तत्पश्चात् गजारोहियों को धराशायी किया और मुगल दरबार में अपनी एक कटारी से ही सर्व शत्रुओं को मृत्यु के घाट उतार दिया ॥३॥

हे यमराज—स्वरूपी गजसिंह के पुत्र! तूने बादशाह के बोहत्तर खॉन और सित्तर उमरावों एवं अन्य मुगल योद्धाओं को काट २ कर समाप्त कर दिया तथा आधी बादशाही (अर्धसभा) समाप्त कर स्वयं धराशायी हुआ।

कारों के नाम अज्ञात है। जोगीदास और लूणकरण का परिचय नहीं मिलता; परन्तु उन्होंने जो वर्णन किया है उसे देखते हुए वे समसामयिक जान पड़ते हैं। प्रस्तुत गीतों में वर्णन ऐतिहासिक तथ्य से पूरित है।

४४ राव अमरसिंह

गीत (छोटा साणोर)

देखे तो अमर करामत अंत दिन,
साह धड़क असुर मन सोह।
दुजड़ी एक वहंती दीसे,
पड़ता दीसे घणा पोह॥ १ ॥

सुत गज बंध आदि तो सुजड़ी,
मोहियो वसू सवे सुरमेक।
असपत ईण अजमति इचरजियो,
एक वेहे अरि पाड़े अनेक॥ १ ॥

भुजां भार जोधा ब्रिद भलिया,
अमरा उकलियां ओगाढ़।
छित्रपत दिली तणा सह छलियाः,
जोगण चक्रधारी जमदाढ़॥ ३ ॥

उधम होय इचरज घर असुरां,
धम धम तखत जडाली धार।
घमघम विखम तणा अरि घाटा,
बाँगना झम झम जुधवार॥ ४ ॥

भांजे असुर भखदे भगवंती,
संकर लिये मुण्ड कर सीस।

असमर हंस समापे अमर सी,
समर कीयों करतब सुज गीस ॥ ५ ॥
[रचयिताः— लूण करण महडू]

भावार्थः— हे अमरसिंह ! अन्त समय में तेरे युद्ध-कौशल को देख कर शाह और सभी मुसलमानों के मन कांप गये। उस समय तेरी तो एक ही कटार चलती हुई दिखती थी किन्तु बहुत से अमीर गिरते हुए नजर आते थे ॥ १ ॥

हे गजसिंह के पुत्र ! तेरी यह एक ही कटार शुरू से ही सब शत्रुओं को पीछे धकेल देने वाली है। तूने जब इसका प्रयोग किया तो ऐसा प्रतीत हुआ कि वह तो एक चल रही है और अनेक शत्रु धराशायी हो रहे हैं। यह देखकर बादशाह को भी आश्चर्य हुआ ॥ २ ॥

हे जोधा के दिये विरुदों को धारण करने वाले वीर अमरसिंह ! जब तू अपनी भुजाओं पर युद्ध-भार ग्रहण कर शत्रु सेना में प्रविष्ठ हुआ तब, तुझे देख कर बलवान वीर भी घबराने लगे और योगिनी को चक्र-स्वरूपी तेरी इस कटार ने छत्रधारी दिल्लीश्वर के सब योद्धाओं का छल-छला लिया ॥ ३ ॥

हे वीर ! जब तूने शाही तख्त पर धड़ाके के साथ कटार का वार किया तब, वीरों को आश्चर्य होने लगा और पैरों की आवाज के साथ ही विषम शत्रु नष्ट होने लगे। तेरे युद्ध को देख कर अप्सराएँ भी रुमझुम रुमझुम नूपुर बजाती हुई उपस्थित हुई ॥ ४ ॥

हे पृथ्वी पुत्र अमरसिंह ! तूने मुसलमानों को मार रणचण्डी के आहार की पूर्ति करदी और शिव के हाथों में अपना मस्तक समर्पित कर दिया। खड्गों को अपने और शत्रुओं के प्राण अर्पित करदिये। इस प्रकार तूने युद्ध कर्त्तव्य का पालन किया ॥ ५ ॥

४६ राठौड़ राव अमरसिंह [जोधपुर]

गीत (बड़ा साणोर)

निसा पड़तां झूबियौ जुतै अनड़ां नड़ण,
जवन दल़ सिर सबल़ दाखि जमरा।
सिसि करे जेण उदमाद नव सांहसा,
अरक धोखो करे जेण अमरा ॥ १ ॥

दुधारां वाहतो ढाहतो दूजणा,
नरां सिणगार बंध चोगणे नूर।
मोहियो मयँक कर देख तो आड़ मल,
सूर हर छोहियो आभरण सूर ॥ २ ॥

राति विढ्यो इसी भांति नर वे रयण,
सम समी मार देतो सबांही।
तेण उदमादियो चंद कमंधा तलक,
मांत मांदो थियो चीत माही ॥ ३ ॥

भिड़ंते अमर अखीयात कीधी भुयण,
सुत गजण वात संसार कहसी।
देखसी अदेखां तेण वाता दहूँ,
रात दिन हरख मन माहि रहसी ॥ ४ ॥

[रचयता:-अज्ञात]

भावार्थः— हे नहीं झुकने वलों को झुकादेने वाले राष्ट्रवर वीर अमरसिंह ! तू जब रात्रि होते ही झुकने [illegible] तब, यवन [illegible]ना तुझ (बलवान वीर) को ममत्व के रूप में मानने लगी। रात्रि में युद्ध

होने से चन्द्रमा ने उसे देखा, जिससे उसने हर्ष मनाया एवं सूर्य उस युद्ध को नहीं देख सका, अतः वह चिंतित हुआ ॥ १ ॥

हे शूर सिंह के वंशज ! तू खड्ग चलाता हुआ। शत्रुओं को धराशायी करने लगा, उस समय पुरुषों का शृंगार तुल्य नूर (तेज) तेरे मुख पर चौगुनी वृद्धि पाने लगा। हे अडाकू मल्ल ! तुझे कर-प्रहार करता हुआ देख चन्द्रमा मोहित हो गया एवं सृष्टि के आचरण स्वरूपी सूर्य के मन में इस युद्ध को देखने की लालसा बनी ही रह गई ॥ २ ॥

हे कमंध कुल-तिलक नरेश्वर ! तूने इस प्रकार रात्रि में युद्ध वृद्धि की तथा सब पर समान रूप से वार किया। यह देख कर चन्द्रमा प्रसन्न हुआ और सूर्य चिंतित हो रोग ग्रस्त हो गया ॥ ३ ॥

हे गजसिंह के पुत्र अमरसिंह ! तूने जो अक्षुण्ण ख्याति प्राप्त की, उसकी चर्चा संसार करता रहेगा। इस युद्ध को देखने और सुनने वाले दोनों जान सकेंगे, जिससे उनके हृदय में रातदिन प्रसन्नता होती रहेगी ॥ ४ ॥

४७ राठौड़ राव अमरसिंह, जोधपुर

गीत (बड़ा साणोर)

असुर बोलियो विसर पतसाह मुहे आगला,
राज विण खत्री भ्रम कवण राखे ॥
दूसरा माल वरदान तोनू दियूं,
अमर मो काढ़ जमदाढ आखे ॥१॥

आछटी कमर सूं हाथ चाढी अमर,
जोर जमदाढ में सुधा जागी ॥
ऊमरा साहरा साह मुह आगला,
लोह छीपा किया मलण लागी ॥२॥

उजले भुजां डंड चढे अमरेस रे,
देव बल लियण वरदांन देवा ॥
कूटहणे कटारी खाय गलो कियो,
लचर के वधें पतसाह लेवा ॥३॥

झाल व्रन हुई अँब खास विच झल हलें,
मार हेका बियां हिये मिलती ॥
अमर ची भगवती खुरम मुह आगला,
गल गजे ऊग्रजै मीर गिलती ॥ ४ ॥

चरच केसर अगर धूप हूँ चंहणां,
पाट पट तैं ध्रवी सुधर पूजा ॥
अमर जुग नरां लग नाम रहसी अमर,
दाखियो कटारी सूर दूजा ॥५॥

[रचयिताः- अज्ञात]

भावार्थः— बादशाह के समक्ष ही मुस्लिम योद्धा (सलाबतखां) के कटु वाक्य कहने पर वीर अमरसिंह के अतिरिक्त कौन क्षात्र-धर्म का पालन कर सकता है ? अतः उसकी कटारी ने उसे वरदान दिया कि

दूसरे ही मालदेव ! तू मुझे म्यान से बाहर निकाल ले [मैं तेरी बात बनाये रक्खूंगी] ।

वह कटारी शत्रुओं की ओर, अमर को वरदान देने के लिये, उसके पवित्र हाथों में जा बसी और जिस स्थान पर बादशाह बैठा हुआ था, उस कटहरे के समीप ही शत्रुओं को काट कर ढ़ेर लगा दिया । फिर वह बादशाह को भक्षण (नष्ट) करने के लिये अपनी जिह्वा [अनी] चलाने लगी ॥ ३ ॥

अमरसिंह की वह शक्ति-स्वरूपा कटारी खुर्रम के अम्बर वास (सभा) में उसी के सामने अग्नि ज्वाला के समान चमचमाती हुई एक को पटक कर दूसरे की छाती में प्रवेश करने और गर्जना करने वाले बड़े २ मीरों को नष्ट करने लगी ॥ ४ ॥

कटारी कहने लगी— हे द्वितीय शूरसिंह तुल्य वीर अमर ! तू मुझे केशर चंदन से चर्चित कर अगर का धूप करता रहा है; किन्तु शाह के प्रमुख तख्त पर आज मेरा प्रहार करके तूने उस पूजा को सफल कर दिया है । अतः तेरा नाम जहाँ तक मनुष्य दृष्टि है, अमर रहेगा ॥ ५ ॥

४८ राठौड़ राव अमरसिंह (जोधपुर)

गीत (छोटा साणोर)

अतुली बल अमर न सहियौ अमरख,
साह आलम आगल सगाढ़ ॥
मुगल कुबोल बोलियौ मोढ़ौ,
जड़िये नै वेगी जमदाढ ॥१॥

गजसिंघोत भूप धन गाढम,
ततखिण माचवियै रिणताल़ ॥
कूबयण मूंह काढंतां दरसी,
पिसण परे काढी प्रतमाल़ ॥२॥

काना लग गयो हिक कुवयण,
कमँध-बखांण तुआल़ा कोड़ ॥
पुणचां लगे भुजा दँड पेली,
धाराली अरि तणे धमोड़ ॥३॥

कमँध सराही जगत कटारी,
अमर जु तैं वांही अवसाण ॥
कुवयण हंस मुहड़ै के वीचै,
एक (ग) नीसरिया आराण ॥४॥

[रचयिता--अज्ञात]

भावार्थः—हे महान् बली अमरसिंह ! विपक्षी (सलावत खां) की इर्ष्या को तू सहन नहीं कर सका । तूने बादशाह के सामने अपना धैर्य प्रदर्शित कर दिया । मुस्लिम वीर (सलाबत खां) अपने मुख से कुवाक्य (अपशब्द) नहीं निकाल सका, उसके पूर्व ही तूने कटारी का वार कर दिया ॥१॥

हे गजसिंह के पुत्र ! तेरी दृढ़ता (धैर्य) को धन्य है तूने उसी समय युद्ध छेड़ दिया और शत्रु के मुख से कु वाक्य (गँवार का पहला अक्षर "ग" भी पूरा) नहीं निकला, उसके पूर्व ही तेरी कटारी शत्रुओं के शरीर को बेंध कर पार होगई ॥२॥

हे खड्गधारी राष्ट्रवर वीर (अमर) ! तेरी बलिहारी है कि तेरे कानों में कुवाक्य (गँवार) का पहला अक्षर केवल "ग" ही सुनाई पड़ा। तेरी कटार बलपूर्वक चल पड़ी और शत्रु की छाती को बेंधती हुई वह तेरे पहुँचे (हाथ के) सहित उसके आर पार होगई ॥३॥

हे राष्ट्रवर वीर अमर ! तूने दाव लगाकर प्रहार किया, जिससे तेरी कटारी की प्रशंसा सभी ने की। तेरी कटारी का प्रहार विपक्षी के मुख से कुवाक्य (गँवार) का "ग" और उसके श्वास (प्राण) साथ २ ही निकल गये ॥४॥

४६ राठौड़ रघुनाथसिंह[१] मेड़तिया

गीत (बड़ा साणोर)

मंडे डांण रिण ढ़ाण बिजापुरां मारकां,
सबल़ खेल़ां मिल़े बड़ा पतसाह।
न फर सरजण तणी परी ऊभे नर,
रूघो पाछा न दे पांव रिम राह ॥ १ ॥

कहर गुर बीरहर बड़ो खेल़ो कमध,
जोर वर कहर घर अंग रिण जंग।

टिप्पणीः—१ वि०सं० १६८८ (ई०स० १६३१) में बादशाह शाहजहां के समय आसिफ खां की अध्यक्षता में बीजापुर के स्वामी आदिलशाह पर सैना रवाना हुई, जिसमें महाराजा राजसिंह भी सम्मिलित था। इस गीत में मेड़तिया शाखा के राठौड़ रघुनाथसिंह के लिए उल्लेख है कि उसने बीजापुर पर होने वाली चढ़ाई में भाग लिया था। संभव है कि रघुनाथसिंह ने महाराजा राजसिंह के साथ रह कर वीरता प्रदर्शित की हो।

मरम हेम ढहे डांण आरांण हुवे,
चलण पाछा न दे ख्याल चोरंग ॥ २ ॥

बड़ा खेला बिचे अभि नमो वीर गुर,
ऊजला सावलां चोट उथाल ।

सांकड़े घातीयां दीयण सांमल सुतण,
खत्री गुर खेले अखेलां ख्याल ॥ ३ ॥

दोयणिया भांजि खल डाण घड़ डोहिया,
असपत केद तें किया अण भंग ।

पतसाहां तणा ख्याल बांदा पलब,
जिप उभो रुघो कमध रण जंग ॥ ४ ॥

[रचयिता:- ईश्वरदास बारहट]

भावार्थ:— बीजापुर के मरने मारने वाले कट्टर एवं उन्मत्त वीरों ने युद्ध प्रारंभ किया और उधर से बलवान सैन्य समूह को साथ में लिये हुए, बादशाह ने भी उनका सामना किया। उस समय राष्ट्रवर रघुराज (बीजापुर की सेना का मुखिया) के पक्ष में आनेवाली अप्सरा भी ऐसा अद्भुत और निर्भीक वीर समझकर, उसकी ओर नहीं देख सकी। कारण कि रघुराज भी शत्रुओं के सामने अडिग रहा और एक चरण पीछे नहीं हटाया ॥ १ ॥

वह राष्ट्रवर वीर युद्धों में आनन्द अनुभव करने वाला था। उस बलिष्ठ ने युद्ध में खड्ग ग्रहण कर वार किया। जिससे शत्रुओं की मस्ती हेमाद्रि (हिमाचल) के समान द्रवित हो गई। उस वीर का शरीर क्षत विक्षत हो गया, फिर भी उसने अपने पैर पीछे नहीं दिये ॥ २ ॥

दूसरे ही वीरमदेव के समान पराक्रमी, क्षत्रियों का गुरु, श्यामलदास का पुत्र, विशाल सैन्य समूह के बीच में अपने चमचमाते भाले की चोट द्वारा शत्रुओं को पछाड़ता हुआ और उसे आपत्ति में डालता हुआ, अकेला ही युद्ध क्रीड़ा करने लगा ॥ ३ ॥

शत्रु और उनकी सेनाओं को नष्ट करता हुआ, वह राष्ट्रवर जो अभंगवीर और बादशाह से युद्ध क्रीड़ा का गठबंधन करने वाला था, उसने बादशाह को संकट में डाल दिया और विजय प्राप्त कर युद्ध में खड़ा होगया ॥ ४ ॥

५० राठौड़ बल्लू चाँपावत (गोपालदास का पुत्र)

गीत (बड़ा साणोर)

बीजड़ ऊठियो धूण गिर मेर रो बाहादर,
पाट छल यसो मे कदे पांवां ॥
अमर ने न मेलां एकलो आगरे,
आगरे लड़ेवा कदी आवां ॥१॥

अमें राठोड़ राजा तणा ऊमरा,
जुड़ेवा पार की छठी जागां ॥
बलू पतसाह सूं बोलियो बकांरे,
मारवा राव रो वैर मांगां ॥२॥

टिप्पणी:—१ वीर वर बल्लू चांपावत हरसोलाव के गोपालदास का पुत्र था। राजस्थान में उसकी वीरता सर्वत्र प्रसिद्ध है। जोधपुर के महाराजा राजसिंह का ज्येष्ठ पुत्र राठौड़ वीर राव अमरसिंह, वि. सं. १७०१ श्रावण सुदी २ (ई. सं. १६४४ को आगरे के दुर्ग में मारागया और उसका शव राठोड़ों को उठाकर ले जाने की बाद-

केसरां मांय गरकाव वागा कियां,
सेवरो बांध ललकार साथां ॥
अमर रो वैर तीजा पोहर ऊग्रहे,
बलू ने आगरो हुवो बाथां ॥३॥

पटो नांखे परो साह सूं'र चटांपड़,
स्यामध्रम काम आतां सरायो ॥
वालियो बैर वैरां तणे बाहरू,
अमर ने मोहर कर सुरग आयो ॥४॥

(रचयिता—अज्ञात)

भावार्थः— जालोर प्रान्तीय (सोनगिरि) वीर 'बल्लू' अपने हाथों में तलवारें हिलाता हुआ कहने लगा कि–हमारे मुखिया की सहायता करने का ऐसा समय कब प्राप्त हो सकता है ? बल्लू–बादशाह से पूछता है कि–मैं अमरसिंह का वैर लेने के लिये आगरे में युद्ध के लिये कब आऊँ ? ॥ १ ॥

शाह शाहजहां ने आज्ञा नहीं दी । तब श्रावण सुदी ३ को वीर वर बल्लू तथा भाव-सिंह कूंपावत ने राठौड़ों की जमीयत के साथ आगरे के दुर्ग पर धावा कर दिया । किले के सुदृढ़ द्वार चारों तरफ से बन्द होने पर भी उक्त दोनों वीर अपने मरने मारने वाले राजपूतों के साथ लड़ते-मरते दुर्ग में प्रवेश कर अमरसिंह के शव को बाहर निकाल लाये और आगरे के दुर्ग द्वार के सन्निकट मारे गये । उपर्युक्त गीत में बल्लू की वीरता का वर्णन कवि ने किया है, जो इतिहास सम्मत है । बल्लू इस समय शाही मंसबदार था, तथापि उसने शाही मनसब की परवाह न कर अमरसिंह के शव को निकाल लाने का साहसिक कार्य किया और दूसरे के हित में प्राणोत्सर्ग किया, यह वीर बल्लू की वीरता का द्योतक है ।

मैं, राठोड़ का उमराव हूँ–दूसरे के सौभाग्य (भलाई के लिये सदैव सजग रहता हूँ। बादशाह को ललकार कर वह कहता है कि–मैं राठोड़ नरेश का वैर तुझ से लेना चाहता हूँ ॥ २ ॥

गहरे रंग की केसरियां पौशाक धारण कर मस्तक पर सेहरा बांध ललकारता हुआ बल्लू चाँपावत रवाना हुआ। अमरसिंह का वैर लेने के लिये तीसरे प्रहर आगरे के स्वामी और बल्लू में युद्ध प्रारंभ हुआ ॥ ३ ॥

बल्लू ने गुस्से में आकर बादशाह का दिया हुआ पट्टा फैंक दिया और स्वामी-धर्म निभाने के लिये वह युद्ध करता हुआ मारा गया। जिसकी सबने सराहना की। आपत्ति का समय आने पर सदैव प्रत्येक का सहायक रहने वाला वह अपने स्वामी के वैर का बदला लेकर स्वामी अमरसिंह के साथ ही स्वर्ग में जा पहुँचा

५१. राठौड़ वीर बल्लू चांपावत

गीत (बड़ा साणोर)

किसा देस परदेस राव राणा राजा किसा,
लोह लाखां वधे आध लाधो।
पोल जिण हुएँ तिण भुजा डंड पूजजे,
बलू रो पटो तरवार बांधो ॥१॥
आपरे पांण जैसिंघ हर आभरण,
दाखलै ओसलै वहै दूजा।

टिप्पणी:—१ वीर वर बल्लू हाथीसिंह चांपावत का पुत्र था। इस गीत में आढ़ा कवि किसन ने वीर वर बल्लू की उचित प्रशंसा की है। यह कवि दुरसा आढ़ा का पुत्र था

करे हिंन्दू तुरक जोड़ दोनूं करग,
पोल़ रा तणी करमाल़ पूजा ॥२॥

बिहूँ फोजां बिचै नेत बाधां बलू,
वीवरे खेत नीसांण वावे ।
भाग रो धणी सोभाग रो भूखियो,
खागरो खांटियो वांट खावे ॥३॥

हूकले बाज वहता हसत हींडल़े,
तेग हथ ओल़गे आभ तोल़े ।
बलू रजपूत वट पांण खाटै बिरद,
बलू रजपूत पट पांण बोले ॥४॥

(रचयिता—किशनजी आढ़ा)

भावार्थ:—वीर बल्लू के समक्ष देश और विदेश का प्रश्न ही नहीं रहता है। इस वीर ने तो युद्धों में लाखों को नष्ट करके, राव, राणा और राजाओं से सम्मान प्राप्त किया है। वह जिसके द्वार पर स्थित रहा, वहीं के भुजाओं की पूजा हुई। जागीर की सनद (प्रमाण पत्र) इसकी तलवार के साथ लगी ही रहती है ॥१॥

उस (बल्लू) के बल पर जयसिंह का पुत्र (या वंशज) जो भूषण तुल्य है। विपक्षियों को ललकारता रहता है। जिससे कि अन्य सभी लोग उससे भयभीत रहते हैं अतः इस को (बल्लू) अपने द्वार पर आया हुआ देखकर हिन्दू और मुसलमान सब कर बद्ध हो तलवार की पूजा करते रहते हैं ॥२॥

विपक्षी और स्वपक्षी सेना के मध्य नैतृत्व करने वाला, वीर बल्लू विशाल रणक्षेत्र में शत्रुओं की पताकाओं को पकड़ कर

फेंक देता है। यह युद्ध का भागीदार गौरव और यश की आकांक्षा रखने वाला, अपनी खड़्ग से जो भी प्राप्त करता है; उसे अपने साथियों में विभाजित कर, अपने भाग में जो आता है, उसी को अपने काम में लेता है ॥३॥

भीषण हुंकार करता हुआ जब यह घोड़ा बढ़ाता है तब, हाथी सामने से भागने लगते हैं। यह वीर तलवार को हाथ में लेकर आकाश को भी तोल लेने की आकांक्षा रखता है। बल्लू जैसे राजपूत ही क्षात्रवट् (क्षत्रियोचित गौरव) के बल पर विरुदों को प्राप्त करते रहते हैं। जो तख्त (सिंहासन) के बल पर बोलने वाले हैं। वे राजपूत तो निष्काम है ॥४॥

५२ राठौड़ रामसिंह (भिणायवाले (कर्मसेन) कर्मसिंह का पुत्र)

गीत (छोटा साणोर)

राणाकँन अगे अवाही रामां,
नीये जमदाढ नवे ग्रह नाथ।
पट हथ पमँग ऊपरे पड़ते,
हूँतो वज्र की जमदढ़ हाथ ॥ १ ॥

महपत तखत मदोमत माभी,
धुंसियो असो कमावत ढ़ाल।
फाड़े कमल जाड़े लग फूटी,
परम चक्र कना प्रितमाल ॥ २॥

टिप्पणी:—१ राठौड़ रामसिंह, 'रामसिंह रोटला' नाम से प्रसिद्ध है। वह जोधपुर के राव चन्द्रसेन का प्रपौत्र, उग्रसेन का पौत्र और कर्मसेन का पुत्र था। मेवाड़ के

फिरी वाहतै अफेर जाय फूटी,
मोंहरे रांण हिन्दुआं मोड़ ।
दुजड़ां गयँद वाहते दीठा,
रुड़ा नवकोटां राठोड़ ॥ ३ ॥

[रचयिता:-अज्ञात]

भावार्थः—राष्ट्रवर रामसिंह ने महाराणा कर्णसिंह की हरावल (अग्रभाग) में हो कटार निकाल ली, उसकी चमक को देखकर नवग्रहों के स्वामी सूर्य ने वन्दना की। विपक्षी के पटाधारी हाथी पर अपना घोड़ा बढ़ा, उस पर इस प्रकार कटारी का वार किया मानों वज्रपात हुआ हो ॥१॥

राजागण भी जिसके सिंहासन के अधिकार में हैं, उस (शाह) के प्रमुख हाथी को कर्मसिंह के वंशज ने प्रहार कर लुढ़का दिया, उसकी वह कटारी क्या थी मानों ईश्वर का सुदर्शन चक्र था। उसके प्रहार से हाथी का मस्तक फूट गया और जबड़ा चीर गया ॥ २ ॥

हिन्दू-सूर्य महाराणा की हरावल में रहते हुए वीर रामसिंह ने मुड़ कर हाथीपर कटारी का प्रहार किया, जो उसके आरपार हो गई। इस प्रकार वार कर उसने मरु प्रदेशीय राष्ट्रवरों की शोभा बढाई ॥३॥

महाराणाओं के यहाँ उसका ननिहाल होने से वह कई वर्षों तक उदयपुर में रहा और सैनिक चढ़ाइयों में योग दिया। वहाँ से वह शाही दर्बार में गया और मंसब प्राप्त की। शाहजहाँ के पुत्रों के बीच वि० सं० १७१४ (ई० स० १६५७) में युद्ध होने पर समूनगर के युद्ध में दाराशिकोह के पक्ष में औरङ्गजेब और मुराद के मुकाबले में मृत्यु को प्राप्त हुआ। अकाल के समय वह क्षुधातुर लोगों को रोटियां बनवा कर वितीर्ण कराता था, जिससे लोग उसको 'रामसिंह रोटला' नाम से संबोधन करते थे। प्रस्तुत गीत में कवि ने उस (रामसिंह) के लिये महाराणा कर्णसिंह के युद्ध के समय हरावल में रह कर हाथी पर कटार से प्रहार करने का उल्लेख किया है, यह युद्ध कब और कहाँ किस व्यक्ति से हुआ, इसका कोई उल्लेख नहीं मिलता है।

५३ राठोड़ रामसिंह[1] कर्मसिंह का पुत्र

गीत (बड़ा सांणोर)

चढ़ै धार अणिया अड़े काज चकता तणे,
सूर सूरां तणी वणे भुज सीम ।
पोढ़णे समर विच पांत री पड़ंता,
भीम रामो हुआ आंतरो भीम ॥ १ ॥

गुड़े पाखर गजां नौबतां गड़ गड़ी,
चौवड़ी भांज घड़ लोह चड़ियो ।
लाख सूं अड़े सीसोद पड़ियो लड़ै,
पागती झड़े राठोड़ पड़ियो ॥ २ ॥

खाग दहुँवै दलां आग लागी खिवण,
लाग अंबर मरण वाग लीधी ।
अमर रै धमजगर समर विच ओरतां,
कलारे बरोबर भली कीधी ॥ ३ ॥

अअँग तिल तिल हुओ छात आहुटवै,
प्रथी असपत वखत कमँध पायौ ।
चढ़े रथ रंभ इक सरग दिस चालियो,
एक आधा सरग हूँत आयौ ॥ ४ ॥

[रचयिता:- अज्ञात]

टिप्पणी:—१ वि० स० १६८१ (ई० स० १६२४) बादशाह जहांगीर के शाहजादे खुर्रम ने पिता से विमुखता प्राप्त की, तब सम्राट् ने अपने दूसरे शाहजादे

भावार्थः— शाहजादा खुर्रम के लिये सिशोदिया भीमसिंह महाराणा अमर प्रथम का पुत्र और उसका साथी रामसिंह (राष्ट्रवर) दोनों वीर वीरता की सीमा तुल्य बनते हुए खड्ग धारा और भालों की अनियों (नोंकों) को सहते हुए विपत्तियों के सामने बढे; किन्तु युद्ध में शव प्रस्तर होने पर वे दोनों धराशायी हुए। उस समय भीमसिंह से रामसिंह इस प्रकार पीछे रह गया जैसे चक्रव्यूह वेधते समय अभिमन्यु से भीम दूर पड़ गया था।

परवेज को महावतखां, राजा गजसिंह (जोधपुर) मिर्जा राजा जयसिंह (आमेर) आदि सहित विद्रोही शाहजादे को दंडित करने के हेतु रवाना किया। काशी के समीप हाजीपुर पटना में टौंस (गंगाजी) के किनारे शाहजादा परवेज और खुर्रम के बीच भयंकर युद्ध हुआ, उसमें मेवाड़ के महाराणा अमरसिंह का छोटा पुत्र भीमसिंह विद्रोही शाहजादे के पक्ष में रह कर शाही सेना से लड़ने लगा और ऐसी वीरता प्रकट की कि शाही सेना भागने की स्थिति में होगई। उस समय उसका, राजा गजसिंह से मुकाबला हुआ, जिसमें भीम वीरता प्रदर्शित करता हुआ मारा गया। फलतः शाहजादे खुर्रम को हटजाना पड़ा और विजय का सेहरा परवेज को मिला। इस युद्ध में उक्त भीमसिंह के साथ राठोड़ रामसिंह (कर्मसिंह, भिणाय वालों का पूर्वज) भी था, जिसने पूर्ण वीरता दिखाई और क्षत विक्षत होकर रणभूमि में गिरपड़ा, एवं मृत्यु तुल्य होजाने पर भी वह जीवित रह कर स्वर्ग में न जाकर आधे रास्ते से ही लौट आया। जिस प्रकार समियाणा के युद्ध में राठोड़ वीर कल्ला लौट गया था।

प्रस्तुत गीत में कवि ने वीर वर भीमसिंह एवं राठोड़ रामसिंह की समानता बतलाते हुए भीमसिंह को स्वर्ग प्राप्ति का श्रेय दिया है और रामसिंह पर व्यङ्ग कसा है। क्योंकि युद्ध में कट कर मर जाने पर स्वर्ग की प्राप्ति होती है और घायल होनें तथा हार कर लौटने पर निंदा होती है, यह भारत की प्राचीन परम्परा रही है।

नोपतें (एक प्रकार का वाद्य यन्त्र) बजने लगीं, हाथी घोड़े धराशायी होने लगे, उसी समय चतुरंगिनी सेना को नष्ट करते हुए दोनों वीर शस्त्राघात सहते आगे बढ़ते गये। उनमें से वीर सिशोदिया (भीमसिंह) लाखों वीरों से भिड़कर धराशायी हो गये और उसी के समीप वीर राष्ट्रवर (रामसिंह) भी धराशायी हो गया ॥ २ ॥

दोनों सेनाओं में खड्ग की ज्वालायें फैलती हुई आकाश को स्पर्श करने लगी। उस समय महाराणा अमरसिंह (प्रथम) के पुत्र (भीम) ने घमासान युद्ध में मरना निश्चित कर अपने घोड़े को बढ़ाया उसी समय कल्ला राठौड़ के पुत्र ने भी उसी के समान विपत्तियों से युद्ध छेड़ा ॥ ३ ॥

यवनों के मुखिया (खुर्रम) की आपत्ति में साथ देने वालों में से आहड़े वारों का छत्र स्वरूपी अभंग वीर (भीम) ने अपने शरीर को कटवाकर तिल २ कर दिया; किन्तु वीर राष्ट्रवर (रामसिंह) पृथ्वीपर पड़ा हुआ मिला, इस प्रकार एक तो अप्सराओं के साथ विमान में बैठकर स्वर्ग को रवाना हुआ और दूसरा घायल होकर स्वर्ग के आधे रास्ते तक जाकर पुनः लौट आया ॥ ४ ॥

५४. महाराजा जसवन्तसिंह[1]

गीत (बड़ा साणोर)

जसै पड़िया खेत भडि नेत बाधा जिके,
लगे परमल़ सदल़ लोह लागां।
सबल़ पत्र भरे रत्र पाह न सकै सकति,
अलि इल़ा तणा गुंजार आगां ॥ १ ॥

टिप्पणीः—यह जोधपुर के महाराजा गजसिंह का छोटा पुत्र था। महाराजा गजसिंह ने ज्येष्ठ पुत्र अमरसिंह को राज्य के स्वत्व से वंचित कर जसवन्तसिंह को

जोधपुर धणी चा अणी लागअजिवां,
लाख शत्र पौढ़िया अतर लाये।
कहर भरिया खपर पीय न सकै सकति,
इसा मंडे डमर भमर आये ॥ २ ॥

पोवतो साबलां खला बांहा प्रलंब,
जोवतो सूरमा जूझवी जाति।
जोगणी तणा भरिया पत्तर जाणिया,
भमे मध कर भँवर अनोखी भाँति ॥ ३ ॥

अँजसिया माल संग्राम उदा ऊभे,
धमल गज बंध रो आव धूरी।
कारणां भूतचा नाख चंपा कुसम,
पीये रत दिये आसीस पूरी ॥ ४ ॥

(रचयिताः— नाथजी बारहठ)

उतराधिकारी बनाया। फलतः गजसिंह की मृत्यु के बाद यह जोधपुर का स्वामी हुआ। शाहजहाँ के समय उसने कई युद्धों में वीरता दिखाई और वि० सं० १७१४ (ई० सं० १६५७) में फतेहाबाद के पास बादशाह शाहजहाँ के शाहजादे औरंगजेब तथा मुराद की सेना से दारा शिकोह के पक्ष में लड़कर पूर्ण पराक्रम दिखाया; परन्तु उक्त युद्ध का परिणाम विपक्ष में रहा। आगरा के पास संभूनगर के युद्ध में औरंगजेब और मुराद से दारा शिकोह हार गया। फिर यह औरंगजेब की सेवा में चला गया और उसका सात हजारी मंसबदार होगया। प्रसिद्ध वीर शिवाजी के विरुद्ध बादशाह औरङ्गजेब ने शाही सेना रवाना की, तब महाराजा जसवन्तसिंह मुख्य सेना नायक था।

भावार्थ:— वीर जसवन्तसिंह ने युद्ध क्षेत्र की शोभा बढ़ा, सेना में नेतृत्व का चिन्ह धारण कर शत्रुओं को धराशायी किया। उनके अङ्गो पर शस्त्राघात हुआ, जिससे लगे हुए इत्र की सुगन्ध फैल गई। उन बलवानों के रक्त से शक्ति ने अपना खप्पर भरा किन्तु इत्र के कारण उस में भी सुगन्ध फैल गई थी। इसलिये उस पर भँवरे गुञ्जार कर मंडराने लगे, जिससे शक्ति भी उसको नहीं पी सकी ॥ १ ॥

जिनके शरीर पर इत्र लगा हुआ था ऐसे लाखों शत्रु जोधपुरेश्वर के शस्त्रों की नोकों द्वारा बींधे गये और वे पृथ्वी पर पड़ गये। उस युद्ध में शक्ति ने अपने रक्त पात्र परिपूर्ण कर लिए थे किन्तु सौरभ के कारण रक्त पात्र पर भ्रमर आकर मण्डराने लगे, जिससे वह रक्त पान नहीं कर सकी ॥ २ ॥

वह प्रलम्ब बाहु—शत्रुओं को भालों से बेधता हुआ अपने वीरों और विजातियों का युद्ध देखने लगा, उस समय योगिनियों के रक्त-पात्र भर कर जम गये; किन्तु मधुपान करने वाले भ्रमर उन पर (सुवास के कारण) अद्भुत ढंग से भ्रमण कर रहे थे। अतः योगिनियाँ और शक्ति उस का पान नहीं कर पाती थी ॥ ३ ॥

अन्त में वह जमरूद (काबुल की तरफ़) के थाने पर नियुक्त हुआ, जहाँ वि० सं० १७३५ (ई० स० १६७८) में मृत्यु हुई। उपर्युक्त गीत में कवि ने उस के द्वारा किये गये शौर्य का अच्छा वर्णन किया है। वस्तुतः महाराजा जसवन्तसिंह वीर होने के साथ ही राठोड़ वंश का गौरव था। राठोड़ों का बांकापन उसके अङ्ग अङ्ग से प्रकट होता रहा। वह सदा औरङ्गजेब की आंखों में खटकता रहा। ऐसा भी कहते हैं कि औरङ्गजेब ने उसके ज्येष्ठ कुंवर पृथ्वीसिंह को जहर से रङ्गा हुआ सिरोपाव प्रदान किया, जिससे वि० सं० १७२४ (ई०स० १६६७) में उसकी मृत्यु हुई और जसवन्तसिंह के भी कुटिल चाल से प्राण लिये।

जब धवल वृषभ तुल्य गजसिंह के पुत्र ने उस युद्ध की धुरा को अपने स्कंध पर धारण किया तो उसे युद्ध करता देख कर उसके पूर्वज मालदेव और उदयसिंह गौरवान्वित हो गये। उसी समय प्रेत-गणों ने चम्पा के कुसुम बरसाये, जिससे भ्रमर रक्त-गात्रों को छोड़ कर उनपर उड़ गये और शक्ति एवं योगिनियाँ रक्त पी कर तृप्त हो गईं और उस वीर को आशीर्वाद देने लगी ॥ ४ ॥

५५ महाराजा जसवन्तसिंह[१] (जोधपुर)

गीत (बड़ा साणोर)

सकज वाहतो सेल अण ठेल नव साहसो,
खेलिये खेल खत्र वाटरो खूब।
छोह लागे जसे ओरियो छत्रपति,
मोकला लोह रे बोह महबूब ॥ १ ॥

टिप्पणी:—१ इस गीत का नायक महाराजा जसवन्तसिंह, महाराजा गजसिंह का पुत्र था। बादशाह शाहजहाँ और औरङ्गजेब के समय उसने कितने ही युद्धों में भाग लेकर वीरता प्रकट की। वह जब तक जीवित रहा, सदैव सम्राट् औरङ्गजेब की दृष्टि में खटकता ही रहा। वि० सं० १६८३ (ई० स० १६२६) में उस (जसवन्तसिंह) का जन्म हुआ और वि० सं० १६९५ (ई० स० १५३८) में वह अपने पिता का देहान्त होने पर जोधपुर की गद्दी पर बैठा, तथा वि० सं० १६३५ (ई० स० १६७८) में काबुल की तरफ जमरूद के थाने में रहते समय ५२ वर्ष की आयु में उसका परलोक वास हुआ। उपर्युक्त गीत का रचयिता सुजा नामक कोई सामयिक कवि था, जिसने इस गीत में उक्त महाराजा की वीरता का अच्छा वर्णन ।

कूत आवाहतो ढ़ाहतो केविया,
अजड़ रामत रमे कमँध त्यारा।
गजण रे नाखिया बाज मचती गहण,
सूरहर आभरण पूर सारा॥ २॥

धीबीया छड़ालां किता लोटे धरा,
प्रगट रजपूत वट दाख पूरे।
माल दुजे वधे महाजुध मेलीयो,
खाग अणीयां तणे बाजु खूरे॥ ३॥

वाहि चोधार अरि ढ़ोहिया पार विण,
रूक साराहियो हिंदु राहां
गवाड़े पवाड़ा जसो धारयां गुमर,
समर गांजे व्हूँ पात साहां॥ ४॥

[रचयिताः- सुजा कवि]

भावार्थः— हे राष्ट्रवर वीर जसवन्तसिंह ! तूने अपने कार्य के हेतु उत्साहित हो, भाले की नोंक शत्रुओं के अङ्गों में घुसादी और क्षत्रित्व का भारी खेल रचा, जिससे बहुत से शत्रु शस्त्र के घाट उतर गये॥ १॥

शूरसिंह के वंशजों में विभूषण स्वरुपी हे गजसिंह के पुत्र, तूने बरछा चला कर, मुसलमानों को धराशायी किया और खड्ग का खेल रचा। अश्वारोहियों की बाधा सहन करते हुए तूने शत्रुओं के अङ्गों में अपनी शस्त्र-धार प्रविष्ट करदी॥ २॥

हे दूसरे ही मालदेव ! तूने आगे बढ़ बढ़ कर खड़्ग धार और घोड़ों के सूमों (पदाघात) से महान युद्ध छेड़ा। तेरे भाले के वार से कितने ही वीर शत्रु पृथ्वी पर गिरने लगे। जिससे तुझे युद्ध में परिपूर्ण क्षत्रिय वट धारी कहा गया ॥ ३ ॥

हे जसवन्तसिंह ! तूने चौधारा (दो-दो दुधारी तलवारें) का वार कर शत्रुओं को धराशायी कर दिया। यह देख कर, हिन्दू और मुसलमान दोनों ने तेरी प्रशंसा की। तूने दोनों बादशाहों के समक्ष युद्ध गर्जना और गर्व करते हुए अपना यशोगान कराया ॥ ४ ॥

५६ महाराजा जसवन्तसिंह[१]

गीत (छोटा साणोर)

हल़ वल़ दल़ अकल़ जसा दिली हल़,
भल़ हल़ कूंतल़ वीज भत ॥
जल़ हल़ वीजल़ मैंगल़ झेरण,
गढ खल़ गेरण विसम गत ॥ १ ॥

विने भुजां बल़ अकल़ सहस बल़,
खल़ दल़ खेरू करण खग ॥
गज बँध तणा सनढ गढ गाहण,
कोय न तो सरखा करग ॥ २ ॥

टिप्पणी:—१ जोधपुर के महाराजा जसवन्तसिंह की प्रशंसा में यह किसी अज्ञात कवि की रचना है, जिसका आशय यही है कि जब तू चढ़ाई करता है, तो चारों तरफ आतङ्क छा जाता है।

फौजां लगस तेजियां फरहर,
घरहर त्रंबागल दल घेर।
कोटां मोटां कलह केविया,
जोधाहरो करे जुध जेर ॥ ३ ॥
[रचयिताः- अज्ञात]

भावार्थः— हे दिल्लीश्वर के सहायक महाराजा जसवन्तसिंह (जोधपुर)! विषम गति से तेरे बढ़ने पर शत्रु सेना में हलचल तथा बैचेनी छा जाती है। तेरा भाला बिजली की तरह चमकने लगता है। और हाथियों को नाश कर देने वाली तेरी तलवार झल मलाने (चमकने) लगती है एवं दुर्ग ढह पड़ते हैं ॥ १ ॥

हे गजसिंह के पुत्र! तेरी दोनों भुजाओं में भीम की भुजाओं के समान सहस्र हाथियों का सा अदृश्य बल है और तेरी तलवार शत्रु सेना को समाप्त करने वाली है। तेरे हस्त प्रामाणिक (प्रमुख) दुर्गों को ढहा देने वाले हैं। वैसे हाथ औरों के कब हो सकते हैं? ॥ २ ॥

हे जोधा के वंशज! तेरे चाढ़ई करने पर अश्वारोही सैन्य पंक्ति में घोड़ों के नासा-रंध्र की (फड़ २) आवाज होने लगती है और रणवाद्य गंभीर घोष से बजने लगते हैं। इस प्रकार तू चढ़ाई करके शत्रुओं को उनके बड़े २ दुर्गों सहित युद्ध द्वारा काबू में कर लेता है ॥३॥

५७. महाराजा जसवन्तसिंह [१]

गीत (बड़ा साणोर)

मँडे ज्याग उज्जेण में खाग आगां मुहे,
रदन बल खावती रही रोती।

टिप्पणीः—१ इस गीत का रचयिता कोई अज्ञात कवि है, जिसने महाराजा

हेलवी अमर री हिये करती हरख,
जसा अपछर रही वाट जोती ॥ १ ॥

किया काचा अमल गजन रा कलोधर,
दुरत गत न पीधो फूल दारू ।
वडांरे भरोसे हूर आवी वरण,
मेलती गई नीसास मारू ॥ २ ॥

पाटरी हेलवी वेगमां पहलके,
तन तणा किया नह जेथ टाली ।
पाखती मुकन नै दलो परणीजता,
वाट जोती रही गजण वाली ॥ ३ ॥

जेण वीमाह री वात जाणी जगत,
रूक बल त्रासियो गयो राजा ।
मरावे साथ घर आवियौ मारुओ,
तेल चाड़ी अछर मेल ताजा ॥ ४ ॥

[रचयिता:- अज्ञात]

भावार्थ:— हे जसवन्तसिंह ! तेरे बड़े भाई अमरसिंह से प्रेम करने वाली अप्सरा ने उसे हर्ष पूर्वक हृदय से वरण किया; किन्तु जिस समय खड्गाग्नि द्वारा उज्जैन में युद्ध-यज्ञ प्रारम्भ हुआ उस समय तुझे

जसवन्तसिंह के युद्ध से जाने की निन्दा की है, जो वि० सं० १७१४ (ई०स० १६५७) में उज्जैन में हुआ था ।

हृदय में बसाने वाली (या-उर्वशी) अप्सरा विलखती, रोती और तेरी राह देखती ही रहगई (युद्ध में मारा न जाकर तूने पीठ बतादी)॥१॥

हे गजसिंह की कला को धारण करने वाले मरु नरेश! युद्ध समय में तूने अफीम जैसा हलका (प्रमादी बना देने वाला) नशा किया। तूने (उत्साह वर्धक) तेज मदिरा नहीं पी। तेरे पूर्वजों की वीरता के भरोसे पर तुझे भी वीर समझ कर वरण करने को आई हुई अप्सरा तेरे युद्ध से हट जाने पर निश्वास डालती हुई लौट गई ॥२॥

हे गजसिंह के पुत्र! तेरे बड़े भाई (अमर) ने युद्ध से किनारा नहीं किया। इसी लिये उसकी प्रेमिका अप्सरा उसकी स्त्री हो गई; किन्तु तेरे समीप ही तेरे साथी मुकुन्द और दलसिंह को तो (उनके युद्ध में मरने पर) वरण करने के लिये आई हुई अप्सराओं ने वरण किया; किन्तु तुझे वरण करने को आई हुई अप्सरा तेरी राह देखती ही रह गई ॥ ३ ॥

हे राष्ट्रवर नरेश! उन (मुकुन्द और दलसिंह) के अप्सरा-वरण की बात तो संसार में प्रसिद्ध हो गई है किन्तु तुझे वरण करने को नवीन अप्सरा पीठी करके आई थी; उसे तू खड्गाघात के डर से युद्ध भूमि में ही छोड़कर चलता बना (इसकी बुराई भी उनकी प्रशंसा के साथ २ फैल गई) ॥ ४ ॥

५८ महाराजा जसवन्तसिंह की हाडी राणी [१]

गीत (छोटा साणोर)

दन उगां धूंध हुवे नत दमंगल,
पतसाही बिच भीड़ पड़े।

टिप्पणी:—१ यह महाराजा जसवन्तसिंह की हाडी राणी बून्दी के रावराजा शत्रुसाल की पुत्री थी। उसका जन्म उस शत्रुसाल की सिशोदिया वंश की राणी

औरँगसाह दलां रै आड़ी,
लाडी जसवन्त तणी लड़े ॥ १ ॥

उड़ते खेह चमू चढ़ आवे,
साथे लिया मियां रो साथ।
हाथी चढ़ हलकारे हाडी,
हाडी भलो दिखाड़े हाथ ॥ २ ॥

भाऊ जिसा अरोड़ा भाई,
भड़ जसराज जसो भरतार।

(देवलिया के रावतसिंह की पुत्री) के उदर से हुआ था और करमेती बाई नाम रखा गया था एवं कुमार्यावस्था में महाराजा जसवन्तसिंह का उसके साथ विवाह हुआ। जोधपुर राज्य की ख्यातों में उसका नाम जसवन्तदे हाड़ी लिखा है। वि० सं० १७१५ (ई० स० १६५८) में बादशाह शाहजहाँ के दोनों शाहजादों औरङ्गजेब तथा मुराद के साथ महाराजा जसवन्तसिंह का उज्जेन के पास धर्मत नामक स्थान पर युद्ध हुआ। उस समय महाराजा ने अंत समय तक अपना शौर्य प्रदर्शित किया; परन्तु उसका फल कुछ नहीं निकला और विजय का सेहरा दोनों शाहजादों के बंधा। महाराजा को बड़ी कठिनाई से उस के सरदारों ने रणक्षेत्र से हटाकर जोधपुर की ओर रवाना किया और रतलाम के राठोड़ राजा रत्नसिंह-महेश दास को उसका प्रतिनिधि बनाकर युद्ध-प्रारम्भ रक्खा, जिस में वह (रत्नसिंह) वीर गति को प्राप्त हुआ। प्रसिद्ध है कि जसवन्तसिंह के जोधपुर में पहुंचने पर उस की हाडी राणी ने उसका बड़ा अपमान किया, जिसका टॉड आदि ने उल्लेख किया है; किन्तु उक्त हाड़ी राणी का हाथी पर सवार होकर बादशाह औरङ्गजेब के साथ युद्ध करने का कहीं उल्लेख नहीं मिलता है। इस गीत में कवि ने कल्पना और अतिशयोक्ति-पूर्ण वर्णन किया है।

चोड़े लड़े उड़ावे चगता,
सत व्रत तणी वजारे सार ॥ ३ ॥

पख बे पूरा सासरो पीहर,
जेठ अमर चत्रसाल जणो ।
राणी पाणी भलो राखियो,
तागो हिन्दुस्थान तणो ॥ ४ ॥

[रचयिताः- दुर्गादास]

भावार्थः— प्रतिदिन प्रभात की धुंधली वेला में युद्ध प्रारम्भ होता; जिससे सेना पर विपत्ति मण्डराने लगती । उस समय जसवन्तसिंह की वीराङ्गना पत्नि; औरङ्गजेब की सेना से युद्ध करती और उसे रोकती थी ॥ १ ॥

बादशाह मुगल सेना के साथ जिस समय आकाश को धूल से ढ़कता हुआ रवाना हुआ । उसी समय वह वीरांगना हाथी पर सवार होकर अपनी सेना बढ़ाती हुई विपक्षियों पर कर-प्रहार करने लगती थी ॥ २ ॥

उस वीरांगना के भाऊ जैसा वीर भाई और जसवन्तसिंह जैसा शूरवीर स्वामी था । इन्हें युद्ध-स्थल में कोई नहीं रोक सकता था । वीरांगना हाड़ी खुले मैदान में सत्यव्रत का पालन करती हुई खड्गाघात से मुगलों के मस्तक उड़ाने लगी ॥ ३ ॥

महाराणी के दोनों पक्ष (पीहर एवं सुसराल) प्राचीन काल से ही बड़े वीर थे । अमरसिंह तथा छत्रसाल जैसे ज्येष्ठ (पति के बड़े भाई) थे । ऐसी उस वीरांगना ने हिन्दुस्तान का नाम (कांति) एवं हिन्दुत्व की रक्षा की ॥ ४ ॥

५६. महाराज पद्मसिंह राठौड़[1] (बीकानेर)

गीत (छोटा साणोर)

सुरताण सूं छल़ अवसांण साजवा,
भांण वखांण करे वड़ भाग।
प्रांण अभूल हुआं विक्रपुरो,
खेंडौ पांण न भूलौ खाग॥ १॥

सत्रहर ढहै उग्रहै सोबा,
दूजा निग्रहे धरम दवार।
जड लग वहै कहै धन जग चख,
तुरस ग्रहे वाहै तरवार॥ २॥

दल़ लटतां ऊलटता पर दल़,
भड़ जुटतां कटतां भाराथ।
घण घावे जीवी बल़ घटतां,
हंस पलटतां न पलटै हाथ॥ ३॥

टिप्पणी:—१ यह बीकानेर नरेश महाराजा कर्णसिंह का तीसरा पुत्र था। वि० सं० १७०२ (ई० स० १६४५) में उसका जन्म हुआ। सम्राट् शाहजहाँ के समय, जब उसके शाहजादे सूजा, औरङ्गजेब और मुराद ने विद्रोह किया, तब यह (पद्मसिंह) औरङ्गजेब की सेना में था, एवं उसने उज्जैन तथा समू नगर की लड़ाइयों में बड़ा पराक्रम दिखाया। बादशाह औरङ्गजेब के समय वह अपने पिता और बड़े भाई के साथ दक्षिण में नियुक्त किया गया, जहाँ उसने समय-समय पर वीरता के जौहर दिखलाये। वहीं रहते समय उसके छोटे भाई मोहनसिंह का शाहजादे

पल खूटा जूटा दे असपत,
किलमां चा छूटा कदम।
पांच हजार पिसण रिण पाड़े,
पड़ियो रण राजा पदम ॥ ४ ॥

[रचयिताः- अज्ञात]

भावार्थः — सुलतान (या उसकी सेना) स्वच्छन्दता पूर्वक दाव देता हुआ देख कर, उस सौभाग्यशाली वीर पद्मसिंह की सूर्य सी प्रशंसा करता हुआ कहने लगा कि इस बीकानेर वाले राष्ट्रवर के प्राण बेसुध हो गये हैं फिर भी इसके हाथों से तलवार नहीं छूटी है ॥ १ ॥

उसके द्वारा शत्रु मारे गये है, केवल सूबेदार ही बच सके हैं। वे सब धर्मद्वार (पराजय स्वीकृत कर निकल भागने वाले द्वार) से निकल कर भाग गये। फिर भी वह ढाल ग्रहण कर कटार और तलवार का

मुअज्जम के साले मुहम्मद शाह मीर तोजक से झगड़ा होगया और उस (मोहनसिंह) की औरङ्गाबाद में मृत्यु हुई। इससे क्रुद्ध होकर पद्मसिंह शाहजादे के दीवानखाने की तरफ़ चढ़ दौड़ा। बकौल कर्नल टॉड, पद्मसिंह की तलवार के प्रहार से दीवान खाने का थम्भा तक टूट गया। दक्षिण में तापती (तापी) नदी के तट पर मरहठों से युद्ध होने पर सावन्तराय और जादूराय नामक वीरों को कई आदमियों सहित मारकर वि० सं० १७३९ (ई० स० १६८३) में परलोक सिधारा। उस की तलवार की प्रशंसा में निम्न दोहा प्रसिद्ध है।

कटारी अमरेस की, पदमा री तरवार।
सेल तुहारो राजसी, सरायो संसार ॥

इस गीत में कवि ने पद्मसिंह की वीरता का वर्णन किया है, जो दक्षिण की लड़ाईयों से संबंधित है।

वार करता रहा। यह देखकर सूर्य उसके लिये धन्य २ उच्चारण करने लगा ॥ २ ॥

शत्रु सेना के उलट पड़ने पर उस वीर की सेना समाप्त होगई, उसके यौद्धा भूझ कर युद्ध में कट गये और विशेष घावों के लगने से उसकी श्वास-शक्ति कम पड़ गई और प्राण पखेरु उड़ गये; किन्तु उसके हाथ चलते हुए कभी नहीं रुके ॥ ३ ॥

उससे दो २ बादशाह एक साथ एक भूझ पड़े, जिससे मृत वीरों के मांस की ढेरियां लग गई, वे सब पल-भक्षियों (गिद्धनियाँ आदि) के द्वारा समाप्त हो गई। पांच सहस्र साथी जब उसके द्वारा मारे गये तब वह वीर नरेश्वर युद्ध में धराशायी हुआ (मारा गया)। ॥ ४ ॥

६० महाराजा अजीतसिंह[१] (जोधपुर)

गीत (छोटा साणोर)

एह भाग अगजीत रो राह दोय ऊचरे,
हिमे पतिसाह रे नहीं हाथ।
साहिजादां तणी चाकरी सांझतां,
साहिजादा करे चाकरी साथ ॥ १ ॥

हिंदुवां छात जसराज रां हठाला,
तिलक नवकोट भुज खाग तोले।
कान्हि अकबर तणी चाकरो कीज तो,
आज अकबर रहे तूज ओले ॥ २ ॥

टिप्पणी:—१ यह महाराजा जसवन्तसिंह का पुत्र और गजसिंह का पौत्र था। वि० सं० १७३५ (ई० स० १६७९) में जमरूद (काबुल की तरफ़) के थाने में

प्रथीरानाथ कमँधा तणा पाटवी,
साच आखे सुकवि कहे संसार।
पतिसाहां तणी लार खड़ता पवँग,
लगाया शाहिजादा भला लार ॥ ३ ॥

महाराजा जसवन्तसिंह की मृत्यु होने के पीछे लगभग दो मास के अन्तर से चैत्र वदि ४ (ता० १६, फरवरी) को उसका लाहौर में जन्म हुआ। बादशाह औरङ्गजेब, महाराजा अजीतसिंह को कृत्रिम समझता था। इसलिए जोधपुर पर जप्ती के हेतु शाही कर्मचारी भेजे गये और राठोड़ों के बहुत कुछ निवेदन कराने पर भी बादशाह ने जोधपुर का राज्य उस (अजीतसिंह) को देना स्वीकार नहीं किया। बल्कि अजीतसिंह को दिल्ली के दुर्ग में मंगवा कर रखना चाहा। इस पर राठोड़ों ने शाही सेना से युद्ध किया और वे उसको दिल्ली से गुप्त रूपेण निकाल कर राजस्थान में ले आये। फिर वे उसको मेवाड़ में होते हुए सिरोही ले गये। बादशाह और मेवाड़ के महाराणा राजसिंह के बीच विरोध चल रहा था। अस्तु राठोड़ों के वहाँ पहुँचने पर महाराणा ने उनको सहायता देना स्वीकार किया। फलतः वि० सं० १७३६ (ई० स० १६७६) में बादशाह औरङ्गजेब ने स्वयं बड़ी भारी सैना के साथ मेवाड़ की तरफ प्रयाण किया। राठोड़ और सिशोदियों ने मिलकर शाही दल का कड़ा प्रतिरोध किया मारवाड़ पर होने वाले राठोड़ों के आक्रमण और मेवाड़ में होने वाले राजपूतों के प्रत्याक्रमणों को शाही-सेना-दल नहीं रोक सका। चार मास तक मेवाड़ में ठहर कर भग्न मनोरथ सम्राट् युद्ध का भार अपने शाहजादों पर रख पीछा अजमेर लौट गया। दो वर्ष तक मेवाड़ का संघर्ष चलता ही रहा। राजपूतों ने बादशाह के घर में फूट डालने के लिए शाहजादे अकबर को बहका कर विद्रोही बना दिया, जिससे प्रेरित हो वह (अकबर) बादशाह की उपाधि धारण कर अपने पिता से लड़ने के लिए राजपूतों तथा अपनी अधीन सेना के साथ अजमेर पहुंचा; परन्तु औरङ्गजेब की कुटिल चाल से वह (अकबर) वहाँ से भाग गया। भयभीत अकबर की राजपूतों ने प्राण रक्षा की और वीरवर दुर्गादास को साथ देकर उसको

बिया गजसिंघ धेधींग वणिया विरद,
सिरे राहां दुहूँ तूझ समसेर।
पति साही कमँध करे ऊथल पथल,
जसारे किया अवरँग तणा जेर ॥ ४ ॥

[रचयिताः- वासुदेव राव]

दक्षिण में वी रवर शंभाजी के पास भेज दिया (छत्रपति महाराजा शिवाजी का पुत्र और उत्तराधिकारी) वि० सं० १७३८ (ई० स० १६८१) में बादशाह औरङ्गज़ेब, मेवाड़ के महाराणा जयसिंह से सन्धि कर दक्षिण रवाना हुआ, जहाँ मरहट्टों से लंबा संघर्ष चल रहा था।

जैसे ही बादशाह दक्षिण रवाना हुआ, राठोड़ों ने मारवाड़ में लूट—मार का बाजार गर्म कर दिया और बादशाही इलाके तक में बढ़ कर हाथ साफ करने लगे। शाही अधिकारियों ने आतङ्कित हो समझौते की बात चीत चलाई, परन्तु मुख्य बात जोधपुर मिलने पर दोनों ही पक्ष डटे रहे और बात-चीत का दौरान लम्बा न होकर राजपूतों को अप्रत्यक्ष रूप से मारवाड़ से अर्थ संग्रह की छूट हो गई। लगभग नौ वर्ष की आयु होजाने पर वि० सं० १७४४ (ई० स० १६८७) में सिरोही के कालिन्द्री गांव में महाराजा अजीतसिंह को प्रकट किया गया और वि० सं० १७५३ (ई० स० १६९६) में उस (अजीतसिंह) का मेवाड़ के राज्य कुटुम्ब में विवाह हुआ। तब से ही बादशाह का संदेह निर्मूल होगया, एवं उसको कुछ इलाके भी मिल गये किन्तु मूल झगड़े का अन्त नहीं हुआ और औरङ्गज़ेब के बाद भी संघर्ष चलता ही रहा। वि० सं० १७६३ (ई० स० १७०७) में बादशाह औरङ्गज़ेब की मृत्यु होने पर महाराजा अजीतसिंह का जोधपुर पर अधिकार हुआ! इस विषय का महाराजा के मुख से कहा हुआ निम्न दोहा भी प्रसिद्ध है:—

आई खबर अचिन्तरी तनरी मिट गई दाह।
कासीदा इम भाखियो, मर गयो औरङ्ग साह ॥

भावार्थः— हे अजीतसिंह ! तेरा सौभाग्य है कि दोनों दीन (हिन्दू मुसलमान) तेरी सराहना करते हुए कहते हैं कि 'तू आज बादशाह के अधीन नहीं है। तूने शाहजादों की पूर्व सेवा की थी। इसीलिये आज शाहजादे भी तेरी सेवा (सहायता) करने के लिये उद्यत हैं ॥ १ ॥

इसके बाद शाहज़ादे मुअज्जम ने आपसी संघर्ष के पीछे बादशाह शाह आलम बहादुरशाह का नाम धारण कर दिल्ली का तख्त ग्रहण किया और उसने जोधपुर तथा आंबेर पर भी खालिसा भेज दिया। महाराजा अजीतसिंह, बादशाह आलम के पास पहुंचा और जब बादशाह अपने भाई कामबख्श को दबाने हेतु रवाना हुआ, तब वह (अजीतसिंह) भी साथ-साथ नर्मदा के किनारे तक गया; किन्तु जोधपुर से शाही जप्ती उठाने का आदेश नहीं हुआ। वहाँ से वह वि० सं० १७६५ (ई० स० १७०८) में महाराजा सवाई जयसिंह (आम्बेर) और राठोड़ वीर दुर्गादास सहित उदयपुर आया। जहाँ महाराणा अमरसिंह (द्वितीय) ने कुछ दिनों तक उन्हें अपने यहाँ अतिथि रखा और सात हज़ार सवारों की सहायता देकर दोनों नरेशों को जोधपुर तथा आंबेर पर अधिकार कर लेने के लिये बिदा किया। इस संयुक्त सेना ने जोधपुर, आम्बेर तथा सांभर पर भी अधिकार कर लिया, जिसमें हुसेन खां आदि कई बड़े-बड़े सेनाधिकारी मारे गये। तदनन्तर महाराणा उदयपुर ने शाहजादे अजीमुश्शान आदि के द्वारा लिखापढ़ी कर जोधपुर और आम्बेर के राजाओं का शाही दरबार से मेल करवा दिया। महाराजा अजीतसिंह और महाराजा सवाई जयसिंह के बीच अधिक समय तक मेल नहीं रहा, तथा वैमनस्य बना ही रहा, यद्यपि वे परस्पर रिश्तेदारी में बंधे हुए थे। इन दिनों मुगल सल्तनत में कमजोरी व्याप्त हो गई। सल्तनत के लिए द्वंद युद्ध मच गया, जिससे राजपूतों का ज़ोर बढ़ गया। बहादुरशाह की मृत्यु के पीछे जहाँदारशाह ने लगभग एक वर्ष तक सल्तनत को चलाया और वह अपने भातृज पुत्र फर्रुखसियर द्वारा पकड़ लिया गया और मारा गया। फर्रुखसियर ने तख्त नशीन होकर जोधपुर पर सेना रवाना

हे हिन्दुओं के छत्र-स्वरूपी महाराजा जसवन्तसिंह के हठी पुत्र ! तू मरुप्रदेश का तिलक है। तूने ही शाह के विरुद्ध तलवार उठा रक्खी है। तूने पहले (शाहजादे) अकबर की सेवा की, इसीलिये आज अकबर भी तेरे लिये आड़ (सहायक) बना हुआ है ॥ २ ॥

की। जसवन्तसिंह का पुत्र और उसका राजपूत होने पर भी अजीतसिंह भयभीत हो गया और मरने के डर से भाग कर पहाड़ों में चला गया। अन्त में मुगल सेना का अध्यक्ष हुसेनअलीखां (सैयदबन्धु) और राठोड़ों के बीच सन्धि की शर्तें तय की। महाराजा ने अपनी पुत्री इन्द्रकुंवरी (सिशोदियों की भाणेज) का विवाह बदशाह से करना मंजूर कर दिल्ली डोला भेजना स्वीकार किया। फिर महाराजा को कई नये पर्गने जागीर में मिले। उसने अपनी राजकुमारी का डोला दिल्ली में भेज दिया। जहाँ वि० सं० १७७२ पौष वदि ८ (ई० स० १७१५ ता० ७ दिसम्बर) को फर्रुखसियर के साथ उसका विवाह हुआ। किन्तु महाराजा अजीतसिंह और फर्रुखसियर के नहीं निभी और दाव-पेच चलते रहे। महाराजा, बादशाह के विरोधी सय्यद बंधुओं के दल में मिल गाया और उन सब ने मिलकर फर्रुखसियर को पकड़ कर अंधा कर कैद कर दिया तथा चमड़े के तस्मों से फांसी दिला मार डाला। महाराजा और सय्यद बन्धुओं ने मिलकर रफिउद्दरजात और रफिउद्दोला को क्रमशः बादशाह बनाया; परन्तु वे तपेदिक के (क्षयी) रोग से छः मास में ही काल कवलित हो गये। पश्चात् उन्होंने मुहम्मदशाह को सम्राट् पद पर आसीन किया। इस समय महाराजा ने शाही दर्बार से जजिया का टेक्स मुआफ़ करवाया, जिसको दुर्बुद्धि फर्रुखसियर ने पुनः जारी किया था। फर्रुखसियर के मरने के बाद महाराजा ने राजकुमारी इन्द्रकुंवर को माल-असबाब सहित निकाल कर जोधपुर पहुँचाया। शीघ्र ही मुहम्मदशाह और सय्यद बन्धुओं के साथ बिगाड़ होने से दोनों भाई मारे गये। फलतः महाराजा अजीतसिंह का पक्ष कमजोर हो गया और जोधपुर की बर्बादी के चिन्ह दृष्टि गोचर होने लगे। इस बात को सोच कर वि० सं० १७८० (ई० स० १७२३) में उसके ज्येष्ठ राजकुमार अभयसिंह ने महाराजा सवाई जयसिंह के कहने

हे राष्ट्रवरों के प्रमुख भूपति ! अच्छे कवि ही नहीं; सारा संसार यह कहता है तूने पहले समझदारी की और शाहजादे की मदद की, इसीलिये शाहजादें तुम्हारे पक्ष में हुए।

हे जसवन्तसिंह के पुत्र ! तू द्वितीय गजसिंह के समान वीर है। युद्धों के कारण ही तेरे विरुदों में वृद्धि हुई है। तेरी तलवार बादशाहों के स्थापन एवं उत्थापन कराने के मार्ग में श्रेष्ठ रही है। तूने उथल-मचाकर औरंगजेब के साथियों को बरबाद कर दिया है ॥ ४ ॥

से अपने छोटे भाई बख्तसिंह को पत्र लिखा कि पिता के जीवन का अन्त कर दिया जाय। निदान बख्तसिंह ने जोधपुर के महलों में सोते हुए अजीतसिंह पर घातक प्रहार कर रात्रि के समय उसको मार कर पितृ हत्या का कलंक सिर पर लिया। इस प्रकार महाराजा अजीतसिंह के जीवन का लगभग ४५ वर्ष की आयु में निर्दयता पूर्वक अन्त हुआ। महाराजा अजीत का दर्पयुक्त चेहरा राठोडोचित शौर्य को प्रकट करता था। उसमें कुछ कमजोरियां होने पर भी वह राठोड़ों का बड़ा प्रिय पात्र बन गया था। इसलिये उसकी मृत्यु के बाद उसकी चिता में लगभग ८० प्राणी जीतेजी जल कर मर गये। राठोड़ों ने आततताईयों को मारने का संकल्प कर लिया, जिनकों दबाने में अभयसिंह को बड़ा श्रम करना पड़ा, तथा आंबेर और उदयपुर के नरेशों से भी सहयोग लिया।

इस गीत के रचयिता कवि ने महाराजा अजीतसिंह की प्रशंसा की है, जो कवि-योंचित स्वभाव के अनुसार है और कह सकते हैं कि महाराजा अजीतसिंह का शाही सल्तनत के उलट-पुलट में हाथ रहा था। कवि राव जाति का व्यक्ति था, जिसका परिचय नहीं मिलता है।

६१. महाराजा अजीतसिंह[1] जोधपुर

गीत (छोटा साणोर)

भुज नागां खगां ऊर वड़ भिड़जां,
जोध कलोधर अमल जमे ।
कमला कमल न फेरे कमधज ।
हाथी पग ओहटी हमें ॥ १ ॥

त्रिजड़ां भल हल धसल तेजियां,
वल वल दल दलवल वे बांह ।
राजा अजे दाबटी रेणा ।
सिंधुर पग दूजे गजसाह ॥ २ ॥

सेदां घड़ां भांजते सेंभर,
फतै फतै भाराथ फबी ।
धरती माथो केदन धूणे ।
दुरद जसाव्रत पाय दबी ॥ ३ ॥

[रचयिताः— अज्ञात]

भावार्थः— हे जोधा का कांति धरने वाले राष्ट्रवर नरेश ! (अजीतसिंह) ! तूने अपनी सर्प-तुल्य भुजाओं के बलसे खड्ग पकड़ कर बड़े २ घोड़े बढ़ा जिस पृथ्वी को अपने हाथियों के पैरों के तले दबा

टिप्पणीः—१ इस गीत में महाराजा अजीतसिंह का वर्णन है और सांभर विजय बतलाई है, जो ऐतिहासिक घटना है। वि० सं० १७६५ (ई० स० १७०८) में यह घटना घटित हुई, जिसका परिचय ऊपर के बृहत् टिप्पण में दिया गया है।

दिया था। अब वह तेरे अधिकार से जाने की इच्छा से कभी अपना मस्तक नहीं हिलाती ॥

हे द्वितीय गजसिंह तुल्य वीर अजीतसिंह ! तू ही अपनी तलवार चमका, घोड़े सूम से कुचल, अपनी शक्ति और भुजाओं के बल पर विपक्षी सेना को नष्ट कर पुनः पृथ्वी को अपने हाथियों के पैरों तले दबाने में समर्थ हुआ है ॥ २ ॥

हे जसवन्त सिंह के पुत्र [अजीतसिंह] ! सांभर के युद्ध में सैयदों [मुसलमानों] की सेना को तूने नष्ट कर दिया, जिससे सारे भारतवर्ष में तेरी विजय की चर्चा हो गई। तूने पृथ्वी अपने हाथियों के पैरों तले दबाली । वह अब अनिच्छा प्रगट करती हुई माथा नहीं हिलाती ॥ ३ ॥

६२. महाराजा अजीतसिंह[1] जोधपुर

गीत (छोटा साणोर)

दन एता लगा रोद बल़ दाखे ।
रोल़े वड़ वकराल़ रही ॥
नर जग जीत अजीत निहारे ।
सर दल़ी ढांकियो सही ॥ १ ॥

चखतां पाण ऊघड़े चाचर ।
लाज बचार न धोरे लीर ॥

टिप्पणी:—१ इस गीत का नायक जोधपुर का महाराजा अजीतसिंह, एक प्रसिद्ध व्यक्ति है। प्रस्तुत गीत में काव्य के ढङ्ग से उसके द्वारा दिल्ली में होने वाली उथल-पुथल का वर्णन है, जो ऐतिहासिक घटना है। रचयिता का नाम अज्ञात है।

तण जसराज गाढ गोतरां।
चंडीपुरां ओढियो चीर ॥ २ ॥

छूटा पटां सदाई छलती।
हवैं पत रत मेल् हियो ॥
देख अजण चख गजण दूसरो।
कमल् ढिलड़ी बसण कियो ॥ ३ ॥

ये बल् कुले कमँध अवतारी।
तेज गले मुगलाण तणो ॥
मूंछा वल् घाते महराजा।
घूंघट घाल्यो दली घणो ॥ ४ ॥

[रचयिता:- अज्ञात]

भावार्थ:— इतने दिन दिल्ली रूपी स्त्री, मुसलमानों को बलवान मानती हुई भी घमासान युद्धों के कारण [सिर के बाल बिखेर कर] भयंकर रूप धारण करती रही; किन्तु विश्व विजयी अजीतसिंह को देखकर इसने साड़ी से अपना मस्तक ढँक लिया ॥ १ ॥

मुसलमानों की शक्ति को देखती हुई भी उस दिल्ली रूपी स्त्री ने अपने मस्तक को उघाड़ लज्जा बचाने के लिये वस्त्र धारण नहीं किया; किन्तु गाहड़मल्ल उपाधिधारी राष्ट्रवर वंश वाले जसवन्तसिंह के पुत्र को देखकर उसने चीर ओढ़ लिया ॥ १ ॥

यह दिल्ली रूपी स्त्री सदा बाल बिखेरे हुए बहुतों को छलती रही है किन्तु दूसरे श्री गजसिंह तुल्य इस अजीत सिंह को पति रूप में देख कर उससे अनुरक्त हो अपना मस्तक वस्त्र से ढँक लिया है ॥ ३ ॥

इस राष्ट्रवर वंश में अवतरित होने वाले महाराजा [अजीत-सिंह] की शक्ति के समस्त मुगलों का तेज नष्ट हो गया। उसे मूछों पर ताव देते हुए देख कर दिल्ली-रूपी स्त्री ने लम्बा घूंघट निकाल लिया ॥ ४ ॥

६३ महाराजा अजीतसिंह[1] जोधपुर

गीत [सुपंख]

वेरां लूबियो आजानशाह छड़ालो त्रिभागो वाले,
साकुरा ऊबरा सजे सिंघरां सकाज ।
जोधाणे जिसी काल्ह करीथी ओरंगजेब,
अजेराजा दिली माहे तिसी कीनी आज ॥१॥

गं घूमे लड़ंगां फोजां त्रंबालां अताई गाज,
रेणा रजी ऊपड़ै थरक्के रोदे रूक ।
चकत्ते राजा में विखो घालियो दिहाड़ा च्यार,
चकत्ता में राजा विखो घालियो अचूक ॥२॥

सिलेपोसां चकारां नगारां दे संग्राम सारू,
नेस नीर चाढवां करेवा प्रथी नाम ।

टिप्पणी:—१. प्रस्तुत गीत में महाराजा अजीतसिंह द्वारा फर्रुखसियर को पकड़ कर बन्दी कर मरवाने का उल्लेख ऐतिहासिक घटना है, जिसका समय वि. सं. १७७५ (ई० सं० १७१८) निश्चित है। इस विषय का वर्णन विस्तृत रूप से ऊपर की टिप्पणी में किया गया है। इस गीत के रचयिता कवि का पता नहीं चलता।

आगे कियौ औरंगे जै जला सावा हूँत आंटौ,
जसा वाले उडाया औरंग वाला जांम ॥३॥

ओलगे छतीस वंस ईढधारी जोड़ आचा,
राजाई रहाइया यूं विजाई माल रीत।
पातसाहां तोड़ केवा बाहोड़े आपरा पाणां,
आथियो डँडाला रोड़े भलांही अजीत ॥४॥

[रचयिताः— अज्ञात]

भावार्थः—लम्बी भुजाओं वाला जोधपुरेश्वर अजीतसिंह ! अपने घोड़े और सिंह तुल्य सरदारों को सजाकर तीन धार वाले भाले का प्रहार करता हुआ शत्रुओं पर टूट पड़ा। कुछ समय पहले औरंगजेब ने जैसी जोधपुर की स्थिति करदी थी वैसी ही स्थिति उसने दिल्ली की भी करदी ॥ १ ॥

उस नरेश्वर (अजीतसिंह) ने झूमते हुए हाथी और कूदती हुई अश्व सेना बढ़ा कर जोरों से रणवाद्य बजवाये। उसके सैन्य-प्रयाण से युद्ध भूमि में धूलि उड़कर ऊपर उठने लगी। उसकी तलवार के भय से मुसलमान काँपने लगे। मुस्लिम बादशाह (औरंगजेब) ने कुछ ही दिनों तक उस (अजीतसिंह) को आपत्ति में डाला था; किन्तु उस (जोधपुरेश्वर) ने उसे (बादशाह को) नहीं मिटने जैसी आपत्ति में फँसा दिया ॥ २ ॥

अपने निवास-स्थान [मरु प्रदेश] की कांति बढ़ाने और पृथ्वी पर नाम रखने के लिये जसवंतसिंह के पुत्र (अजीतसिंह) ने युद्धार्थ कवच धारण कर नक्कारों की ध्वनि चारों ओर गुँजा दी। प्रथम औरंगजेब ने उस (अजीतसिंह) के समस्त भू भाग को कष्ट पहुँचाया

था। उस (अजीतसिंह) ने भी औरंगजेब के पुत्र (फर्रुखसियर) को मरवा कर उससे भी अधिक उसके लिये दुःख प्रद कार्य किया ॥ ३ ॥

अजीतसिंह को इस प्रकार मालदेव के समान ही राजधर्म की रक्षा करते हुए देख कर छत्तीस ही जाति के क्षत्रिय उसे चाहने लगे और उसकी समानता करने वाले राजा गण भी उसको हाथ जोड़ कर सम्मान करने लगे। उस (अजीतसिंह) ने अपने हाथों के बल से बादशाह को नष्ट कर यवन वीरों को भगा दिया और स्वयं विजय के नक्कारे बजवाता हुआ लौट आया ॥ ४ ॥

६४. राठोड़ दुर्गादास[१] आसकरणोत

गीत—(बड़ा साणोर)

हुऔ जेम हिरणाक्ष तिम साह अवरँग हुऔ।
ग्राह सुर नरां छांड दियो गाढ़ ॥
अवनी अण थाह जातां हुई अबरके।
दुरग री तेग वाराह री दाढ़ ॥१॥

कहीजे दैत्य ज्यूं ही आसुर कह
सहियां नर अमर गया दुख सूक ॥
बही जाती थकी प्रथी इण वार बिच।
रही गिड़ डसण राठौड़ रै रूक ॥२॥

सतावण संत दाणव हुआ जुगां दुहुँ।
धरा कल पुत्त दुहुँ देखि धूजी ॥

टिप्पणी:—१. राठोड़ दुर्गादास, आसकरण का पुत्र था। वि० सं० १६९५ द्वितीय श्रावण सुदि १४ (ई० स० १६३८ ता० १३ अगस्त) को उसका जन्म हुआ।

धनो साहिब अने साहिबां संत धनि।
दँत खग समाई बार दूजी ॥३॥

आस क्रन तणा नी बाहरा बार इण।
रज धरम मार मोहड़े रह्यौ ॥
प्रथीसां धर बरद धरे हूँ तो पहल।
प्रथी आधार ब्रद हमें पायौ ॥१॥

[रचयिता:- अज्ञात]

भावार्थ:—बादशाह औरंगजेब हिरण्याक्ष के समान प्रकट हुआ उसे देख कर देवता और मनुष्यों का धैर्य नष्ट हो गया। इस समय ऐसा लग रहा था मानो पृथ्वी रसातल में जा रही थी किन्तु दुर्गादास की तलवार वाराह अवतार की दाढ़ बन कर उसे (धरती) सुरक्षित रख लिया ॥ १ ॥

दैत्यराज हिरण्याक्ष के समान ही यह म्लेच्छ पति (औरंगजेब) कहलाने लगा। मनुष्य और देवता उसके आतंक के कारण अनेक दुःख सहते हुए सूख गये। इस समय पृथ्वी भय ग्रस्त हो चुकी थी। किन्तु वाराह स्वरुपी इस राष्ट्रीय वीर की दाढ़ स्वरुपी तलवार के आधार पर ही यह ठहर गई ॥ २ ॥

उस समय हिरण्याक्ष और इस समय औरंगजेब दोनों ही दानव स्वरुपी ही सबों को संतप्त करने के लिये ही प्रकट हुए। किन्तु हिरण्याक्ष और पृथ्वी को वाराह रूप में दाढ़ पर धारण करने वाले ईश्वर और

दुर्गदास की माता के साथ आसकरण का प्रेम कम होने से उस (दुर्गदास) का बाल्य-जीवन अपनी माता के साथ लूणावे गांव में ही व्यतीत हुआ। उसका पिता महाराजा जसवन्तसिंह की नौकरी करता था और उस (दुर्गदास) को कुपूत ही समझता था।

दाढ़ स्वरूपी खड्ग के सहारे रखने वाले ईश्वर के भक्त दुर्गादास को धन्य है। जिसने कि पृथ्वी पर दूसरी बार आई हुई आपत्ति को टाला ॥ ३ ॥

एक बार दुर्गादास ने एक राइका (रेबारी) को मारडाला, जिसकी शिकायत महाराजा के पास होने पर वह (दुर्गादास) दर्बार में बुलाया गया। उसने उत्तर दिया कि रायका ने जोधपुर दुर्ग के लिए दुर्वचन कहे, इससे मैं ने उसको मारडाला। महाराजा ने आसकरण से पूछा कि तुम इसको अपना पुत्र होना नहीं कहते हो परन्तु यह तुम्हारा पुत्र होना प्रकट है। तब उस (आसकरण) ने निवेदन किया कि 'कुपूत को बेटों में नहीं गिनते,' इससे मैं इसको अपना पुत्र नहीं समझता हूँ। महाराजा ने कहा कि यह कभी डगमगाती मारवाड़ के कन्धा लगावेगा और दुर्गादास को अपनी सेवा में रख लिया। वि०सं० १७३५ (ई०स० १६७९) में महाराजा जसवन्तसिंह का परलोकवास होने पर, बादशाह औरंगजेब ने उक्त महाराजा की मृत्यु पीछे उत्पन्न पुत्र अजीतसिंह को मारवाड़ का राज्य नहीं दे कर खालसह कर लिया। तब मारवाड़ के राठोड़ों ने दिल्ली से गुप्त रूप से अजीतसिंह को निकालकर रक्षित स्थान (राजस्थान) में पहुंचाया और बादशाह से संघर्ष छेड़ दिया, जो निरन्तर चालीस वर्ष तक चालू रहा। इनमें वीर दुर्गदास की सेवाएं सब से अधिक उत्कृष्ट रही। बादशाह औरङ्गजेब ने उसकी वीरता और स्वामी भक्ति से प्रेरित होकर उसको उच्च मंसब प्रदान कर पाटन (गुजरात) का फौजदार नियत किया था। वि० सं० १७६३ (ई० स० १७०७) में बादशाह औरङ्गजेब की मृत्यु होने पर राठोड़ों ने मारवाड़ से मुगल थानें उठा कर जोधपुर में ले आकर महाराजा अजीतसिंह को राज्याभिषिक्त किया जिसमें भी दुर्गदास प्रमुख था। मारवाड़ ही नहीं, समस्त राजस्थान वीर दुर्गदास को मारवाड़ का उद्धारक मानता है और लोक साहित्य में यह ओखाणा प्रसिद्ध है—

> ढमक-ढमक ढोल बाजे, दे-दो ठोर नगारां की।
> आसा घर दुर्गो नहीं होतो, तो सुन्नत होती सारां की ॥

आसकर्ण का पुत्र (दुर्गादास) ही इस समय विरुद का पालन कर्त्ता है। इस ने भयानक वारों के सामने राज्य-धर्म को रख लिया और पहले जिस प्रकार नृत रक्षक का विरुद (यश) प्राप्त किया उसी प्रकार अब यह पृथ्वी रक्षक के विरुद (यश) से सुशोभित हुआ ॥ ४ ॥

औरङ्गजेब के पीछे शाहजादे मुअज्जम ने शाहआलम बहादुरशाह नाम रख कर सल्तनत का भार संभाला एवं जोधपुर राज्य को खालिसह कर दिया, तब भी जोधपुर पीछा अधिकार करने एवं सांभर को विजय करने में दुर्गदास का सहयोग था। महाराजा अजीतसिंह और उनके विचारों में साम्यता नहीं होने से नहीं बनी, जिसके कारण पिछले वर्षों में उसको मारवाड़ परित्याग करना पड़ा। वह मेवाड़ में चला आया, जहाँ महाराणा अमरसिंह (दूसरा) और संग्रामसिंह (दूसरा) ने आदर पूर्वक रख कर उसके पदानुरूप जागीर प्रदान की। फिर वह महाराणाओं की तरफ से रामपुर (मालवा) में नियत हुआ, जहाँ वि० सं० १७७५ मार्गशिर्ष सुदि ११ (ई० स० १७१८, ता० २२ नवंबर) को उसका अस्सी वर्ष, तीन माह और अट्ठाईस दिन की आयु में परलोक वास हुआ, एवं रामपुर से उज्जैन लेजा कर उसके शव का संस्कार किया गया। इस संबंध में निम्न पद्य प्रसिद्ध है—

महाराजा अजमाल की, जद पारख्‌ह जाणी।
दुर्गो ही देसां काढियो, गोला गांगाणीह ॥

(स्फुट काव्य)

..... इण घर आहीज रीत, दुर्गोही सफरां दागियो।

प्रस्तुत गीत में राठोड़ वीर दुर्गदास के विषय में जो वर्णन किया गया है, वो काव्योचित रीति से यथार्थ ही है। रचयिता का नाम अज्ञात है।

६५ राठोड दुर्गादास[१] आसकरणोत

गीत (छोटा साणोर)

पह दीठां अजरण भीमे हथणा पुर,
दीठौ वल़ जुजठल़ दहवांण ॥
दुरगा जिसो न दीठो दुजड़े,
रावत काइय लड़तौ रिण ढाण ॥१॥

जोया कुर पांडव जोगण पुर,
सामंत जोय सधीर सक,
एकण आसाउत ओलाड़िया,
कुल़जुग द्वापर चा कटक ॥२॥

कुर पांडव भड़ दीठा कांकल़,
पीथलरा दीठा रजपूत ॥
काल़े भड़ दीठा अकबर का,
भड़ जसराज तणा अदभूत ॥३॥

टिप्पणी:—१. इस गीत का रचयिता वृन्द कवि है, जो जाति का शाकद्वीपी ब्राह्मण (सेवक-भोजग) था। उसका मूल निवास बीकानेर था, जहाँ से उसके पूर्वज मेड़ता में आकर बस गये। वि० सं० १७०० आश्विन शुक्ला २ गुरुवार (ई० सं० १६४३) को मेड़ते में जन्म हुआ। उसके दादा का नाम सहदेव और पिता का नाम रूपजी था। माता कौशल्या देवी और पत्नि नवरंग दे नामक थी। वृन्द ने दस वर्ष की आयु होने पर काशी जाकर विद्याध्ययन किया। फिर वह महाराजा जसवन्तसिंह के दर्बार में जाकर अपनी कवित्वशक्ति द्वारा सम्मानित हुआ और उक्त महाराजा के प्रसङ्ग से शाही

जिण जुड मिळौ मंडोवर जीतो,
आलम वंदियौ परम अंस ॥
विदा हरा नाखिया वांसै,
विसवा वीस छतीसे वंस ॥४॥
[रचयिता:- वृन्द सेवक]

भावार्थः—

हस्तिनापुर में हो गये अर्जुन, भीम और युधिष्ठिर जैसे वीरों की दग्ध कारी शक्ति को देखने वालों ने देखा होगा; किन्तु युद्ध-समय खड्ग चलाने वाला दुर्गादास जैसा वीर किसी ने नहीं देखा ॥१॥

अधिकारियों से उसकी भेंट हुई। एवं शाही दर्बार में उसका सम्पर्क स्थापित हो गया। सम्राट औरंगजेब ने समस्या देकर उसकी परीक्षा ली। यद्यपि सम्राट काव्य और संगीत की तरफ रुचि नहीं रखता था, तथापि वृन्द की रचना से प्रसन्न हो गया और उसको पुरस्कृत किया। तथा उसे दरबारी कवियों में स्थान दिया फिर वह शाहजादा मुअज्जम के पास नियत होकर उस (मुअज्जम) के पुत्र अजीमुश्शान का शिक्षक नियत हुआ। वह अजीमुश्शान की बंगाल और उड़ीसा के सूबेदार पद पर नियुक्ति होने पर उसके साथ उधर गया। उसही समय हिन्दी साहित्य की अमूल्य संपत्ति 'वृन्द सतसई' की रचना हुई। किशनगढ़ (राजस्थान) के राजाओं में साहित्य प्रेम की धारा बह रही थी। अस्तु, वि० सं० १७६४ (ई० स० १७०७) के लगभग महाराजा राजसिंह ने उसको शाही दरबार से मांग लिया। एवं अच्छी जागीर देकर किशनगढ़ में रख लिया। वि० सं० १७८० (ई० स० १७२३) में उसका देहांत हुआ। वृन्द, हिन्दी साहित्य में पिंगल के ज्ञाता तो थे ही, परन्तु राजस्थानी साहित्य डींगल में भी उसकी अच्छी गति थी। उसकी सहृदयता ईश्वर भक्ति सराहनीय रही। यह प्रसिद्ध नागरीदास (महाराजा सावंतसिंह) का साहित्यक गुरू भी था। प्रस्तुत गीत में उसके द्वारा होने वाला राठौड़ वीर दुर्गादास की वीरता का वर्णन कवि कल्पना नहीं। प्रस्तुत इतिहास की सच्चाई को लिये हुए है और अनूठी उपमाओं से परिपूर्ण है।

दिल्ली [हस्तिनापुर इन्द्रप्रस्थ] में होने वाले कौरव, पाण्डवों और प्रसिद्ध युद्ध कर्ता पृथ्वीराज के धैर्यवान सामंतों को देखा; किन्तु इस कलियुग में आसकर्ण के पुत्र (दुर्गादास) ने ऐसा युद्ध किया, जिससे द्वापर में होने वाले महाभारत युद्ध को भुला दिया ॥२॥

कौरव और पांडवों के युद्ध को तथा पृथ्वीराज चाहुवान के राजपूतों (सामंतों) को एवं यम तुल्य अकबर के योद्धाओं को भी लोगों ने देखा; किन्तु जोधपुरेश्वर जसवंतसिंह के अद्भुत योद्धा (दुर्गादास) जैसा वीर शायद ही किसी ने देखा होगा ? ॥३॥

उस वीर के वंशज (दुर्गादास) ने आपत्ति के समय में भी जूझ कर मंडोवर को अधिकार में लिया। उसके कर्तव्यों को देखकर संसार ने उसे ईश्वर का अंश माना। ऐसे उस वीर ने छत्तीस ही वंश के क्षत्रियों को सब प्रकार से पीछे रख दिया (नीचा दिखा दिया) ॥४॥

६६ राठार दुर्गादास[१] आसकरणोत

गीत (बड़ा साणोर)

दलां मार साहरां खलां मूगलां निर दले,
गढ़ां नव चाड केवांण ग्रहियो ।
रह्यां तो सदासों खुदा ज्यौ वीसरे,
रिदे ओरंग तणै दुरग रहियो ॥ १ ॥

टिप्पणी:—१. प्रस्तुत गीत में राठोड़ वीर दुर्गादास की वीरता का अनूठा वर्णन है, जो तत्समयक इतिहास की भित्ति पर है। उक्त राठोड़ वीर द्वारा होने वाले आक्रमणों ने मुगल सल्तनत में तहलका मचा कर एक प्रकार से राजस्थान में चारों तरफ अराजकता उत्पन्न कर क्रांति का सूत्रपात कर दिया था। रचयिता का नाम अज्ञात है; परन्तु ऐसा ज्ञात होता है कि वह सम सामयिक हो।

मंडोवर तणे छल़ दिलीधर मारजे,
चूरजे असुर कीजे वप चोड ।
हुवे नित हल्ला तिण अला न रहै हियै,
रहे नित साहरे हीये राठोड़ ॥ १ ॥

जहां सुत तणो सोह जीवीयो अजीवत,
हमैं प्रज कहे नवही खंडा हूँत ।
अलख न रहे पलक खूंद मन वेध इम,
करनरो रहे मन मांही अर कूंत ॥ २ ॥

नह भावै धान नह आवे नींद घण,
जोयधर आपरी पड़ी जालै ।
दिल्ली पतसाह साहिब हुओ दूर दिल,
साल जिम बियौ रिड़माल सालै ॥ ४ ॥

[रचयिता-अज्ञात]

भावार्थः—हे ! राष्ट्रवर वीर दुर्गादास, तू तलवार उठाकर शाह की सेना और मुगलों को नष्ट करता रहता है। तेरे आंतक से औरंगजेब के हृदय में खुदा की स्मृति न रह कर उसके स्थान पर तेरी स्मृति ही बनी रहती है ॥ १ ॥

हे ! मण्डोवर के रक्षक राष्ट्रवर वीर तेरा शारीरिक विनोद दिल्ली के भू भाग को और वहाँ के यौद्धाओं को नष्ट करना ही है। तेरे आक्रमण से दिल्ली के भू भाग में कोलाहल मचा रहता है और इस प्रकार बादशाह के हृदय में भी अल्ला के स्थान पर तू बसा हुआ रहता है ॥ २ ॥

हे ! आसकरण के पुत्र (वीर दुर्गादास) तुझे शाह-विरोधी देखकर मरु देशीय प्रजा कहती है कि—शाहजहाँ का पुत्र औरङ्गजेब तो जीवित ही मृत के समान है। अब अदृश्य खुदा उस की पलकों में नहीं बसता; अपितु उस के मन में तो सीधा तत्काल पहुँचाने वाली तेरी बर्छे की नोक बसी रहती है (चुभती रहती है)॥ ३ ॥

हे ! दूसरे रणमल के समान वीर दुर्गादास ! बादशाह की पृथ्वी तो तेरे जाल में फँस गई। यह देख कर बादशाह को अन्न का स्वाद अच्छा नहीं लगता और न निद्रा ही ठीक प्रकार से आती है। वह उदास चित्त होकर रहता है और तू उस के हृदय में नाट शल्य (भाले आदि की नोक) के समान चुभता रहता है ॥ ४ ॥

६७ राठोड़ अभयकरण दुर्गादास[1] का पौत्र

गीत (बड़ा साणौर)

बड़ौ हूं तो अम छभानु वेध हूँ तो विकट,
मेल घट में जिके पलां में मिटाया।
काल कहिया वचन अभासू अभंक्रन—
आज आलम तणी नजर आया ॥ १ ॥

उपाड़े वाग वखतेस नृप आगला,
लोह मेले खलां बोध लीधा।
काछवा कँधा जिम बोल नहँ किया कमँध,
कमंध गज दंत जिम बोल कीधा ॥ २ ॥

टिप्पणी:—१. यह प्रसिद्ध राठोड़ वीर दुर्गादास का पौत्र और तेज करण का पुत्र था। प्रस्तुत गीत में अभय करण का वि० सं० १७६७ (ई० स० १७४०)

दुरग सुत बाह दोय राह दाखे दुझल,
रचे गजगाह इक मत इरादा।
जोध मिल सामठा करत चैहरा जिके,
जिकेइज करै तारीफ जादा ॥ ३ ॥

किया जुध कूरमां मेल बँधवां किया–
बध किया सुजस दुसमण बनूरा।
जोधपुर नाथ नूं वचन कहिया जिकै–
भलां नीवाहिया सांच भूरा ॥ ४ ॥

[रचयिताः– बखताजी खिड़िया]

भावार्थः— हे अभय कर्ण! आपस में भेद-भाव पैदा हो जाने से सभा में भ्रम छा गया और जिनके मन में मैल था उन्हें पल मात्र में नष्ट कर दिया। कल जो वचन दूसरे ही अभयसिंह (जोधपुरेश्वर वख्तसिंह) के समक्ष तू ने कहे थे उसी के अनुसार तू ने संसार के समक्ष कार्य कर बताया ॥ १ ॥

हे राष्ट्रवर वीर! तू ने वख्तसिंह की सेना के अग्र भाग में जा कर शत्रुओं से लोहा लिया और उन्हें वीरोचित कार्य का बोध कराया।

में महाराजा सवाई* जयसिंह (जयपुर) और महाराजा अभयसिंह के बीच गंगवाणा (अजमेर के निकट) में होने वाले युद्ध में महाराजा अभयसिंह की सेना में सम्मिलित होकर उक्त महाराजा के भाई राजाधिराज बख्तसिंह (नागौर का अधिपति) के सेनापतित्व में कछवाहों की सेना से लड़ने का वर्णन है, जो ऐतिहासिक है। रचयिता बख्ता खिड़िया सम सामयिक कवि जान पड़ता है, उसने जो वर्णन किया है, वह उचित ही है।

तू ने कच्छप की गर्दन के समान (लुप्त तुल्य) वचन न कहकर तू ने अपने वचनों को हाथी के दांतों का (स्पष्ट) रूप दे दिया ॥ २ ॥

हे दुर्गादास के पुत्र! दोनों दीन तुझे धन्य २ कहते हैं और अचूक वार करने वाला बताते हैं। तूने अपने घोड़ों को गजगाह से सुशोभित कर विपक्षियों से लोहा लेने की एक ही बात तय कर सब में एकता स्थापित कर दी है। तेरे समक्ष जो बड़े २ यौद्धा मिलकर नाज करते थे, वे ही वीर आज तेरी विशेष प्रशंसा करते हैं ॥ ३ ॥

हे युवक वीर! तू ने कछवाहों से युद्ध और बंधुओं से मेल किया और शत्रुओं को नष्ट कर उन्हें यश रहित कर दिया। जोधपुरेश्वर से तू ने जो वचन कहे उनका भली प्रकार से पालन किया ॥ ४ ॥

६८ राठोड सहंस करण (दुर्गादास का वंशज)[1]

गीत (छोटा साणोर)

बेढ़क बेढ़कां सहसो यम वांचे,
धीरज लेख प्रमाण धरे।
धक चांलां झालां विच धरता,
मरता फिरे सो नांह्य मरे ॥१॥

रीझल जुध करणावत रावत,
घणा अबीढ़ा सबद घड़े।
ओझट झटां टल नह अड़ता,
झड़ता फरे सो नाह्य झड़े ॥२॥

टिप्पणी:—प्रस्तुत गीत में किसी कवि ने राठोड़ सहँस करण द्वारा युद्ध में वीरों को आव्हान करने का वर्णन किया है। सहँसकरण प्रसिद्ध राठोड़ वीर दुर्गादास

सास ऊसास मेलीया साहब,
रसणा कमधज ओम रटै।
बधे नहीं जतनां बाधायां,
घाव घटांयां नाह्य घटै ॥३॥

रण चाला देख टलो मत रावत,
दुजड़ां झलां झकोला देह।
जतन कीयां उपजे तन जोखो,
लै लै कीया न डाकण लेह ॥४॥

[रचयिता--अज्ञात]

भावार्थः- युद्ध भूमि में मरने और मारने वाले वीरों को उद्बोधन करता हुआ वीर सहँस कर्ण कहता है कि भाग्य में जितना धैर्य लिखा हुआ है, उतना धैर्य तो अवश्य रहेगा ही। जो व्यक्ति खड्ग ज्वाला (खड्ग धार) की आग में अपने को डालकर रक्त प्रवाहित करना चाहता है और जो निर्भीक होकर मृत्यु के लिये तत्पर रहते हैं, उन्हें मृत्यु भी नहीं मार सकती ॥१॥

युद्ध क्रीड़ा में भी प्रसन्न रहने वाले आसकर्ण के वंशज असाधारण शब्दों का उच्चारण कर कहता है- कि जो वीर असह्य आघात होने पर भी युद्ध भूमि से नहीं डिगते और दृढ़ रहकर भिड़ते हुए कट मरना ही श्रेयस्कर समझते हैं, उन शूरवीरों को कोई भी नहीं मार सकता ॥२॥

का वंशधर होने के कारण तदनुरूप ही युद्ध में रूचि रखता था। प्रतीत होता है कि इस समय राठोड़ सरदार अपने नरेश से विमुख हो रहे हों, एवं इसी कारण से सहँस करण को इस प्रकार का कोई प्रयत्न करना पड़ा हो। सहँसकरण जोधपुर के महाराजा अजीतसिंह एवं अभयसिंह का समकालीन था, यह निश्चित् है।

ईश्वर ने इस संसार में जितने श्वास दिये हैं; उतने लेने ही पड़ते हैं।" इस प्रकार राष्ट्रवर वीर उच्चारण करता हुआ आगे और कहने लगा कि, 'प्रयत्न करते हुए भी जीवन को नहीं बढ़ाया जा सकता।" जो वीर शरीर पर घाव सहन करने की क्षमता रखते हैं, उनका शरीर गहरे घावों से भी नष्ट नहीं होता है ॥३॥

हे राजवंशीय वीर युद्ध क्रीड़ा से मुख मत मोड़ो। खड्ग ज्वाला (खड्गधार) से अपने शरीर का प्रक्षालन करो। अपने शरीर की भीरुता से रक्षा करना वृथा शरीर की हानि करना है। जैसे कि डायन को यदि इस प्रकार कहा जाय कि "ले!" "ले!!" तो वह भी आक्रमण नहीं कर सकती ॥४॥

६६ राठोड़ हिम्मतसिंह मेड़तिया सुंदरदासोत

गीत (छोटा साणोर)

खग पोगर डमर धरे खेड़ेचो,

मद ओपम छेहुँरत मसत ॥

भ्रुगट उपाड़ खलां दल भाँजण,

हेमत मद आयो हसत ॥१॥

टिप्पणी:—१ महाराजा अजीतसिंह को जोधपुर की गद्दी का उत्तराधिकारी स्वीकार न कर मारवाड़ के समस्त भू भाग को खालसा कर लिया। इस पर अधिकांश राठोड़ मुगल सल्तनत के तीव्र विरोधी हो गये और उन्होंने प्रत्यक्ष सम्राट के विरुद्ध कार्यवाही आरंभ करदी। लूट-पाट का बाजार गर्म हुआ। जब ई० स० १६८४ (वि० सं० १७४१) में राठोड़ों ने जोधपुर तथा सोजत के बीच गांवों को लूटा, तब

सांकल़ ल्लाज तणी पग सोहे,
घणा भड़ाँ वच घण् घणो ॥
अर ठाणा ऊखेलण आयो,
तल़डाणा गज नाथ तणो ॥२॥

दीपे सेल वदन दांतूसल़,
अण भँग खग क्यावर अचल़
अरहर दुरँग ढहावण अरि अट,
दूदा हर पटझर दुझल ॥३॥

अन नर घणा न माने आंकुस,
आंकुस परम सीस अवनाड़ ॥
मद छहरत छलतो राव मारू,
पोह मेंगल़ वोजीयो पहाड़ ॥४॥

[रचयिता–अज्ञात]

भावार्थः– सूंड चलाना ही आडम्बर युक्त खड्ग चलाने के समान है [यौवन, धन, वैभव, वीरता के] छः ही ऋतुओं में वह मद में मस्त रहता है। शत्रु–दल को नष्ट करने के लिए राष्ट्रवर हिम्मतसिंह मद-पूर्ण हाथी की तरह है ॥१॥

सोजत के थाने पर बहलोल खां नामक शाही अफसर से लड़ाई हुई, जिसमें राठोड़ हिम्मतसिंह, 'शक्तिसिंह सुंदरदासोत मेड़तिया भी काम आया था। प्रस्तुत गीत में किसी कवि ने हिम्मतसिंह की स्वामी भक्ति, बल आदि की सराहना की है और वह सम-सामयिक जान पड़ता है।

लज्जा रूपी शृंखला से ही जिसके पैर जकड़े हुए हैं, और जो बहुत से वीरों में अधिक प्रसिद्ध है। ऐसा वह नाथा का पुत्र [या-वंशज] जो हाथी-स्वरूपी है वह शत्रुओं के स्थानों को नष्ट करने के लिए सदा मद में छका रहता है ॥२॥

वह ईदा का वंशज जो हाथी के तुल्य है। उसका भाला ही उसकी दंतूसल है और अभंग खड्ग-यश ही जिसकी अचलता है। वह शत्रुओं के दुर्गों को ढहाने के लिये सदा अड़ जाता है। उस हाथी-स्वरूपी वीर की खड्ग ही पटा [सूंड में पकड़ी जाने वाली तलवार] का काम करती रहती है ॥३॥

नहीं झुकनेवाला वह राष्ट्र वर वीर! अन्य मनुष्यों का प्रभुत्व स्वीकार नहीं कर केवल प्रभू की सत्ता को ही मानने वाला है। छः ही ऋतुओं में उसका मद प्रवाहित होता रहता है ऐसा वह हाथी के समान उन्नत काय वीर भारी पहाड़ तुल्य है ॥४॥

महाराजा अभयसिंह, जोधपुर

गीत (बड़ा साणोर)

मदां आट पाटां सिलह पोस थाटां मसत,
खाग झाटां अभैसींघ खहियो।
जवन धड़ सीस गज पड़े भेला जठे,
कठे गणपत सगत ईस कहियो ॥ १ ॥

टिप्पणी:—१. महाराजा अभयसिंह, महाराजा अजीतसिंह के ज्येष्ठ पुत्र थे। वि० सं० १७५६ मार्गशीर्ष कृष्णा १४ (ई० सं० १७०२ ता० ७ नवम्बर) को उसका जन्म हुआ और वि०सं० १७८१ (ई०सं० १७२४) में महाराजा अजीतसिंह के मारे जाने पर राज्यासन पर आरूढ़ हुआ। राजकुमार अवस्था में महाराजा अभयसिंह को कई बार मुगल दर्बार में जाने का अवसर प्राप्त हुआ और दुर्बल सम्राट् फर्रुखसियर

तरण रथ थकत घण बहे खागां अतर,
अमर कर कर मरण बरे अवरी।
पड़े धड़ गजानन कहे यम पँचानन,
गजानन कठे रिण सोध गवरी ॥ २ ॥

अभो छत्रधर खगां असुर दल़ आछटे,
रोस धर अजावत दइव रायो।
भड़ां घट देख चाचर भमर कहे भव,
उमा थांरो कँवर काम आयो ॥ ३ ॥

सर बिलँद तँडल़ दल़ कमल़ गज सँभाले,
मगत कहियो कुसल़ नाह सुणारे।
दोय दँत दोय भुज नहीं हर लँबोदर,
एक दँत च्यारभुज चहूँ न उणारे ॥ ४ ॥

तथा मुहम्मदशाह द्वारा सम्मानित हुआ। ई० स० १७३० (वि० सं० १७८७) में मुहम्मद शाह ने महाराजा अभयसिंह को गुजरात का सूबेदार नियत किया। किन्तु पहले के सूबेदार सर बुलंदखां ने उक्त पद को नहीं छोड़ना चाहा और महाराज से मुकाबले की तैयारी कर अहमदाबाद में अपने को सुदृढ़ किया। इस पर शाही सेना और राठोड़ों की बड़ी जमीयत के साथ महाराजा अभयसिंह अहमदाबाद पहुँचा। ता० २० अक्टोबर (कार्तिक कृष्ण ५) को महाराजा और सर बुलंदखां के बीच युद्ध हुआ। जिसमें दोनों तरफ के बहुत से सैनिक मारे गये, एवं सर बुलंदखां को विजय का यश मिला। सरबुलंदखां की भी युद्ध में असीम हानि हुई थी और वह भी युद्ध नहीं चाहता था। ऐसे में महाराजा की तरफ से संधि की शर्तों का पैगाम पहुंचने पर उसने उसे स्वीकार कर अहमदाबाद

यम कहत समा गणराज पग आविया,
मुगल धड़ सूंद गजराज माथा।
हुवा सिव सगत (खुश) पछे ऊछय हुवो,
हुवो रिणजीत ब्रद कमँध हाथां ॥ ५ ॥

[रचयिता:- कवि करणीदान]

खाली करना तय किया और शर्तों के अनुसार फिर वह अहमदाबाद महाराजा को सौंप, मांडामा होकर उदयपुर (मेवाड़) के मार्ग से रवाना हुआ और आगरा पहुँचा।

प्रस्तुत गीत में तत्समयक चारण कवि कविया करणीदान ने सरबुलंदखां और महाराजा अभयसिंह के युद्ध का वर्णन किया है, जिसकी पृष्ठ भूमि अवश्य ही ऐतिहासिक है। सुलवाड़ा गांव का कविया करणीदान, महाराजा अभयसिंह का समसामयिक था और उस समय के प्रसिद्ध कवियों में गिना जाता था। उसने महाराजा अभयसिंह की प्रशंसा में 'सूरज प्रकाश' नामक ऐतिहासिक काव्य की रचना की, जो तत्समयक इतिहास के लिए उपयोगी वस्तु है और उसमें सरबुलन्दखां के साथ युद्ध होनेका विशद वर्णन है। पीछे से उसने इसी ग्रन्थ का रूपान्तर कर 'विरुद शृङ्गार' नाम दिया और उसे महाराजा को सुनाने पर उसको लाखपसाव में आल्हावास गांव देकर कविराजा का ख़िताब दिया और यहां तक सम्मान किया कि वह उसको हाथी पर बिठला कर स्वयं अश्वारूढ हो, मण्डोवर से उस (करणीदान) के मकान तक पहुंचाने गया। वह (करणीदान) जब महाराणा संग्रामसिंह (द्वितीय) के समय उदयपुर में आया तो उक्त महाराणा ने उसके गीतों को सुन कर उनको धूप देकर स्वीकार किया, एवं महाराणा जगत्सिंह (द्वितीय) के समय करणीदान ने उसको अग्रगामी की भांति ग्रहण किया।

करना रो जगपत कियो, कीरत काज कुरब्ब।
जो सपना में ले मुआ, साह दिलीस सरब्ब ॥

इस प्रकार करणीदान एक सम्मानित व्यक्ति हुआ है और उसकी यह रचना महत्व रखती है।

मद प्रवाहित करते हुए हाथी और कवच-बन्ध सैनिकों के उन्मत्त समूह को खड्ग के आघातों द्वारा जोधपुरेश्वर अभयसिंह ने काट दिया। जिससे यवनों के धड़ और हाथियों के मस्तक एक दूसरे से मिल (चिपट) गये। यह देख गणपति की खोज करते हुए शिव, पार्वती से कहने लगे, हे शक्ति! गजानन कहाँ है?॥ १ ॥

उस युद्ध को देखने के लिये सूर्य ने अपने रथ को स्थिर कर लिया। उसी समय शीघ्रता पूर्वक बहुतसी तलवारें चलने लगी। अपनी ख्याति को अमर रखने के हेतु अनेको वीर मर कर अप्सराओं का वरण करने लगे। ऐसे घमासान युद्ध में हाथियों के रुण्डों को धराशायी होते देख कर शिव कहने लगे, हे गौरी! युद्ध में तुम खोज करो कि गणेश कहाँ है? ॥ २ ॥

अजीतसिंह का पुत्र इन्द्र के समान अभयसिंह, यवनों पर क्रुद्ध होकर खड्ग प्रहार करने लगा। जिससे कटे हुए यवन योद्धाओं के रुण्ड से हाथियों के मस्तक जुड़ गये। उन पर भ्रमरों को मंडराते हुए देख शिव कहने लगे—हे उमा! तेरा पुत्र गणपति मारा गया॥ ३ ॥

शिव के कहने पर, शक्ति ने खर बुलन्दखां के सैनिकों के रुण्ड और हाथियों के मुण्डों को जांच कर देखा और कहा—हे प्राणेश्वर शिव! सुनिये, इन जुड़े हुए रुण्ड मुण्डों के दो दांत और भुजाएँ हैं और गणेश तो एक दन्तधारी एवं चार भुजाओं वाला है। अतः इनमें गणेश नहीं है॥ ४ ॥

शिव और शक्ति में इतनी ही वार्ता हो सकी थी कि तुरन्त ही यवन सैनिकों के रुण्ड और हाथियों के मुण्डों पर पैर देता हुआ गजानन भी वहाँ आ पहुँचा। जिससे शिव और शक्ति प्रसन्न हुए। पश्चात् गणेश के कुशलता पूर्वक आ जाने से उत्सव मनाया गया। उधर राष्ट्रवर राजा भी युद्ध विजयी कहलाया॥ ५ ॥

७१. महाराजा अभयसिंह (जोधपुर)

गीत (बड़ा साणोर)

सझे प्रबल् घमसाँण अभमाल सरवलँद सूं,
गाहिया रोद होदां गजूभी ॥
सथल् चतराम नोखां सु कँत सँपेखे,
अबल् गोखां दियै धाह ऊभी ॥ १ ॥

ग्रहे खग अमदावाद दूजे ग,
हुवाया खलां गज चाड़ हूंके ॥
झलल् चख छबी भरथार री भालियाँ,
कलतयर जालियां बीच कूके ॥ २ ॥

छतर धर सधर भखिया खलां छड़ालां,
सिंधुरां सहत राठोड़ सूरै ॥
घणू तसबीर जां देख खण खण घड़ी,
झरोकां खड़ी यर नार झूरे ॥ ३ ॥

धरे थिप जोस महाराज सुरधर धणी,
विचित्र घड़ हणी भड़ लोह वाहे ॥

टिप्पणी:— १. प्रस्तुत गीत का रचयिता चारण जातीय अहाड़ा गौत्र का कवि पहाड़खान पांचेटिया गांव (मारवाड़) निवासी और प्रसिद्ध कवि दुरसां आढ़ा का वंशधर बताया जाता है। यह महाराजा अभयसिंह का समकालीन था। उपरोक्त गीत में उसने महाराजा अभयसिंह और सरबुलंदखां नामक अहमदाबाद के शाही सूबेदार के बीच वहाँ के अधिकार हेतु युद्ध हुआ, उसका वर्णन किया है। यह युद्ध वि० सं० १७८७ (ई० स० १७३०) में हुआ था।

तको पेखे छबी जोतदानां तणी,
महल कुरल घणी मँडप माँहे ॥ ४ ॥

[रचयिता:-आढ़ा पाहड़खानजी]

भावार्थः—महाराजा अभयसिंह ने सरबुलंदखाँ से घमासान युद्ध छेड़कर गजारोही यवनों को हौदों में कुचल दिया। उन बलवान यवनों की स्त्रियाँ अपने पतियों के विलास-चित्रों को देखकर झरोखों में खड़ी २ विलाप करने लगी ॥ १ ॥

उस द्वितीय गजसिंह तुल्य वीर ने अहमदाबाद के युद्ध में तलवार पकड़ कर गजारोही शत्रुओं (यवनों) पर प्रहार करना प्रारंभ किया। उसके शस्त्राघात से शत्रुओं के हृदय बींधे जाने लगे।

शत्रुओं की स्त्रियों ने अपने पतियों के चमकते हुए स्वर्णिम चित्रों को देखकर गवाक्ष-रंध्रों से देखती हुई ऊँचे स्वर से रुदन करने लगीं ॥ २ ॥

उस वीर राष्ट्रवर नरेश ने कितने ही छत्र धारी और धैर्य धारण-कर्ता यवनों को भालों द्वारा हाथियों सहित नष्ट कर दिया। उनकी स्त्रियाँ उनके चित्रों को क्षण २ में देखती हुई झरोखे में खड़ी २ विशेष अश्रुपात करने लगीं ॥ ३ ॥

उस वीर मरुधरेश्वर ने जोश में आ शस्त्राघात कर यवनों की विचित्र सेना को नष्ट कर दिया। उन सैनिकों की स्त्रियाँ उनके चित्रों की शोभा देखकर चित्र-मण्डप में खड़ी २ उच्चस्वर से विलाप करने लगी ॥ ४ ॥

७२. महाराजा अभयसिंह (जोधपुर)

गीत (सुपंखरा)

डंडा रोड़रे नगारां जाड़ी जोड़ भड़ा लाग डाणां,
उभे पातिसाहां टल्ला हमल्ला अरंग

भड़ालां अनेका पाड़े दाकले अनेका भड़ां,
तेण वेलां राजा अभो हाकले तुरंग ॥१॥
बरूथां गै घूमा झोक खंडांहलां धीह बंबां,
करालां उनाल झालां बरालां किरोध ॥
त्रोण सिंगी ऊछटे पनांग परी जेम तूटे,
जंगमा गड़ी रे जंगां जूटे माहा जोध ॥२॥
त्रंबागलां द्रीहड़ां खुलंत सिंधा जोग ताली,
ठाल रोदां करे पाड़े जंगी होदां ढाल ॥
लोहां रीठ बजाड़े उघाड़े खांडे हाथ लीधां,
नेज बाज मारवाड़ो झोके निराताल ॥३॥
चालां बांधि अड़गी धिकावे पातसाहां चोड़ै,
किरमालां झालां रोड़े काला गजां काप ॥
मालदेव दूसरो तीसरी ताली बाज मेल,
पावे फते अजा वालो ईसरी प्रताप ॥४॥

[रचयिता=सांवलदास]

भावार्थः—मस्त होकर दृढ़ मंत्रणा करते हुए नक्कारों पर डंके दिलवाकर टक्कर लेने के लिये दो २ बादशाह भयंकर आक्रमण करते

टिप्पणीः— १. इस गीत का रचयिता सांवलदास नामक कोई कवि है, जो संभव है, वि० सं० की अठारहवीं शताब्दी में हुआ हो । ऐसा जान पड़ता है कि वह महाराजा अभयसिंह का समकालीन था । उसने प्रस्तुत गीत में उस (अभयसिंह) के बलाबल के विषय में वर्णन किया है, जो समयोचित है जैसा कि आश्रित कवियों की रचनाओं में प्रायः होता है ।

और जिस समय वे भिड़ने वाले वीरों को ललकार कर पछाड़ने लगते हैं उस समय महाराजा अभयसिंह अपने घोड़े को युद्ध भूमि में बढ़ाता हुआ दिखाई देता है ॥ १ ॥

जिस समय गज-समूह झूमने लगता, खड्ग प्रहार होने लगते, रणवाद्य बजने लगते, वीरगण ग्रीष्म की भयंकर ज्वाला के समान क्रोधाग्नि फैलाते हुए दिखाई देते, तरकस (तूणीर) से शर निकाले जाते और धनुष की प्रत्यंचायें अप्सराओं की लचकीली लंक के समान लचकने लगती हैं उसी समय गढ़ी नामक स्थान के जंग में महान् वीर अभयसिंह युद्ध कर्ताओं से उलझ जाता है ॥ २ ॥

जिस समय तासे (वाद्य विशेष) आदि रण वाद्यों के बजने से सिद्धों की समाधि खुलने लगती है, उसी समय मरुधरेश्वर (अभयसिंह) घोड़ा बढ़ाता और शीघ्रता पूर्वक भाला चलाता एवं हाथ में नंगी खड्ग लिये शस्त्र झड़ी करने लगता है। उसके द्वारा हाथियों के होदे में बैठे हुए प्रमुख यवन योद्धा खोजे जाकर धराशायी होते हुए दिखाई देते हैं ॥ ३ ॥

अपनी अड़ाकू सेना पंक्ति बद्ध कर दूसरे ही मालदेव के तुल्य अजीतसिंह के पुत्र (अभयसिंह) ने बादशाहों को खुले मैदान में धकेल दिया, और श्यामवर्ण हाथियों को अग्नि ज्वाला के समान चमचमाती हुई अपनी २ खड्ग के प्रहार से काट दिया। इस प्रकार वीर उस द्वितीय मालदेव तुल्य ने तीन करतल ध्वनि हापाय इतने ही समय में घोड़े को बढ़ाकर देवी के प्रताप से विजय प्राप्त की ॥ ४ ॥

७३ राठौड़ जसवंतसिंह पातावत

गीत (बड़ा साणोर)

पचे नहीं पच लुण ओखद जसो यम पुणे,
अखाड़ा पचे नही मलां अड़ता ॥

धणीरो धांन सेला तणा धमाकां,
पचे तरवारिया झाट पड़तां ॥ १ ॥

अमावड़ रुजक खावँद तणो अरोगे,
अति चढ़ै लूण पाणीर आटां ॥
अजीरण जिको छड़ियाल ऊझेलियां,
झलिया ऊतरे खाग झाटां ॥ २ ॥

झिलायां सेल खग सेल झिलीया,
मुगल दल पेलीयां लड़े मारू ॥
पातावत लोह दारू रुजक पचायो,
दूसरा बतायौ लोह दारू ॥ ३ ॥

सिर बिलद वैद दीनी पूड़ी जहर सम,
जेसै स्यांम ध्रमा हूँत जारी ॥
आवसी एम इण जेम रस आवतां,
खावतां लागसी घणी खारी ॥ ४ ॥

[रचयिता:- अज्ञात]

टिप्पणी:— इस गीत का नायक पातावत शाखा का राठौड़ जसवन्तसिंह संभवत: जोधपुर के महाराजा अभयसिंह की सेना का कोई वीर क्षत्रिय हो। वि० सं० १७८८ (ई० स० १७३१) में दिल्ली के बादशाह मुहम्मदशाह ने गुजरात के सूबेदार सरबुलन्द खाँ को वहां से हटा कर महाराजा अभयसिंह को वहां का सूबेदार नियत किया। उस समय सरबुलंदखां ने अहमदाबाद को खाली नहीं करना चाहा। इस पर राठोड़ों और सरबुलंदखाँ के बीच युद्ध की स्थिति उत्पन्न हो गई। संभव है कि उस युद्ध में जसवंतसिंह, जोधपुर की सेना से लड़ कर काम आया हो।

भावार्थः—कहावत है 'कि खाया हुआ स्वामी का नाज और नमक न औषधियों से पचता है और न अखाड़े में मल्लों की कुश्ती से' बल्कि वह तो भालों और तलवारों की बौछारों को शरीर पर सहन करने से ही पच सकता है ॥ १ ॥

यदि स्वामी का नाज भर पेट खाया जाय तो उसके नमक, पानी और आटे का विशेष नशा चढ़ जाता है और अजीर्ण हो जाता है। वह अजीर्ण भालों और तलवारों की चोटें सहन करने से ही मिट सकता है।

हे राष्ट्रवर वीर पाता के वंशज ! तूने अपनी बरछी और खड्ग का वार शत्रुओं पर किया और स्वयं ने भी शत्रुओं के शस्त्राघात सहन किये। इस प्रकार मुसलमानों से युद्ध प्रारम्भ कर, उनको कुचलते हुए तूने लोहे रूपी दवा से भू भाग की प्राप्ति की और अन्यों को भी बना दिया कि भू भाग की प्राप्ति के लिये लोहा ही एक मात्र औषधि (प्रयत्न) है ॥ ३ ॥

हे जसराज ! शेर बुलन्द खाँ जैसे वैद्य ने तुझे युद्ध रूपी विषैली पुड़िया दी; जिसको तूने स्वामी-धर्म-रूपी औषधि से पचाली। इस प्रकार की विषैली पुड़िया खाते समय बड़ी कड़वी लगती है किंतु स्वामी-धर्म-स्वरुपी औषधी द्वारा पचाने जैसा आनन्द अभी प्राप्त हुआ है, वैसा ही आगे भी आता रहेगा ॥ ४ ॥

७४. राठोड़ महासिंह चाँपावत[१] (पोकरण)

गीत-(सुपंख)

साजे बँदूकां कामठां आध रात रो लागतां सींध,
धाड़ो सींघपरा माथै आवतां सधींग ॥

टिप्पणी:— १-यह चांपावत भगवानदास का पुत्र था, जिसके पूर्व भीनमाल की जागीर थी। महासिंह के पूर्वज गोपालदास (मांडल का पुत्र) कानाम रणसिं-

आंचा खैंच मुछां रा बोल तौ बोल दीह आडै,
साच मांचा उजला दखाया माहासींग ॥ १ ॥
जठे भुजा डंडां धू राड़ रो भार झेल जाड़ो,
सीम आडो पुगो भीम पाथ ज्यूँ सधीर ॥
जोस लागां धाडवी भडूडो बांध आया जका,
बाड खागां हडूंडो खलांओ माहावीर ॥ २ ॥
भलो भाई टणकाई आलमा जीहांन भाखै,
नेत बंधा पाई फतैं अरँदां नवार ॥
सामराथां आतां कांम धीआगां लगाई सोभा,
कहे यो जकाई साची दकाई कुँवार ॥ ३ ॥
पुरींदो बणंता बीद हंस सुरां लोक पुगो,
बीरां सुरां पुरां रंग दीधो बेर बेर ॥
श्री हथां ऊंचाय लीधो भाराथ वाला रो सीस,
संभुनाथ कीधो रुंड माला रो सुमेर ॥ ४ ॥
[रचयिता:- अज्ञात]

गाव की पैतृक जागीर थी। वि० सं० १६४२ (ई० स० १५८५) में मोटे राजा उदयसिंह ने गोपालदास को आऊवा दिया और उसके बाद आउवा जागीर जप्त कर, पाली की जागीर प्रदान की। गोपालदास का पुत्र विट्ठलदास हुआ, जो महाराजा जसवन्तसिंह के समय वि० सं० १७१५ (१६५८) में उज्जैन के युद्ध में शाहजादा औरंगजेब और मुराद के मुकाबले में लड़कर काम आया। उसके पाली आदि के ३२ गांव जागीर में थे। बिट्ठलदास का पौत्र जोगीदास और प्रपौत्र सावन्तसिंह हुआ, जिसकी जागीर में भीनमाल भी रहा। वह

भावार्थः— अर्ध रात्रि में डाकुओं ने धनुष और बंदूकों को सजा कर सिंघपुर पर हमला करने के लिये सिंधु राग गाते हुए उत्पात मचाना प्रारंभ किया, तब उनसे टेढ़ा बोल कर ललकारते हुए एवं हाथों से मूँछों पर ताव देते हुए महासिंह ने अपने वंश को उज्ज्वल कर दिया ॥ १ ॥

उस समय अपने सिर और भुजाओं पर युद्ध का भारी भार सहन करते हुए महासिंह ने सीमा पर भीम और अर्जुन के समान जाकर डाकुओं को रोका। यह देखकर डाकू जोश में आ पहचान न सकें। इसलिये मुंह पर ढाटा बांधकर सामना किया, उन दुष्टों के समूह को महासिंह ने खड्ग द्वारा काट दिया ॥ २ ॥

निः संतान था, इसलिए उसका उत्तराधिकारी छोटा भाई भगवानदास हुआ और भीनमाल की जागीर का उपभोग करता रहा महाराजा अजीतसिंह ने उसकी अच्छी सेवाओं से प्रसन्न हो उसे दासपां की जागीर दी। इसके अतिरिक्त जागीर में वृद्धि कर आठ गांव उसी महाराजा ने और दिये।

महाराजा अभयसिंह के छोटे भाइयों में से एक किशोरसिंह, पिता की हत्या होने पर भागकर अपने ननिहाल जैसलमेर में चला गया और वहां से मदद लाकर मारवाड़ में बिगाड़ करने लगा। जब उसने पोकरण-फलोदी की तरफ लूट-मार मचाई तो महाराजा अभयसिंह ने अपने भाई नागोर के स्वामी राजाधिराज बख्तसिंह को मुकाबले के लिए भेजा जिस पर किशोरसिंह भाग कर जैसलमेर चला गया। महाराजा ने उस समय पोकरण का ठिकाना चरावतों से छीनकर चांपावत महासिंह (इस गीत के नायक) को प्रदान किया और भीनमाल खालसा कर लिया गया।

प्रस्तुत गीत का रचयिता कोई अज्ञात कवि है। उपर्युक्त गीत में जो वर्णन हैं, उससे पाया जाता है कि महासिंह ने सिंध की सीमा पर संभवतः पोकरण–फलोदी के आस–पास लूट मार का बाजार गर्म हुआ, तब उसको रोकने में भाग लिया था। और उसमें मारा गया; परन्तु इसका ठीक समय अज्ञात है।

महासिंह के इस प्रकार भिड़ने पर सब उसके लिये कहने लगे कि इस वीर ने अच्छा बांकापन निभाया। इस नेतृत्व करने वाले ने शत्रुओं को समाप्त कर दिया। फिर वह सामर्थ्यवान् भी युद्ध में मारा गया और अपने गौरव को उन्नत बना दिया। उसने जैसा कहा था वैसाही सच्चा कर दिखाया ॥ ३ ॥

वह महासिंह द्वितीय इन्द्र समान दुल्हा बनकर स्वर्ग लोक में जा पहुँचा। वहाँ उसको प्रसिद्ध वीरों ने बार २ रंग (धन्यवाद) दिया। उस युद्ध-कर्ता के मस्तक को शिव ने अपने हाथों से उठाया और अपने गले की मुण्डमाल में सुमेरु के स्थान पर लगा दिया ॥ ४ ॥

७५ राठोड़ शेरसिंह[१] (रीयाँ)

गीत (बड़ा साणोर)

बडा बोलणो बोल वातां घणी बणातो,
जोम छक जणातो टसक जाभी।
सदारो अग्राजे सेर ऊभो समर,
मुदारा हरा रा आव माभी ॥ १ ॥

बरा छक माय आंटी घणो बोलतो,
तोलतो गयण हाथां अतागो।
खड़े अस छछोहा सेर दाखे खत्री,
उदर द्रोहा हमे आव आगो ॥ २ ॥

टिप्पणी:— १ यह मेड़तिया राठोड़ सरदारसिंह का पुत्र था और मारवाड़ में रीयां का ठाकुर था। महाराजा अभयसिंह की मृत्यु होने पर उसका पुत्र रामसिंह वि० सं० १८०६ (ई० स० १७४९) में गद्दी पर बैठा। अपने बुरे आचरणों से

लखे तूं सेज कटकां रूका मेलतो,
सहर ने जेण आंटै संभायो।
आरबा छोड़ तूं आवरे अठीनै,
अबे हूँ अठी खड़ चाल आयो ॥ ३ ॥

उमर डोफोर अडर करंतो अत डकर,
अतमकर वयण कहतो अजूजा।
पाट रछपाल जैमाल हर प्रचारे,
दाख खत्रवाट रड़माल दूजां ॥ ४ ॥

करारा वचन खारा जीयां काढ़तो,
नरारा तूझ भरतो गयण बाथ।
भूराते कीया चाल वग्रह धरारा,
हरारा देख मारा हमैं हाथ ॥ ५ ॥

धणी मो रांम अर तूझ बखतो धणी,
ऊभे घर बरोबर समर आड़ी।
कुशलसी तेजसी तणे घर एकता,
पलटते खूंदती सूंखता पाड़ी ॥ ६ ॥

उसने मारवाड़ के राठोड़ सरदारों को असंतुष्ट कर दिया इसपर उन्होंने रामसिंह के पितृव्य बख्तसिंह को नागोर से लाकर जोधपुर की गद्दी पर अभिषिक्त करना चाहा। इसमें आऊवा का राठोड़ सरदार कुशलसिंह मुख्य था। उधर रामसिंह के पक्ष में रीयां आदि के मेड़तिया ठाकुर थे, जिनमें इस गीत का नायक शेरसिंह मुख्य था। अंत में दोनों वीरों (रामसिंह और बख्तसिंह) के बीच वि० सं० १८०७ मार्गशीर्ष

काज असड़ा करे आज सोचे कसूं,
धार भुज लाज कर गांज धेठी ।
बामी भुजा बकारे सेरसां,
जीमणी मसलरा आव जेठी ॥ ७ ॥

कटक देखे दहे अबे सोचे कसू,
जनम लग कदे नह परब जुड़सी ।
खरा खोटा तणी वछूटां खांपसूं,
पछे सोह आपसूं खबर पड़सी ॥ ८ ॥

बढ़ण संग्रामची हाम बाकरतां,
महादोय जांम होय गया मोनू ।
जोधपुर जहर रा बीज बाया जको,
तके फल चरवावुं आव तोनू ॥ ९ ॥

सेर ग करारा वचन कूसलो सुणे,
अभेनमो पाल मरदां उजाला ।
बादलां दलां नांगोर रा बचालै,
अरक जिम भलकियो हरा वालो ॥१०॥

सुदि १० (ई० स० १७५० ता० २५ नवंबर) को लुनुणियावास में युद्ध होने पर दोनों ही दलों के मुखिया कुशलसिंह चांपावत (हरनाथसिंहोत) और शेरसिंह मेड़तिया (सरदारसिंहोत) बड़ी वीरता से अपने २ अधीशों की विजय कामनार्थ लड़ते हुए वीर गति को प्राप्त हुए । प्रस्तुत गीत में इसी विषय का वर्णन किया है, जो ऐतिहासिक तथ्यों से परिपूर्ण है । वंशभास्कर के रचयिता महाकवि मिश्रण सूर्यमल ने इस युद्ध

सूर तन तेज भरलाट तन सांपरत,
बखत सुछलजेज न धरे अड़ी खंभ ।
नेत बंध बने अवछाड़ कोटा नवां,
थया मुह मेज धरती तणा थंभ ॥११॥

धरा रा चाढ़ सोह सेल उधांमियां,
फोज रा मूही पूठी अफेरा ।
सेरसा कहे कर लोह मोनु कुशल,
सकज कुशलो कहे वाह सेरा ॥१२॥

सार रा कोट मन मोट साहसा,
गणे तन पारका षिये गलिया ।
करे मनवार मुजरा जकण वारका,
मारका महामड़ लोह मलिया ॥१३॥

घमाधम बाण गोला बिखम गाजिया,
साजिया मरण खतरी धरम सोध ।
मंडोवर तणा अध राजिया मेड़ते,
बाजिया खगां धरती तणे बोध ॥१४॥

फणाअस फड़ धड़ड़ बाज नासा फड़ड़,
लिये पँख भड़फड़ड़ अमख लूंदां ।

का वर्णन बड़े ओजस्वी शब्दों में किया है, जैसा इस गीत में वर्णित है। खेद है कि इस गीत के रचयिता का नाम अज्ञात है, परंतु उससे रचना का महत्व कम नहीं होता है।

भड़ अनड़ राठवड उभै तड़ रचे अुंह,
दुजड़ झड़ मंडे रड़माल दूदां ॥१५॥
प्रसर लसकर सहर गहर कायर पँजर,
लोहर अतर उमर ंबर लागो ।
जौरवर जबर नर अडर बेहुए जणां,
वजर खग अजर गत गजर वागो ॥१६॥
सुछल त्रप रांम बखतेस राजा सुछल,
कुसल भ्रम पारको काज कीधो ।
सेल कुसला तणे साजियो सेरसा,
लोह सेरै कुसल साज लीधो ॥१७॥
बेहूँ घर बरोबर समर क्यावर वढ़े,
सक्रज भड़ सरोवर घणो सधको ।
हालियो हंस साथे लियां हरारो,
एत सुत सदारो घणो अधको ॥१८॥
पांच ग्रह सेल फर दोय लागां पछे,
सदारो सेर पोरस सवायो ।
मसलतो हाथियाँ धसल भर तो मरद,
अचल हर पाधरो कुसल आयो ॥१९॥
उभेनर रचे बेहुँ पाथरुपी अनड़,
घणा नज नाथ तण रीत घड़िया ।

तदी पातां भड़ां अदन मुरधर तणे,
　　　　पाट रछपाल रण बाट पड़िया ॥२०॥

सतारो उदेपुर दली चीतोड़ सूज,
　　　　बढ़ण घड़ कंवारी कवण बरसी ।
राम छाती मही तोय अध रातरो,
　　　　काम पड़सी जरे याद करसी ॥२१॥

जूझरा भार बेहू ए सर भालया,
　　　　नज वचन तोल साचो नभा है ।
हरारो सती संग सती पुर हालियो,
　　　　मालियो सेर प्रम जोत माहै ॥२२॥

[रचयिता:- अज्ञात]

तू 'गाल फूला कर बड़ी२ बाते करता था । जोश में आकर अधिक आडम्बर रखता था । तू वीरों में प्रमुख सुना जाता है । अतः आज तू मेरे सामने युद्धार्थ प्रस्तुत होजा ॥ १ ॥

तब शेरसिंह बड़े उत्साह से कहने लगा— हे नमक हरामी ! तू अपने मद में चूर होकर टेढी मेढी बातें करता है और आकाश को हाथ पर उठा लेने जैसा साहस करता है । अब तू मेरे सामने युद्ध करने के लिये उपस्थित होजा ॥ २ ॥

हे कुशलसिंह ! तू सदैव सेना को देखकर तलवारों से तलवारें मिलाता रहता था, पर आज तूने इस नगर को आपत्ति में डाल दिया है । अब तू तोपें चलाना छोड़कर इधर मेरी ओर आ । मैं युद्ध करने के लिये आ डटा हूँ ॥ ३ ॥

तू 'आडम्बर और अभिमान से उन्मत्त होकर निर्भयता पूर्वक गर्जता हुआ अटपटे वचन कहता है। मैं जयमल का वंशज मारवाड़ के राज्य-सिंहासन का रक्षक हूँ। हे दूसरे ही रणमल तुल्य वीर' मैं तुझे ललकार कहता हूँ कि तू अपना क्षत्रियत्व प्रदर्शित कर ॥ ४ ॥

हे हरनाथसिंह के पुत्र! तू ावेश में आकर कटु वचन कहता था और बाहुपाश में आकाश को पकड़ने का दम भरता था। तेरे उत्पातों ने निश्चय ही मारवाड़-भूमि में विग्रह उत्पन्न कर दिया है। अतः तू आ और अब मेरे हाथों का बल देख ॥ ५ ॥

मेरा स्वामी तो रामसिंह है और तेरा स्वामी बखतसिंह है। ये दोनों युद्ध के लिये कुटुम्बी के समान ही हैं। कुशलसिंह और तेजसिंह के घर भी वीरता में एक समान ही हैं। परन्तु तूने स्वामी का विरोध कर अपराध किया है ॥ ६ ॥

ऐसा कुकृत्य कर हे कुशलसिंह! अब तू क्या सोच रहा है? हे धृष्ट तू अपनी भुजाओं पर युद्ध की लज्जा का भार ग्रहण कर क्यों नहीं गर्जता? मैं शेरसिंह! मरुधरेश्वर के सामन्तों की वाम पंक्ति का मुखिया हूँ। अब तू मेरे सामने युद्ध करने के लिये उपस्थित हो ॥ ७ ॥

सेना को सामने देखकर दिल दुखाता हुआ अब क्या सोचता है? ऐसा अवसर जन्म जन्मान्तर तक नहीं मिलेगा। कौन सच्चा वीर और कौन कायर है; यह बात म्यान से तलवार निकालने पर ही सब को ज्ञात हो सकेगी। ॥ ८ ॥

युद्ध में कट पड़ने के लिये सामने ललकारते हुए मुझे दो प्रहर हो गये हैं; किन्तु तू टस से मस नहीं हुआ है। जोधपुर-राज्य में जहर के बीज बो दिये, उसका फल मैं तुझे चखाकर ही छोड़ूँगा ॥ ९

कुशलसिंह शेरसिंह के ये जोशीले वचन सुनकर अपने नूतन विरुदों का बखान करता हुआ, नागोर के युद्ध में घन-घटा-तुल्य सेना के बीच चमकते हुए सूर्य के समान सामने आ उपस्थित हुआ ॥१०॥

वह बखतसिंह का सहायक कुशलसिंह! जो अडिग स्तंभ के स्वरूप था। सूर्य के समान ज्वाज्वल्यमान हो सामने आ उपस्थित हुआ। उस समय मारवाड़ के ढक्कन स्वरूप उन दोनों वीरों (शेरसिंह और कुशलसिंह भिन्न २ के पक्ष में होकर) ने नेतृत्व ग्रहण किया और वे मरु-भूमि के स्तम्भ-स्वरूपी वीर एक दूसरे का सामना करने लगे ॥११॥

अपने भू-भाग के गौरव को ऊँचा उठाने वाले और सेना को पीठ नहीं बताने वाले उन दोनों वीरों ने अपने २ भाले उठाये तथा शेरसिंह ने कहा:- तू पहले प्रहार कर ॥१२॥

वे दोनों लोह की दीवार के तुल्य उदार मन वाले राष्ट्र वर वीरों ने अपने २ शरीर का अन्त समझ कर घुटी हुई (समरस) अफीम आग्रह के साथ पी। अपने साथियों को मस्तक नमाया (अभिवादन किया) फिर उन मरने मारने वाले वीरों से (एक दूसरे से) लोहा लिया ॥१३॥

आवाज करते हुए बाण और गर्जना करती हुई तोपों से भयंकर गोले चले। उसी समय वे क्षत्रिय अपने धर्म का विचार कर मरने को उद्यत हुए। उनमें से एक मण्डोवर भूमि का निवासी (कुशलसिंह) और दूसरा मेड़ता की भूमि का निवासी (शेरसिंह) हिस्सेदार थे। उन दोनों ने अपने भू-भाग पर युद्ध-जागृत करने के लिये तलवारें बजाईं ॥१४॥

जिस समय दोनों राष्ट्रवर शाखा के अडिग वीरों ने अपनी भौंहे चढ़ाई। रणमल एवं दूदा के वंशजों ने तलवारों की वर्षा करना शुरु किया। उस समय शेषनाग के फण फट गये। घोड़ों के नासा रंध्रों से फुर २ ध्वनि होने लगी। गिद्धनियां झपट कर मांस के टुकड़े उठा कर उड़ने लग गईं ॥१५॥

जिस समय दोनों शक्ति शाली निर्भय वीरों के वज्र-तुल्य-खडग-प्रहर की घड़ियाल के समान लगातार बजने लगी, उस समय दोनों ओर की सेनायें रणस्थल में फैल गईं। कायरों के अंग सिहर उठे, (कंपायमान हो गये) आडम्बर युक्त शस्त्र धारियों का लोहा आकाश को छूने लगा ॥१६॥

महाराजा रामसिंह और बखतसिंह के लिये ही यह युद्ध छिड़ा। जिसमें कुशलसिंह ने धर्म पालन का कार्य किया। पहले शेरसिंह ने भाले का वार कुशलसिंह पर किया। उसके पश्चात् कुशलसिंह ने शेरसिंह पर शस्त्र-प्रहार किया ॥१७॥

युद्ध में उन दोनों के कुटुम्ब सदा से यश-वृद्धि करने वाले थे। उसी के अनुसार उन दोनों वीरों ने युद्ध को अपनी मृत्यु का सामान बनाया; किंतु सरदारसिंह के पुत्र (शेरसिंह) ने अधिक कार्य किया, वह स्वर्ग को जाते समय हरनाथसिंह के पुत्र (कुशलसिंह) के प्राण पखेरु भी साथ ले चला ॥१८॥

भाले के सोलह घाव लगने पर भी सरदारसिंह के पुत्र शेरसिंह ने सवाया पुरुषार्थ बताया। उधर से हरनाथसिंह का पुत्र कुशलसिंह भी पैर बढ़ाता और हाथियों को कुचलता हुआ सामना करने लगा ॥१९॥

ईश्वर ने अपने द्वारा बहुत से वीर रचे, किन्तु उन दोनों वीरों को अर्जुन की तरह ही अपने हाथों से बनाया था। वे दोनों जोधपुर

की गद्दी के रक्षक युद्ध में धराशायी हुए, उसी दिन से कवि, योद्धा और मरु-भूमि के बुरे दिन दिखाई दिये ।।२०।।

सतारा, उदयपुर, चित्तौड़ और दिल्ली आदि की काबू में नहीं आने वाली सेना अब कौन काबू में करेगा ? काम पड़ने पर महाराजा रामसिंह के हृदय में अर्धरात्रि होने पर भी इन वीरों की स्मृति बनी रहेगी ।।२१।।

जिस प्रकार दोनों वीरों (शेरसिंह और कुशलसिंह) ने प्रतिज्ञा कर युद्ध-भार अपने सिर पर लिया, उसी प्रकार-कर दिखाया। हरनाथ-सिंह का पुत्र (कुशलसिंह) तो सती के साथ २ (सत्य) लोक को चला गया। और शेरसिंह परम ज्योति में मिल गया ।।२२।।

७६. राठोड़ शेरसिंह[१] मेड़तिया (रींयाँ)

(बड़ा साणोर)

मरद छकै मत पाव बन रात्र वेढी मणा।
चित्त मन रखे मत चला़ त्रिचला़ ।।
कूंत ऊजोल़ रंग चोल़ सेरो कहै।
कमँध म्हां॰ धकै आव कुसला़ ।। १ ।।

ताहरे मुखे अणपार आगातुरां।
करंतो वात चौड़े करालां ।।
दला़ं रा नाथ तो हाथ हूँ दखालूं।
आवरे आव हरनाथ आला़ ।। २ ।।

टिप्पणी:—१प्रस्तुत गीत में महाराजा रामसिंह और बख्तसिंह के बीच जोधपुर राज्य के बीच जोधपुर राज्य के लिये होने वाले संघर्ष में रामसिंह के दल के मुखिया शेरसिंह

राम वगतेस रै चाढ़ भाला रमण।
दीह मत करै गालां दराजी ॥
कथन डावी मिसल तणा माँझी कहै।
मेल रे जीमणी तणा माँझी ॥ ३ ॥

काज खोटो कियाँ बुरो वेसी कुसल।
राजं म्हारां भुजां णधी रामो ॥
निमख रा उजालण सेर नामी कहै।
सामरा हरामी आत्र सामो ॥ ४ ॥

लगी घण वाररे मूझ वतलाविता।
रिड़मलां छात केथी रहायो ॥
बिडँग हाका जडा थँडा रे बिचा हूँ।
अड़ण आडा खँडां कुसल आयो ॥ ५ ॥

माच धमचक रचक अजवह माँझियां।
तोड़ सांकल ललक सीह तूटा ॥
साबलां भलां त्रिज्जूजलां सांफले।
ओध जयमाल रड़माल जूटा ॥ ६ ॥

(मेड़तिया राठोड़, सरदारसिंह का पुत्र रींयां का) और बख्तसिंह के दल के मुखिया (चांपावत कुशलसिंह, हरनाथसिंहोत आऊवा का) की वीरता का वर्णन है। यह युद्ध वि०सं० १८०७ (ई०सं० १७५०) में हुआ था; जिसमें दोनों ही वीर अपने-अपने नायकों की विजय कामनार्थ युद्ध गति को प्राप्त हुए। रचयिता का नाम अज्ञात है, परन्तु वर्णन ऐतिहासिक होने से कोई समकालीन कवि ही जान पड़ता है।

धक धकै घाव सोणित वहै दुधारां।
करारा मेल कर करह कालो ॥
सदा रा जोध उर ओरियो सामहे।
भलकियो हरा रा पार भालो ॥ ७ ॥

रूक जग झाड़ वह राड़ घट चाचरां।
जीतकर राड़ थर राज जड़ियो ॥
पखां जल चाढ भांजाड़ वगतेस पत।
पाड़ कुसलेस ने सेर पड़ियौ ॥ ८ ॥

साम ध्रमसाज सारो करे सुधारो।
सुरां इम पधारो कहे सांई ॥
आध रा वँटायत सुभड़ आगे करे।
मधा हर गयो सा जोत माई ॥ ९ ॥

[रचयिता:- अज्ञात]

भावार्थ:- शेरसिंह ने क्रोध से लाल होकर भाला उठाया और कुशलसिंह से कहा—हे सिंह तुल्य नाशकर्ता राष्ट्रवर वीर! तू मद होकर इस प्रकार उटपटांग कदम मत रख विचलित भी मत हो और मेरे सामने युद्ध के लिये आ ॥१॥

तू आतुर होकर सबके सामने बड़ी २ बातें बनाता है; किन्तु हे हरनाथ के पुत्र (या-वंशज)! यदि तू वास्तव में सेनापति के पद पर है तो सामने आ, मैं तुझे दो दो हाथ बताऊँगा ॥२॥

रामसिंह और बखतसिंह के मन में भालों द्वारा युद्ध करने की उमंगें उठ रही है। इस अवसर पर तू केवल गाल फुलाकर मत बोल।

मैं बांई मिसल (जोधपुरेश्वर की गादी के बांई ओर बैठने वालों) का मुखिया कहता हूँ—हे दाहिनी मिसल (राजा की गादी के दाहिनी ओर बैठने वालों) के मुखिया, तू सामने आकर मुझसे हाथ मिला ॥३॥

हे कुशलसिंह ! बुरे काम का फल भी बुरा ही होता है। हम राष्ट्रवरों के स्वामी रामसिंह का राज्य और वह स्वय, मेरी भुजाओं द्वारा सुरक्षित है। मैं नमक उजालने वाला (नमक हलाल) प्रसिद्ध वीर शेरसिंह कहता हूँ कि हे स्वामी-द्रोही, अब तू मेरे सामने आ ॥४॥

तुझे युद्धार्थ सावधान करते हुए मुझे बहुत समय होगया है। तू रणमल के वंशजों का छत्र-स्वरूपी है। फिर भी क्यों दुबक रहा है, मेरे सामने आ। शेरसिंह के इस प्रकार ललकारने पर वीर कुशलसिंह सैन्य-समूह के बीच से अपने चंगे घोड़े को बढ़ाता और तलवार के तिरछे वार करता हुआ युद्धार्थ सामने आ उपस्थित हुआ ॥५॥

उसी समय दोनों मुखियाओं में भयानक टक्कर हुई। वे ललकारते हुए इस प्रकार भिड़ गये, मानों शृंखला तोड़कर दो शेर गर्जते हुए एक दूसरे पर झपटे हों। उनमें से एक वीर जयमल्ल का (शेरसिंह) और दूसरा रणमल्ल का (कुशलसिंह) वंशज था। वे भालों और अच्छी तलवारों का वार करते हुए जूझ रहे थे ॥६॥

खड्गाघात के घावों से उफन-उफन कर शोणित बहने लगा। उस युद्ध के मतवाले सरदारसिंह के पुत्र शेरसिंह ने भीषण युद्ध करते हुए हरनाथ के पुत्र (कुशलसिंह) के वक्षःस्थल में अपना भाला झोंक (घुसेड़) कर आर-पार कर दिया ॥७॥

शेरसिंह ने उत्तेजित होकर खड्ग प्रहार किया; जिससे विपक्षी का मस्तक और शरीर विदीर्ण हो गया। इस प्रकार उसने विजय प्राप्त कर राष्ट्रवर राज के राज्य को स्थायित्व दिया। अपने मातृ-पितृ पक्ष की कांति फैलाते हुए बख्तसिंह का मान-मर्दन कर कुशलसिंह को धराशायी कर दिया ॥८॥

स्वामि-धर्म के धारक उस (शेरसिंह) ने स्वामि के सभी कार्यों का सुधार (कृतकार्य) कर दिया। उसे स्वर्ग में आते हुए देखकर देवताओं ने भी उसका इन्द्र-तुल्य स्वागत किया। उस माधवसिंह के वंशज ने मरु प्रदेश के आधे हिस्सेदार (कुशलसिंह) को पहले स्वर्ग में पहुँचाकर वह भी उसके पीछे २ स्वर्ग में जा बसा ॥६॥

७७. राठोड शेरसिंह[१] मेड़तिया (रीयाँ)

गीत (सुपंखरो)

जाणे जगायो साबात सौर खिजायो भुजंग जाणे,
सूर धायो बतलायो गजा गेर सिंघ ॥
खांवोल चढ़ायो धू परा देतां खगां रोला,
सत्रां गोल ऊपरां ऊआयो सेर सिंघ ॥ १ ॥

मारे अणी हरोलां विहारै गो अनंत माथा,
हकारे बकारे भूप धारे रूखी हास ॥
धाविया चाटके तुरी बखतेस चौड़ै धाड़े'
बखत्तेस खासाबाड़े झाटके बाणास ॥ २ ॥

फूटां गोली सेल तीर साठ लोहां डोहै फौज,
सोही मारू मोहे बरां अच्छरां समाज ॥

टिप्पणी:—१ प्रस्तुत गीत में राठोड़ वीर शेरसिंह मेडतिया की वीरता का वर्णन है, उसने महाराजा रामसिंह के पक्ष में रह कर नागौर के स्वामी राजाधिराज बख्तसिंह के मुकाबले में वीरता। प्रदर्शित की थी। यह युद्ध वि० सं० १८०७ (ई०सं० १७५०) में हुआ था और उसमें उपर्युक्त शेरसिंह ने वीरता प्रदर्शित करते हुए परमगति प्राप्त की। रचनाकार पहाड़खान, सम्भव है कोई समकालीन कवि हो, जिसका अधिक विवरण अभी तक उपलब्ध नहीं हुआ है।

दोय सिंघ नामी लड़े नागांण बिकाण दब्बे,
राम सिंघ गरब्बे जौधाण वालो राज ॥ ३ ॥
खाला श्रोण छूटे मतवाला ज्यूं तमाला खाय,
कदंमां अंत्राला भूले वरम्माला कंध ॥
आजका बाणक वाला चाला देख भांण आखे,
विरदाला काला झोका २ बामीबंध ॥ ४ ॥
वीर खेत मेड़ते मच्छरा फूल धारा बढ़े,
चढ़े रथां अच्छरां अमीर नेह चाह ॥
जमी आय धू सुमेर पांणी ने पवन जैते,
सदाणी रहांणी क्रीत एते सेरसाह ॥ ५ ॥

(रचयिता-पाहड़खानजी आढा)

हे वीर शेरसिंह! शत्रुओं द्वारा खड्ग-युद्ध प्रारंभ करने पर शत्रुओं की अंग रक्षक सेना पर तू इस प्रकार बढ़ा, मानों बारूद द्वारा भरा हुआ साबात (सुरंग) दागा गया हो। सर्प क्रोध में आगया हो, ललकारने पर वाराह (सूर) बढ़ा हो अथवा हाथियों को पछाड़ने के लिये सिंहने आक्रमण किया हो। तेरे प्रहारों द्वारा तूने प्रत्येक के मुंडो को रक्त रंजित कर दिया ॥ १ ॥

जब बख्तसिंह ने घोड़े के चॉबुक मार कर तुझ से खुले मैदान में सामना किया, तब तू विपक्षियों के असंख्य मस्तक काटता हुआ हुँकार और ललकार कर रूखी हँसी हँस उसकी अग्रणीय सेना को नष्ट कर दिया और उसकी अंगरक्षक सेना पर तलवार चलाने लगा।

जिस समय विपक्षियों के शरीर गोलियों, भालों और तीरों द्वारा बिंधे जाने लगे, उस समय तूने लोहे से लोहा मिला कर विपक्षी सेना

को नष्ट किया और वहाँ पर अप्सराएँ वीरों को वरण करती हुई सुशोभित होने लगी। हे दो सिंह के युक्त (शेरसिंह) नामधारी मारवाड़ी वीर ! तुझे अच्छी प्रकार युद्ध करता हुआ देख कर नागौर और बीकानेर जैसे राज्य सशंकित हो गये और जोधपुरेश्वर रामसिंह का गर्व बढ़ गया ॥ ३ ॥

हे विरुदधारी बांई ओर पगड़ी बांधने वाले वीर ! तेरे शस्त्र प्रहारों से रक्त के नाले बह चले और घायल वीर मदमत्त के समान इधर उधर पैर देने लगे। वीरों के चरणों में आंते तथा गले में वरमाला शोभा पाने लगी इस प्रकार तेरे द्वारा छेड़े गये आज के इस युद्ध को देख कर स्वयं सूर्य कहने लगा कि-इस वीर के आघात यमराज के वार के समान है ॥ ४ ॥

हे शेरसिंह ! मेड़ते जैसे वीर क्षेत्र में तू मस्ती में आकर लड़ता हुआ तलवारों की तीक्ष्ण धाराओं द्वारा कट कर मारा गया और अप्सराओं से प्रेम करता हुआ विमानों में बैठ कर चलता बना। तेरा यह यश जहाँ तक पृथ्वी, आकाश, ध्रुव, सुमेरू, जल और पवन हैं, वहाँ तक अक्षुण रहेगा ॥ ५ ॥

७८ राठोड़ कुशलसिंह चांपावत[१] (आऊवा)

गीत (छोटा साणोर)

अण पारां वेद हिंदवां असुरां, कुल नरा पेखतां कयो ॥
खग धारा वाहण खेड़ेचो[२], गज भारां ऊपरां गयो ॥ १ ॥

१. मंडोवर के राठोड़ राव रणमल के चतुर्थ पुत्र चांपा से राठोड़ों की चांपावत शाखा का विकास हुआ। वि० सं० की अठारहवीं शताब्दी में चांपावत तेजसिंह की सेवा महाराजा अजीतसिंह को जोधपुर का राज्य दिलाने के संबंध में उल्लेखनीय रही। उसी

मार मार करतो दल मोहरे, खाग बाढ़ ऊपरा खिरे ॥
साथां घणा नोप नत्र मैंड़तो, मूंधो गो हाथियां सिरे ॥ २ ॥
हड़ वड़ भड़ां अपछरी हल वल, हड़ वड़ नारद वीर हिचे ॥
ओजड़ती जड़ वाहतो आहव, बागो धड़ कुंजरां बिचे ॥ ३ ॥
वाह वाह कुसला लघु वेसां, हरा सुतन भेल वरहास ॥
अभा सुझल दुरदां आहुड़ियो वाहुड़ियो रंजियां आणास ॥ ४ ॥

(रचयिता-अज्ञात)

भावार्थः- जिस समय खेड़ेचा[1] राष्ट्रवर (कुशलसिंह), हाथियों पर तलवार चलाने के लिये बढ़ा। उस समय कुलीन हिन्दू मुसलमानों ने देखकर कहा-कि इस वीर के असंख्य बार प्रशंसनीय हैं ॥ १ ॥

तलवारों की धारें अपने ऊपर टूटती हुई देखकर भी वह मरू-देशीय वीर, सेना के अग्रभाग में 'मार-मार' शब्द का उच्चारण करता हुआ अपने साथियों को पीछे छोड़ सीधा हाथियों के मस्तक पर जाकर वार करने लगा ॥ २ ॥

तेजसिंह के वंशधर हरनाथसिंह का पुत्र इस गीत का नायक वीर कुशलसिंह है, जो वि० सं० १८०६ (ई० स० १७४९) में महाराजा अभयसिंह की मृत्यु होने पर प्रारम्भ में रामसिंह (अभयसिंह का पुत्र) के पक्ष में रहा, किन्तु दुर्बुद्धि रामसिंह ने कुशलसिंह का अपमान किया। इससे वह उसका साथ छोड़कर नागोर के स्वामी राजाधिराज बख्तसिंह (अभयसिंह के छोटेभाई) के पास चला आया और उसे जोधपुर की गद्दी दिलाने में सहायक हुआ। तथा रामसिंह और बख्तसिंह के बीच होने वाले युद्ध में वि० सं० १८०७ में वीर गति प्राप्त की। उपर्युक्त गीतों में कवि ने उसका रुष्ट हो जाना रामसिंह से एक प्रकार ईश्वर का रुष्ट होना बतलाकर उसके शौर्य का अच्छा वर्णन किया है।

१ खेड़ में राठोड़ों का राज्य होने से वे खेड़ेचा भी कहलाते हैं।

उस समय अश्वारोहियों की हड़बड़ाहट, अप्सराओं की हलचल एवं नारद का अट्टहास सुनाई देने लगा, जब उस वीर ने युद्ध छोड़कर गजसेना में विदीर्णकारी वार करना प्रारम्भ किया ॥ ३ ॥

धन्य है, उस हरनाथ के पुत्र कुशलसिंह को, जिसने इतनी कम आयु में ही जोधपुरेश्वर अभयसिंह के पक्ष में हो अपना घोड़ा विपक्षियों की सेना में बढ़ाया और हाथियों से भिड़कर अपनी तलवार रक्तरंजित कर लौटा ॥ ४ ॥

७६ राठोड़ कुशलसिंह चांपावत (आऊवा)[1]

गीत (सुपङ्खरो)

लंका खीजियाँ कौला खैग विरोला मेमतां होदां।
रोस पैंड तोला बोम भूडंडां राठौड़ ॥
भाराथ रा पाथ चांपा कुसलेस बाघ भूरा।
अभा रा साथ रा माभी नाथ रा अरोड़ ॥१॥

घाव पै कुहाड़ा खलां धीहड़ा दमांमा धूंस।
धैसाडा सादूल रोल सीमाड़ा दुघट ॥
घंटाला उबेड़ जाड़ा घूमाड़ा त्रिविधि घड़ा।
मारवाड़ा धाड़ा युद्ध अड़ारा मुगट्ट ॥२॥

निखंगी सेल पैलां झाट रा गुसैल नाग।
उकंधां अड़ेल जैठी वाहरा असंभ ॥

टिप्पणी—१. प्रस्तुत गीत में चांपावत कुशलसिंह हरनाथसिंहोत की वीरता का वर्णन है, जिसका पूर्व उल्लेख किया गया है।

पाट रा हुकम्मी चांपा घाटरा औघाट पाथ।
खेड़ेचा थाटरा थंभ झोका अड़ी खंभ॥३॥

वार रा सामंद यंद वाहरू धरा रा वीर।
खाग धार जोस पै अकारा अरी खेस॥
वरा रा पूरिया सिंह करारा आजानबाह।
राजरा रा भीच नमो हरा रा राजेस॥४॥

झोकणा उरेज बाज डोहणा परेज झण्ड़ा।
धू मजेज जोम बोम तेज पै धरोल॥
गयंदा मथेज भेज नारंगां रंगेज गांजा।
हसम्मां अंगेज चांपो न झंपै हरोल॥५॥

घाव पै छड़ाला रोल ठंठाला मेंगला घड़ा।
वाजता त्रंबाला वंस चा धारणा वांन॥
खूंद रा उजाला लूण खांगी पाघ वाला खत्री
दला रा सिघाला वाह दूजा आईदान॥६॥

[रचयिता- अज्ञात]

भावार्थः- हे हरनाथ के वंशज चांपावत कुशलसिंह! तू लंका पर क्रुद्ध हुए वीरों जैसा वीर, कवल-नाशक हाथियों के होदों में हलचल मचा देने वाला, क्रोध में आकर कदम बढ़ाने वाला, आकाश को भुजाओं पर उठाने वाला, महाभारत युद्ध समय का अर्जुन, बब्बर शेर, महाराजा अभयसिंह के योद्धाओं में प्रमुख और युद्ध में नहीं रुकने वाला वीर है ॥ १ ॥

हे मरूदेशीय वीर ! तू कुठार रूपी शत्रुओं पर आघात करने वाला, जोशीले नक्कारे बजवाने वाला, सेना में सिंह के समान हलचल मचाने वाला, भयानकता की सीमा, बड़े २ हाथियों को विदीर्ण कर देने वाला, अश्वारोही, गजारोही और पैदल सेनाओं को वापस लौटा देने वाला है। हे युद्ध में अड़ाकू वीरों का मुकुट स्वरूपी वीर ! तुझे धन्य है ॥ २ ॥

हे खेड़ेचा शाखा के स्तम्भ ! तू भाथा धारण करने वाला, सर्प स्वरूपी क्रोध करने वाला, उन्नत स्कंधधारियों से अड़ने वाला, प्रचण्ड बाहु, अतुलनीय वीर (तेरा कोई सामना नहीं कर सकता), अपने स्वामी की आज्ञा मानने वाला,चांपावत खानदान के अनुरूप और अर्जुन के तुल्य तूं भयानक वीर है। तूं ही कंधे से कंधा लड़ाकर भिड़ने वाला है ॥३॥

हे हरनाथसिंह के पुत्र ! तूं अपने समय का गहरा समुद्र, पृथ्वी की रक्षा करने वाला इन्द्र, जोश में आकर तलवार की धार द्वारा सीमा रहित (मर्यादा रहित) शत्रुओं को नष्ट करने वाला, सिंह के समान परिपूर्ण बलवाला, प्रचण्ड और लंबी भुजाओं वाला और राज्य का वंदनीय भयानक योद्धा है ॥ ४ ॥

हे वीर चांपावत ! तू घोड़ा बढ़ाकर खड्गाघात करने वाला, अन्य की पताकाओं को झुका देने वाला, अपने मस्तक को अभिमान और जोश में आकर आकाश से स्पर्श करा देने वाला, तेजी से कदम रखने वाला (शीघ्रता पूर्ण आक्रमण करने वाला) हाथियों के मस्तक के गूदे से अपने उज्वल बरछे को रंगने वाला, सेनाओं से युद्ध स्वीकृत करने वाला और शत्रुओं की हरावल सेना से नहीं दबने वाला है ॥ ५ ॥

हे टेढ़ी पगड़ी वाले क्षत्रीय ! तू दूसरा ही आईदान है। तू घंटिकाओं से युक्त गजारोही सेना में अपने बरछे के आघात द्वारा हलचल मचा देने वाला, रणवाद्य बजने पर वंश की टेक रखने वाला, शाही नमक को उज्वल करने वाला और सेना में सिंह-स्वरूपी है ॥ ६ ॥

८० राठोड़ कुशलसिंह[१] चांपावत (आऊवा)

(गीत बड़ा साणोर)

कुसलसिंघ दड़वाणरै भकै चढ़िया किलम,

मले असमान रे जिके मथि मांग ॥

गयँद मसतान रे हुई बरछी गरक,

खान रे जँगी हौदै लगी खाग ॥ १ ॥

पागड़ां जोर छक छोह रे पराक्रम,

विषम गज बोहरे समें वागी ॥

सिंदुरां बौहरे बीच जागी सगत,

लोहरे चहचचे तेग लागी ॥ २ ॥

औैर अस सांग खग धजर खल आछटे,

चांपहर पूर रवि रूप चढ़ियो ॥

करी चाचर विहर धार धरहर कढ़े,

वढ़े होदो धजर सयद बढ़ियो ॥ ३ ॥

कमँध गुजरात गज घात्र बरछी करै,

प्रवाड़ो नाथ सुत भलो पायो ॥

अढ़ाई इलम तरवार अैहमद अली,

अढ़ाई हजारी मार आयो ॥ ४ ॥

(रचयिता-अज्ञात)

टिप्पणी—१ प्रस्तुत गीत में राठोड़ कुशलसिंह की वीरता का वर्णन है, जो उसने महाराजा अभयसिंह के समय गुजरात की सूबेदारी के प्रसंग में वहां मुसलमान अधिकारियों से युद्ध होने पर प्रकट की थी। यह राठोड़ कुशलसिंह आऊवे का चांपावत ठाकुर था और हरनाथसिंह का पुत्र था, जिसका परिचय पूर्व गीतों में दिया गया है।

भावार्थः—राष्ट्रवर कुशलसिंह के सामने जो भी मुसलमान योद्धा आया वह मारा गया परन्तु उसे न तो स्वर्ग में ही प्रवेश मिला और न पृथ्वी पर ही रहा (मुसलमान होने के नाते स्वर्ग से धकेल दिया गया)। उस वीर कुशलसिंह की बरछी मस्त हाथियों के अंग में प्रवेश कर गई और साथ ही उसकी तलवार हाथी पर बैठे हुऐ मुसलमानों के प्रमुख खान के होदे पर जा लगी ॥ १ ॥

जिस समय विषम गजारोही-मुस्लिम सेना से सामना हुआ तब, पराक्रम और उत्साह से भरे हुवे उस वीर (कुशलसिंह) ने रकाबों पर जोर देकर विशिष्ट गज समूह के बीच में इस प्रकार तलवार उठाई मानो स्वयं शक्ति ही जागृत होगई हो और उसकी वह तलवार उस लोह (होदे) पर जा लगी ॥ २ ॥

जिस समय चांपा के वंशज ने घोड़ा बढ़ा कर गर्व के साथ शत्रु पर लोह-कुन्त और खड़ग का साथ २ वार किया उस समय वह मध्याह्न के सूर्य के समान दिखाई दिया। उसके प्रहार से एक ओर हाथी का मस्तक विदीर्ण होकर लगातार शोणित की धारा बरसा रहा था तथा दूसरी तरफ होदा कटकर गर्व धारी सय्यद कट कर गिर पड़ा ॥ ३ ॥

हरनाथसिंह के पुत्र राष्ट्रवर ने गुजरात के युद्ध में हाथी पर बरछी का आघात कर अच्छी ख्याति प्राप्त की वह अपने ढाई अक्षरों (डाकिनी) के मंत्र से मंत्रित तलवार द्वारा अढ़ाई हजारी मनसब धारी अहमदअली को मारने के पश्चात घर लौटा ॥ ४ ॥

— — —

८१. राठोड़ मनोहर[1] (कूंपावत)

गीत (बड़ा साणोर)

बहे सार मुगता जठे धार रण वचाले,
ढेवण गज मार जँभ कमँध ढालां।
मनोहर उरीले परी माला मरद,
मोज दे ईस ने सीस माला ॥१॥

बीक ठाहर सहर मालहर बढ़ंता,
पाण नाहर जही पचाहर पाड़।
हार अछरां तणा बांद ले मनोहर,
वले सिर हार हर हाथ बाहाड़ ॥२॥

काट सत्र सीस नज सीस भेला करे,
पोय हाराड़ सेलां अणपार।
तरे कर महा भाराथ केसव तणौ,
हाथ तूं घातियो नाथ गल हार ॥३॥

टिप्पणी—१. इस गीत का नायक राठोड़ मनोहर कूंपावत शाखा का व्यक्ति प्रतीत होता है। बीकानेर के महाराजा गजसिंह के राजगद्दी बैठने पर उसके बड़े भाई अमरसिंह ने विरोध कर जोधपुर के महाराजा अभयसिंह की शरण ली। इस पर जोधपुर से राठोड़ों की सेना का बीकानेर के ऊपर कूच हुआ। युद्ध होने पर जोधपुर की सेना भाग निकली और उसके कितने ही व्यक्ति मारे गये। संभव है, उस समय इस गीत का नायक मनोहर कूंपावत काम आया हो, परन्तु उसका कोई उल्लेख नहीं मिलता। इस गीत के रचयिता कवि का नाम अज्ञात है, किन्तु वर्णित ऐतिहासिक वृत समयोचित है।

पेहर रुँड माल वर अछर सुख प्रामियौ,
नजर सुख कारणे नरां नरनाह।
गजा धज तणी अतवणी सुहागणी,
आठ पटरागणी करे ऊछाह ॥४॥

[रचयिता:- अज्ञात]

भावार्थ- यम-तुल्य राष्ट्रवर वीर मनोहर ने युद्ध के मध्य में अनेकों शस्त्र हाथियों को मारने के लिये ग्रहण किये । उस समय उस वीर के वक्षस्थल को अप्सराओं ने मालाओं से सुशोभित कर दिया । उस वीर ने प्रसन्नता पूर्वक शिव की ग्रीवा में मुण्डमाला धारण कराई ॥ १ ॥

बीकानेर के दुर्ग के शिखर पर मालदेव के वंशज (वीर मनोहर) के बढ़ने पर उसके कर-प्रहार सिंह तुल्य भयंकर प्रतीत हुए। जिनके द्वारा पांचा का वंशज धराशायी हुआ उस समय उस वीर मनोहर ने अप्सराओं द्वारा वरमालाएँ ग्रहण करने के पश्चात् शिव के गले में मुण्डमाला धारण करने के लिये अपने हाथ बढ़ाये ॥ २ ॥

उस केशव के पुत्र [मनोहर] ने अच्छी प्रकार युद्ध कर शत्रुओं के मस्तक काट उनके साथ अपने मस्तक को भी मिलाकर माला पिरोई और अपने हाथ से शिव की ग्रीवा में वह मुण्डमाला पहनाई ॥ ३ ॥

मुण्डमाला प्राप्त कर शिव वर प्राप्तकर अप्सरायें, नर और नरेश्वर अपने नैत्रों से युद्ध का दृश्य देखकर सुख का अनुभव करने लगे। उस गजारोही। [वीर मनोहर] को वरण की हुई आठों अप्सरायें विशेष प्रकार के सौभाग्य के चिन्ह धारण कर उत्सव मनाने लगी ॥ ४ ॥

८२–महाराजा विजयसिंह[1] (जोधपुर)

गीत- सुपङ्खरो

पब्बे उठाये हणू ज्यूं चाहै मुनी जेम सिंधु पीण।
बिजे के संबाहै मही दाढ़ ज्यूं बाराह॥
गाढा भीम मतारा गनीमां गजां जेम गाहै।
सतारा सूं तूंही तेग साहे विजेसाह॥१॥

पेण भालां ओघ दे अमोघ बैण तूं ही पढ़े।
तूंही गैण मढ़ै रज्जी रसम्मां तागास॥
चौड़े खेत बिया चुण्डा चोजां मत्थे तूं ही चढ़ै।
वीर फौजां मत्थै तूं ही कढ़ीजे बागास॥२॥

हूरां हार बारंगा बलावे आम रत्ता हूँतां।
नागेसां नमावे नाग जुत्थां हूँत नाड़॥
रेणां ओण बुत्थां हूँतां रचायौ जोसेल राजा।
रोसेल बरुत्थां हूँतां जलाबोल राड़॥३॥

पाजां लोप सिंघ ज्यूं अराबां व्है अवाजां पूर।
मातंगा गराजां धूरजटी साजा मोह॥
मारहट्टां सैन हूँ रचायो ताजा रोस माथै।
बेढ़ीगारां राजा भीम काजा चकांबोह॥४॥

टिप्पणी–१ जोधपुर के महाराजा अभयसिंह की मृत्यु के बाद उसके अयोग्य पुत्र रामसिंह की दुर्बुद्धि से मारवाड़ में विद्रोह हो गया, जिससे अधिकांश सरदार,

सारंगां सधोक बाज खूटा बज्र नेत सिद्धां।
सोक बाज बारंगां विमाणा तूट सोध ॥
जोधाण सतारा थोक छूटा जमी ओक जाणे।
जूटा इन्द्रलोक जाणै देवा सुरां जोध ॥ ५ ॥

लपट्टे कराल तोपां झाल आसमान लागी।
देव बाम जागी जाणै प्रले काल दीठ ॥
नाराजा उनागी ढ़ाल त्रभागी तराल नेजां।
राठोड़ां गनीमां बागी नराताल रीठ ॥ ६ ॥

ऊपटे आपगा ज्यूं धधक्के श्रोण धारबाड़ा।
मारवाड़ा हको हके बके मार–मार ॥
चोंडंडी हवद्दां खाथा बागरा टला हूँ चले।
हले हमल्लां हूँ माथा नाग रा हजार ॥ ७ ॥

कोह मचे डंका भाण उडै गेण ग्रीध कंका।
असंकां जुवान संका छंडे जीव आस ॥
बाज बाज डंका लंका जेम अंका बंध बागा।
बंका मारहट्टां भालां कमंधां बाणास ॥ ८ ॥

विरोधी बन गये। उन्होंने नागौर आकर रामसिंह के पितृव्य वख्तसिंह को लाकर जोधपुर की गद्दी पर बिठा दिया। बख्तसिंह ने केवल दो वर्ष तक राज्य किया और रामसिंह बराबर झगड़ा करता रहा। वख्तसिंह की मृत्यु के पीछे उस का पुत्र विजयसिंह वि०सं० १८०९ में गद्दी पर बैठा, जिसका जन्म वि०सं० १७८६ (ई०स० १७२९) में हुआ था। रामसिंह ने आपा सिंधिया की मदद लेकर मारवाड़ पर चढ़ाई की।

खैग बादलां ज्यूं बहे जरद्दां जड़ेल खेल।
मरद्दां अड़ेल आंमी साम ही मांडीस॥
छड़ालां साहुरां वीरां धारुत्रां पड़ेल छूटा।
प्रले धू तड़ेल तूटा मारुत्रां पाँडीस॥ ६॥

आवधां बाजतां धोम भूप बिजेसीह आगे।
होम रूपी हुआ गोम गाजतां गहीर॥
दाहणी भुजा ने ऊभौ कहै गाजी साह दूठ।
बिग्रहे बहादरेस बांमी भुजा बीर॥१०॥

के धूके धरा नूं प्राण पींजरा नूं मूके केही।
सिंधुरा नू रूके केही चूके बाण सिंध॥
के क्यां हीकां हलक्कां सूकै केहियां व्है दूसरां कूके।
केही धरा धूके कै ओभके कमंध॥११॥

पलासां पुलन्द्रां गूद गजिन्द्रां पचायो पूर।
अमीरां मुनीन्द्रां नाच नचायो अनूप॥
दक्खणी अमीरां तणा जीराण मचायो दलां।
रचायो बीराण प्रलां राह चक्र रूप॥१२॥

मेड़ता में विजयसिंह और रामसिंह के बीच वि० सं० १८११ (ई० स० १७५४) में तुमुल युद्ध हुआ; जिसमें सिंधिया की प्रमुख सहायता से विजयसिंह की हार हुई। विजयसिंह वहाँ से भाग कर नागौर गया, किन्तु तुरन्त ही सिंधिया ने वहाँ जाकर घेरा डाल दिया और उसको बहुत तंग किया। इस पर विजयसिंह ने कपट पूर्ण चाल चल कर आपा को मरवा डालने की योजना बनाई। राजपूतों को तैयार किया, जिन्होंने

गे जुहां गनीमां थाट मेड़ते गजब गेर।
भूट के नागौर फेर फौजां की भुड़ंद॥
लाखां बीच आपां नूं भुपाल विजे मार लीधो।
गोपाल ज्यूं कीधो काल मेछ नूं गुड़ंद॥१३॥

घाव घात घेतलां नूं बांधते विराण घाटी।
अजा बिया वीर पाटी साझते एसंभ॥
खाटी बखत्तेस भूप भोम जिका पाण खागां।
खागां पाण तिका भोम दाटी जैत खंभ॥१४॥

ज्वाला धमी नेत मीनकेत ज्यूं पचातां जयो।
रूकांहूँ पचाता जयो बिखंमी रोधांण॥
राहां दोहू बीच आज अनम्मी बिजेस राजा।
जाणियो जिहान जमी ठांमते जोधांण॥१५॥

[रचयिताः- हुक्मीचंद खड़िया]

वणिक के वेष में आपा के शिविर में प्रवेश कर गाफिल अवस्था में उसे मार डाला। इस कपट से मरहटा दल में बड़ा क्रोध फैला और उन्होंने विजयसिंह को नष्ट करने का दृढ़ संकल्प कर सलूम्बर (मेवाड़) के रावत जैत्रसिंह के ऊपर धावा किया, जो महाराणा राजसिंह (द्वितीय) की ओर से विजयसिंह तथा रामसिंह के बीच संधि कराने के लिये भेजा गया था। जैत्रसिंह और गुंसाई विजयभारती इस आक्रमण से विचलित नहीं हुए और दृढ़तापूर्वक लड़ते हुए मारे गये। अन्त में विजयसिंह ने आपा के भाई दत्ता को कई लाख रुपये देकर पीछा छुड़ाया। वि० सं० १८५० (ई० स० १७९३) में उस की मृत्यु हुई। कवि ने इस गीत में काव्य की रीति पर उपर्युक्त युद्ध का वर्णन किया है।

भावार्थ—हे विजयसिंह, तू शत्रुओं पर इस प्रकार बढ़ा, जैसे द्रोणाचल पर्वत उठाने हनुमान और समुद्रशोषण करने के लिये अगस्त्य ऋषि बढ़े थे। भीम ने दृढ़ प्रतिज्ञा कर जिस प्रकार हाथियों को कुचल डाला था, उसी प्रकार तूं भी विरोधियों को कुचल देता है। सितारा के योद्धाओं के सम्मुख तूं ही तलवार पकड़ने वाला है ॥ १ ॥

हे द्वितीय चुण्डा! वचनों का अटलरूप से पालन करता हुआ, तूं ही शत्रुओं को तीक्ष्ण भालों द्वारा बेध देने वाला है। सूर्य की किरणों से आच्छादित गगन-मण्डल को तूं ही रजाच्छादित करने वाला है। खुले मैदान में शत्रुओं पर उत्साह पूर्वक वीर वेष धारण करने वाला तूं ही है और विपक्षी योद्धाओं के सैन्य-समूह पर तूं ही तलवार निकालने वाला है ॥ २ ॥

हे प्रचण्ड नरेश्वर! हूरों और अप्सराओं को वरमाला लिए हुए स्वर्ग से निमंत्रित करने वाला, शेषनाग और गजसमूह की गर्दनों को झुकाने वाला, रक्त और मांस के टुकड़ों से रणस्थल का रंग देने वाला तथा क्रोध से परिपूर्ण हो शत्रु-समूह से भयानक युद्ध करने वाला भी एकमात्र तूं ही है ॥ ३ ॥

हे शत्रुओं को काट देने वाले नरेश्वर, तूने (प्रलयकालीन) ऊफान पर आने वाले समुद्र के समान (युद्ध के समय) कार (सीमा-मर्यादा) का लोप करते हुए, रणवाद्यों का घोष सुनते हुए, हाथियों पर गर्जते हुए अपने वाद्यों से महादेव को मोहित करते हुए, क्रोध में आकर मराठी सेना से युद्ध ठान कर उस समय ऐसा दृश्य उपस्थित कर दिया, जैसा कि चक्रव्यूह को भेदने के लिये भीम ने उद्यत होकर किया था ॥ ४ ॥

जिस समय जोधपुरेश्वर और सतारे के (महाराष्ट्रियों का) वीर समूह भूतल पर युद्धार्थ झपटे, उस समय ऐसा दिखाई दिया

मानो इन्द्रलोक के लिए देवासुर-संग्राम छिड़ा हो । धुंकारते (ध्वनित होते) हुए बाणों के चलने से सिद्धों के नेत्रों की अचल समाधि (दृढ़ ध्यान) छूट गई, एवं अप्सराओं के विमानों की आवाज से मकान ढ़ह गये ॥ ५ ॥

तोपों की प्रचण्ड लपटें इस प्रकार नभ को स्पर्श करने लगी, मानों प्रलय काल की महाकाली जागृत हुई हो। उस समय राष्ट्रवर वीरों और विपक्षी योद्धाओं के हाथों में तलवारें, ढालें और तीन धार वाले भाले उठे हुए थे। इस प्रकार दोनों ओर से शस्त्रास्त्रों के भीषण वार हो रहे थे ॥ ६ ॥

उमड़ती हुई सरिता के समान रक्त धारा प्रवाहित होने लगी। मरुप्रदेश के वीर निरन्तर बढ़ते हुए "मार मार" शब्दोच्चारण करने लगे। उनके घोड़े लगाम के संकेत मात्र से हाथियों के होदों (गज पीठासन) पर चौकड़ी भरने (छलांगे मारने) लगे। उनकी टक्कर से ही शेषनाग के सहस्र फन हिलने लगे ॥ ७ ॥

युद्ध भूमि में चित्कार करती हुई गिद्धनियाँ आकाश में उड़ने लगीं, जिससे सूर्य उनके परों की ओट में छिप गया। निर्भीक वीर भी अपने २ प्राण-रक्षा की निराशा में सशंक होगये। नक्कारे बजवाते हुए बांके वीर मरहठे और राष्ट्रवर भालों और तलवारों के वार करते हुए, लंका के युद्ध में अपना यश स्थापित करने वाले (राम और रावण के साथियों) वीरों के समान शूरवीर कहलाये ॥ ८ ॥

घोड़ों का समूह बादलों (की छाया) के समान चलपड़ा और कवच कसे हुए लड़ाकू वीर एक दूसरे का सामना करते हुए युद्ध क्रीड़ा करने लगे। उस समय साहू के वीर महाराष्ट्रीय भालों द्वारा बिंध कर रक्त धारा बरसाते हुए धराशायी हुए; परन्तु शत्रुओं के मस्तक मरुदेशीय वीरों ने तलवारों द्वारा काट २ कर उनको नष्ट कर प्रलय का दृश्य उपस्थित कर दिया ॥ ९ ॥

महाराजा विजयसिंह के शस्त्र प्रहारों से चारों ओर कुहराम मच गया और वीरों की गर्जना से आकाश प्रति ध्वनित होने लगा। उसी समय वह (विजयसिंह) सेना के अग्रभाग में जा खड़ा हुआ, फलस्वरूप शत्रुगण भस्मसात् होने लगे। उसके दाहिने पार्श्व में प्रचण्ड काय बीकानेर के महाराजा गजसिंह और वाम पार्श्व में किशनगढ़ के महाराजा बहादुरसिंह खड़े हो युद्ध करने लगे ॥ १० ॥

उस समय कितने ही वीर पृथ्वी को कंपित करने लगे। कितने ही के प्राण तन-पिंजर को छोड़ने लगे। कितने ही हाथियों को बढ़ाने से रोकने लगे। कितने ही के बाण संधान चूकने लग-गये। कितनेक के कण्ठ मयूरों के समान कोलाहल करते हुए सूखने लगे। कितने ही वीर एक दूसरे का पुकारने लगे। कितने ही धराशायी होने लगे और कई मुण्ड रहित वीर स्तंभित हो गये ॥ ११ ॥

मांसाहारी पशुओं ने हाथियों के मांस और गूदे का भक्षण कर उसे पचालिया। अमीरों ने अपने युद्ध-कौतुक से नारद को प्रसन्न कर अत्यधिक नचाया। दक्षिणी (मरहठे) वीरों ने जब युद्ध छेड़ा, तब राष्ट्रवर वीरों ने राहू के मस्तक को काट देने वाले चक्र के समान अपनी खड़्ग को रक्त रंजित कर दिया ॥ १२ ॥

मेड़ते के युद्ध में हाथियों और शत्रुओं के समूह को पछाड़ दिया। तत्पश्चात नागौर स्थान पर भिड़कर शत्रु-सैन्य को धकेल दिया। लाखों वीरों के मध्य महाराजा विजयसिंह ने आपासिंधिया को इस प्रकार पछाड़ा, जैसा कि कृष्ण ने काली-दमन को पछाड़ा था ॥ १३ ॥

वीरों द्वारा नाका बंदी करके शस्त्रों का प्रहार कर आक्रमण करने वाले (आपा) को दूसरे ही अजीतसिंह (अजीतसिंह तुल्य विजयसिंह) ने वीर परिपाटी की शोभा बढ़ाते हुए मार गिराया।

बख्तसिंह ने जो पृथ्वी तलवार के बल पर प्राप्त की थी; उसे स्वयं की शक्ति के बल पर ही विजयसिंह ने अपने अधिकार में करली ॥ १४ ॥

शिव के तीसरे नैत्र के समान शत्रुओं की तोप-ज्वालाओं को सहन करने से वह विजयी वीर कामदेव कहा गया। विष-तुल्य खड्ग के आघातों को सहन करने से वह नीलकंठ महादेव के समान माना गया। इस प्रकार दोनों रीतियों (तोप और खड्ग द्वारा) के युद्ध में भी वह महाराजा विजयसिंह नहीं झुकने वाला ही कहा गया। उसने जोधपुर के भू-भाग की शत्रुओं से रक्षा की। इस प्रकार उसकी ख्याति संसार में प्रसिद्ध हो गई ॥ १५ ॥

८३-महाराजा बहादुरसिंह[१] (कृष्णगढ़)

गीत-छोटो साणोर

सज हाथळ खाग सु बप सूरापण,
बिहसि फते करे अणबीह ॥
किलमां भखण बहादर कूँवर,
सिंधुर सो उतरियौ सींह ॥१॥

खाग दाढ चाळवतो खहतो,
नव सहसो ताजेस नँद ॥
रातां खियो भांजवा रवदां,
मदभर सूं डांके स मँद ॥२॥

टिप्पणी-१-प्रस्तुत गीत में तत्समयक गोरखनाथ नामक बारहठ (कन्या के विवाह के समय राज द्वार पर हठ पूर्वक दान लेने वाला) चारण कवि ने कृष्णगढ़ के महाराजा राजसिंह के छोटे पुत्र बहादुरसिंह की वीरता का वर्णन किया है, जो उसके गद्दी पर बैठने के समय अजमेर के शाही सूबेदार द्वारा महाराजा राजसिंह के

बप छल सबल लियां खत्र वट बट,
विधि जुधि बिढ़वा सकति बर।
आछटी तेग बहण बण असुरां,
दँतिइल सू कूदे डुसर ॥३॥

पित चे मोहोर कांम रस पाड़े,
हद जीवत सिंभमान ,हर ॥
थरपे भलां पिंडतां थारो,
नाम बहादर सिंच नर ॥४॥

[रचयिता:- गोरखदान बारहठ]

भावार्थः—हे बहादुरसिंह ! तू हाथी से उतर कर यवन–शत्रुओं को नष्ट करने के लिये वास्तव में सिंह तुल्य होकर झपटा। उस समय तुझ में सिंह के समान ही निर्भयता और वीरता दिखाई दी एवं तेरा खड्गाघात भी सिंह के कर–प्रहार तुल्य देखा गया ॥ १ ॥

हे राजसिंह के पुत्र। वीर राष्ट्रवर मद बहते हुए हाथी से युद्ध के लिये सिंह के समान कूद पड़ा। उस समय जैसे सिंह की दाढ़ें भक्षण कर जाती हैं; उसी प्रकार तेरी खड्ग शत्रुओं को नष्ट करने लगी। जब तू यवनों का नाश करने के लिये उद्यत हुआ, तब तेरे नैत्र भी सिंह के नैत्रों के समान अरुण दिखाई दिये ॥ २ ॥

हे वीर ! जब तू भयंकर (सिंह तुल्य) स्वरूप धारण कर हाथी से कूदा, उस समय तूने अगणित यवनों के संहार के लिये

ज्येष्ठ कुंवर सामन्तसिंह (नागरीदास) को गद्दी पर बिठलाने के लिये हस्तक्षेप होने पर बहादुरसिंह ने दिखलाई थी।

तलवार चलाई। तब तेरे शरीर से क्षात्रवट सहित सिंह के समान ही बल छलकने लगा और शक्ति की कृपा से उसी (सिंह) के समान ही तू शत्र-संहार करने का दांव लगाने लगा ॥ ३ ॥

हे मानसिंह के वंशज (या पुत्र)! तू अपने पिता की हरावल में रहकर कामदेव-स्वरूपी विनोद-प्रिय यवनों को रुद्र-स्वरूप होकर नष्ट करने लगा और उन्हें जीवित (अमर) करादया। हे वीर! पंडितों (ज्योतिषियों) ने तेरा नाम बहादुरसिंह सोच समझ कर ही रखा है ॥ ४ ॥

८४–महाराजा बहादुरसिंह (कृष्ण गढ़)

(गीत बड़ा साणोर)

माहा बाह जोधार तात तुरंग मेलियां,
खाग झट बिकट अधभूत खेली।
तूं हूवो अपत जोधांण रा तखत कज,
बखत सी तणो रिण बखत बेली ॥१॥

टिप्पणीः—१ यह कृष्णगढ़ के महाराजा राजसिंह का छोटा पुत्र था। वि० सं० १८०५ (ई० सं० १७४८) में रूपनगर (रुपनगढ़)में महाराजा राजसिंह का देहान्त हो गया, तब उसका ज्येष्ठ पुत्र सामन्तसिंह (नागरीदास) दिल्ली में था। अस्तु सामन्तसिंह का छोटा भाई बहादुरसिंह कृष्णगढ़ की गद्दी पर बैठ गया। राजपूतों की प्राचीन परम्परा के अनुसार ज्येष्ठ पुत्र ही राज्य अधिकारी होता है। अस्तु अपने वास्तविकता की प्राप्ति के लिए उसने जोधपुर के महाराजा रामसिंह की शरण ली और इधर बहादुरसिंह ने नागौर के स्वामी राजाधिराज बख्तसिंह को अपना मददगार बनाया। सामन्तसिंह और बहादुरसिंह के बीच संघर्ष चलता ही रहा और उसी समय जोधपुर और नागौर के बीच लड़ाई का बाजार गर्म हुआ। बीकानेर के महाराजा जोरावरसिंह तथा उसके

पड़े भड़ बाज गजराज धर पाधरा,
अड़े जुध लाजरा पूर ऐहा।
कमंद सिरताज दल् आज चढ़ीया कड़े,
जुड़े जस काज माहाराज जेहा ॥२॥

सुतन राजान बाहादर अभंग सूर गुर,
बीर छक चाल् अङ्ग छक वराथी।
बिहद कीधी फते जोध रिण बांकड़ां,
सांकड़ा बखत मे होय साथी ॥३॥

यला सिर प्रवाड़ा कीध तेएहड़ा,
केहड़ा कहूँ ब्रद अछट कांटे।
बीर बर कमंध काली तणा बेहड़ा,
बंधव तो जेहड़ां भीड़ बांटे ॥४॥

[रचयिता–मथेन भीखमचन्द]

उत्तराधिकारी महाराजा गजसिंह और कृष्णगढ़ के महाराजा बहादुरसिंह की सहायता पाकर बख्तसिंह ने जोधपुर पर अधिकार कर लिया और उसके पीछे (बख्तसिंह के कुंवर) विजयसिंह ने भी महाराजा गजहसिं और बहादुरसिंह द्वारा सहायता पाकर जाधपुर राज्य पर अधिकार बनाये रखा। प्रस्तुत गीत में इसी विषय का वर्णन हुआ है और उसमें महाराजा बहादुरसिंह की वीरता को बतलाया है, जो ऐतिहासिक भित्ति पर है। यह उस समय में राज्य छोटा होने पर भी बुद्धिमान नरेश माना गया है, जिसने मरहट्टों के द्वारा होने वाले आक्रमणों से कृष्णगढ़ राज्य की हानि से बच कर जीवित बनाये रखा। वि० सं० १८३८ (ई० सं० १७८१) में महाराजा बहादुरसिंह का देहान्त हुआ।

प्रस्तुत गीत का रचयिता मथेन भीखमचन्द तत्समयक कोई चारण कवि रहा हो।

भावार्थः—हे लम्बी भुजाओं वाला (बहादुरसिंह) वीर योद्धा ! जिस समय जोधपुर के राज-सिंहासन के लिये युद्ध छिड़ा, उस समय बख्तसिंह के पक्ष में होकर, तेज घोड़ों को बढ़ाता हुआ, खड्ग प्रहार करते हुए तूने फगुओं (फाल्गुन का खेल खेलने वाला) का अद्भुत खेल खेला ॥ १ ॥

जिस समय राष्ट्रवरों के मुकुट-तुल्य दोनों नरेश्वरों (रामसिंह और बख्तसिंह) की सेनाएँ एक दूसरे के पीछे पड़ गई, उस समय विशेष रूप से गौरव की रक्षा करने वाले वीर अड़ पड़े। जिससे कितने ही योद्धा और हाथी, घोड़े धराशायी होने लगे ऐसे विकट समय में बहादुरसिंह, तुझ जैसे महाराज पदधारी वीर ही झूझ पड़ने के लिये उद्यत होते हैं ॥ २ ॥

हे राजसिंह के पुत्र बहादुरसिंह, तू अभंग वीरों का गुरु है। विशाल सैन्य-समुद्र को उमड़ताहुआ देख कर तेरे में वीरता छलकने लगी है। हे रण बांके वीर, तूने बख्तसिंह में आपत्ति पड़ने पर, उसका साथ देकर अद्भुत विजय प्राप्त की ॥ ३ ॥

हे राष्ट्रवर वीर ! तूने पृथ्वी पर ऐसी ख्याति प्राप्त नहीं की जैसी कि अन्य करते हैं। परन्तु तेरा विरुद तो सीमा से परे है। तू कालिका के कलश के समान महत्वपूर्ण और अजेय वीर है। तेरे जैसे बंधु ही आपत्ति में सहायक हो सकते हैं ॥ ४ ॥